आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

मई 2024

क्रान्ति

मासिक

सहयोग राशि
30/-₹



मानव विकास का पैमाना

जीडीपी या जीएनएच ?

“तुममें जो बड़ाई वाले और सामर्थ्यवान हैं, वे नातेदारों, मुहताजों और अल्लाह की राह में घरबार छोड़ने वालों को देने से बाज़ रहने की क़सम न खा बैठें। उन्हें चाहिए कि क्षमा कर दें और उनसे दरगुज़र करें। क्या तुम यह नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें क्षमा करे? अल्लाह बहुत क्षमाशील, अत्यंत दयावान है।”

(क़ुरआन, 24:22)

with best compliment from

• Ameer-e-Muqami
J.I.H. Bikaner [Raj.]

Website Link :
www.kantimasik.com

संपादक
शिब्ली अरसलान
abuaniqa@gmail.com

प्रबंधक
नईम ख़ान
+91 9891160829

सहयोग राशि
एक प्रति 30/- रु॰ एक वर्ष 350/- रु॰
दो वर्ष 670/- रु॰ तीन वर्ष 950/- रु॰
चार वर्ष 1200/- रु॰ पांच वर्ष 1400/- रु॰
आजीवन रु॰ 4000/-
सऊदी अरब और खाड़ी के देशों के लिए 110/- रियाल
यूरोप व अमेरिका के लिए 40/- US डॉलर

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए सम्पर्क करें :

कार्यालय :
कान्ति मासिक, डी-314, दावत नगर,
अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर,
ओखला, नई दिल्ली-110025

हेल्पलाइन न॰
9818799223

Account Detail
NAME : KANTI
A/C NO : 0990839195
IFS CODE : IDIB000J029
TYPE : CURRENT
BANK : INDIAN BANK
BRANCH : JAMIA MILLIA ISLAMIA
NEW DELHI - 110025

चेक / ड्राफ्ट 'कान्ति' के नाम से बनवाएं

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), डी-314 दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नई दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं
ASILA OFFSET PRINTERS
1299, KALAN MAHAL,
NEW DELHI-110002

संपादक : शिब्ली अरसलान

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है।

वर्ष 33 अंक 11 मई 2024

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब



कान्ति मासिक

इस अंक में

मूल प्रश्न 04
विश्व प्रसन्नता सूचकांक (World Happiness Index-2024) और हम
शिब्ली अरसलान

चिंतन 07
एकेश्वरवाद : मानव प्रकृति के पूर्णतः अनुकूल
मुहम्मद यूसुफ़ इस्लाही

सौंदर्य बोध 11
परीक्षा में जीवन का मूल्य
सैयद जलालुद्दीन उमरी

मुख्य स्तंभ 15
जीडीपी या जीएनएच ?
सुफ़ियान अहमद

अभिमत 19
ख़ुश होने को क्या चाहिए ?
डॉ. विनोद यादव

समाधान 21
प्राथमिकता में हो आर्थिक न्याय
सैयद सआदतुल्लाह हुसैनी

कविता 25
मानवता
बाक़र अली

समसामयिक 27
नागरिकता और न्याय
ग़ुलाम सरवर नदवी

मंथन 29
बिन पानी सब शून्य
डॉ. प्रदीप कुमार

परिदृश्य 32
असमानता के दंश से कराहता देश
जितेंद्र गौतम

इबारत 35
हवा में उड़ान भरने वाला दुनिया का पहला इन्सान
संपादन प्रभाग

प्रकाश स्तंभ 37
दुश्मनी में भी इन्साफ़ को न छोड़ो
अल्लामा यूसुफ़ क़रज़ावी

सेहत 41
कानों में ख़तरे की सीटी
संपादन प्रभाग

करियर 43
ऑफ-बीट कोर्सेज : करियर के नए विकल्प
संपादन प्रभाग

कहानी 45
काग़ज़ का टुकड़ा
प्रवीण कुमार सहगल

लघुकथा 47
वेदना
डॉ. पूरन सिंह

आख़िरी पन्ना 48
कर्म प्रधान विश्व करि राखा
डॉ. इरशाद हसन

मूल प्रश्न



शिब्ली अरसलान

विश्व प्रसन्नता सूचकांक (World Happiness Index-2024) और हम

हर वर्ष संयुक्त राष्ट्र संघ (यूएन) द्वारा घोषित "वर्ल्ड हैपिनेस डे" (20 मार्च) के अवसर पर 'संयुक्त राष्ट्र सतत् विकास समाधान नेटवर्क' (UN Sustainable Development Solutions Network) की ओर से वैश्विक प्रसन्नता रिपोर्ट प्रकाशित की जाती है, जो देशों को हैपिनेस के आधार पर रैंक प्रदान करती है। इस रैंकिंग से ये मालूम किया जाता है कि किस देश के लोग कितने ख़ुश हैं। कहा जाता है कि यूएन की इस पहल (Initiative) के पीछे भूटान का प्रयोग है, भूटान दुनिया का एकमात्र ऐसा देश है, जिसने जीडीपी के पीछे भागती दुनिया को बतलाया कि ख़ुशहाली का पैमाना 'सकल घरेलू उत्पाद' (जीडीपी) नहीं, बल्कि 'सकल राष्ट्रीय प्रसन्नता' (जीएनएच) है।

वर्ल्ड हैपिनेस पर पहली रिपोर्ट एक अप्रैल 2012 में जारी की गयी थी। ग्यारहवीं रिपोर्ट अभी मार्च के आख़िरी हिस्से में प्रकाशित हुई है।

इस इंडेक्स और रिपोर्ट को तैयार करने में छह कारकों को ध्यान में रखा गया है–प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद, स्वस्थ जीवन प्रत्याशा, सामाजिक सहयोग, जीवन विकल्प चुनने की स्वतंत्रता, उदारता (generosity) और भ्रष्टाचार से मुक्ति।

हैपिनेस रिपोर्ट-2024 में दुनिया का प्रसन्नतम देश (the happiest country) फिनलैंड को बताया गया है। लगातार सातवें वर्ष ऐसा हुआ है, जब फिनलैंड हैपिनेस रैंकिंग में पहले स्थान पर रहा है। उल्लेखनीय रूप से, विश्व के सबसे प्रसन्न देशों में दुनिया के बड़े देशों और बड़ी इकोनॉमिक साइज़ वाले राष्ट्रों में से कोई भी शामिल नहीं है। शीर्ष 10 में केवल 15 मिलियन से अधिक आबादी वाले नीदरलैंड और ऑस्ट्रेलिया हैं, और शीर्ष 20 में 30 मिलियन से अधिक आबादी वाले कनाडा और यूके हैं। अमेरिका 20वें पायदान से लुढ़क कर 23वें पर आ गया है। भारत इस साल 143 देशों की सूचि में 126वें पायदान पर है।

पिछली बार के मुक़ाबले भारत की रैंकिंग में एक पायदान की गिरावट आई है, लिस्ट में उसका नाम पाकिस्तान, नेपाल, चीन और बांग्लादेश जैसे अपने पड़ोसी देशों से भी नीचे है। यहां तक कि जंग लड़ रहे रूस, यूक्रेन, इस्राईल और फ़िलिस्तीन भी इस लिस्ट में भारत से आगे है। इससे एक बात बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है कि प्रसन्नता का पैमाना केवल सुख-सुविधा, वित्तीय लाभ और तेज़ रफ़्तार प्रौद्योगिकी नहीं है।

फिनलैंड के हेलसिंकी विश्वविद्यालय में ख़ुशी शोधकर्ता जेनिफर डी पाओला (Jennifer De Paola) फिनलैंड की प्रसन्नता का कारण फिन्स लोगों की उच्च जीवन संतुष्टि (high life satisfaction) को बताती हैं और इस 'उच्च जीवन संतुष्टि' का श्रेय फिन्स के प्रकृति के साथ मज़बूत संबंध और स्वस्थ कार्य-जीवन संतुलन (healthy work-life balance) को देती हैं। वह इस बात पर ज़ोर देती हैं कि फिन्स वित्तीय लाभ से परे जीवन के कुछ दूसरे पहलुओं को प्राथमिकता देते हैं। एक मज़बूत कल्याणकारी समाज, सरकारी संस्थानों में विश्वास, कम भ्रष्टाचार और सार्वभौमिक स्वास्थ्य व्यवस्था (universal healthcare) और शिक्षा को फिनलैंड की प्रसन्नता का रहस्य बताया जाता है।

प्रसन्न समाजों की सूची में हमारा मक़ाम बेहद नीचे क्यों?

यह वाक़ई चिंता की बात है कि प्रसन्न समाजों की सूची में पहले ही काफ़ी नीचे चल रहा हमारा देश अभी थोड़ा और नीचे खिसक गया है। इसका उत्तर क़तई जटिल और क्लिष्ट नहीं है। ये सही है कि पिछले कुछ समय से भारतीय अर्थव्यवस्था की तेज़ी को पूरी दुनिया ने स्वीकार किया है। अनेक अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संगठनों ने इस मामले में हमारी पीठ ठोकी है। यही नहीं, ख़ुद संयुक्त राष्ट्र ने मानव विकास के क्षेत्र में भारतीय उपलब्धियों को रेखांकित किया है। बावजूद इसके, प्रसन्नता सूची में हमारा मक़ाम इतना नीचे होना हैरत में डालता है और हमारे शासकों को आईना भी दिखाता है कि वे अंतरावलोकन करें कि उनकी नीतियां लोगों की ज़िंदगी को ख़ुशगवार बनाने में कोई भूमिका निभा रही हैं या नहीं।

ये एक कटु सत्य है कि भारत का आधुनिक विकास मॉडल अपने साथ हर मामले में बहुत ज़्यादा विषमता रखता है। जो पहले से समर्थ थे, वे इस विकास मॉडल में और ताक़तवर हो गए हैं। यानी लखपति करोड़पति हो गए और करोड़पति अरबपति बन गए। ये भी सही है कि एकदम साधारण आदमी का जीवन भी बदला है, लेकिन कई तरह की नई समस्याएं सामने आ खड़ी हुई हैं। शिक्षा और हेल्थकेयर जैसे जीवन को ख़ुशगवार बनाने वाले पैमानों में कोई एक समान सार्वभौमिक व्यवस्था नहीं है, यहां भी विषमता का नाग फन काढ़े हमारे समाज की एक बड़ी आबादी को ख़ुशी के साथ जीवन गुज़ारने नहीं देता।

रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत के विशाल 'निम्न मध्य वर्ग' के अंदर जीवन के प्रति संतुष्टि का भाव कम पाया जाता है। इसका एक बड़ा कारण आर्थिक प्रक्रिया में सरकार की भूमिका का काफ़ी कम हो जाना है। सरकारें अपनी भूमिका को उतने तक ही सीमित रखती हैं, जितनी अपने राजनीतिक अस्तित्व के लिए उसे ज़रूरी लगती हैं। अत्यंत निर्धनों के लिए जो योजनाएं बनी हैं, उनका ज़ोर उस वर्ग को किसी तरह बस ज़िंदा रखने पर है। उनको उत्पादन प्रक्रिया का हिस्सा बनाने की कोई कोशिश नहीं हो रही है। वह वर्ग भुखमरी से तो उबर गया है, मगर शिक्षा, स्वास्थ्य और न्याय उसकी पहुंच से बाहर है। इससे ठीक ऊपर वाले बड़े तबक़े को तो सरकारी मदद लायक़ भी नहीं माना जाता। ऐसे लोगों के जीवन में ख़ुशी भला कहां से आएगी?

इस रिपोर्ट से जीडीपी के आंकड़े व्यर्थ लगने लगते हैं। इस हैपिनेस इंडेक्स से सामाजिक प्रसन्नता विमर्श का हिस्सा बनेगी और लोग 'प्रति व्यक्ति आय' की चकाचौंध से बाहर आयेंगे। विकास का कोई भी मॉडल और प्रक्रिया तभी सार्थक कहलाएगी, जबकि देश का आम नागरिक ख़ुद को संतुष्ट और आशावान महसूस करे।

अंत में,

व्यक्तिगत स्तर पर हमें इस बात को समझना होगा कि ख़ुश रहने के लिए आपका धनी होना, मशहूर होना और अपार प्रतिभा संपन्न होना ज़रूरी नहीं है। अपने जीवन के प्रति संतुष्टि और ख़ुश रहने की आदत होनी चाहिए ताकि आप प्रकृति और उसकी कोमलता को महसूस कर सकें। अपने आस-पास बिखरी ख़ुशियों का आकलन कर सकें और दूसरों की ख़ुशियों में हिस्सा लेकर अपने लिए ख़ुशियां पैदा कर सकें। ये तब मुम्किन है जबकि हम जीवन में दार्शनिक सौंदर्यबोध का एंगल रखें, इस जीवन के स्रष्टा से परिचित हों और उससे जुड़ कर जीवन गुज़ारें। जीवनदाता से दूरी और विलगाव के नतीजे में हम सच्ची ख़ुशी से आनंदित नहीं हो सकते। ■■

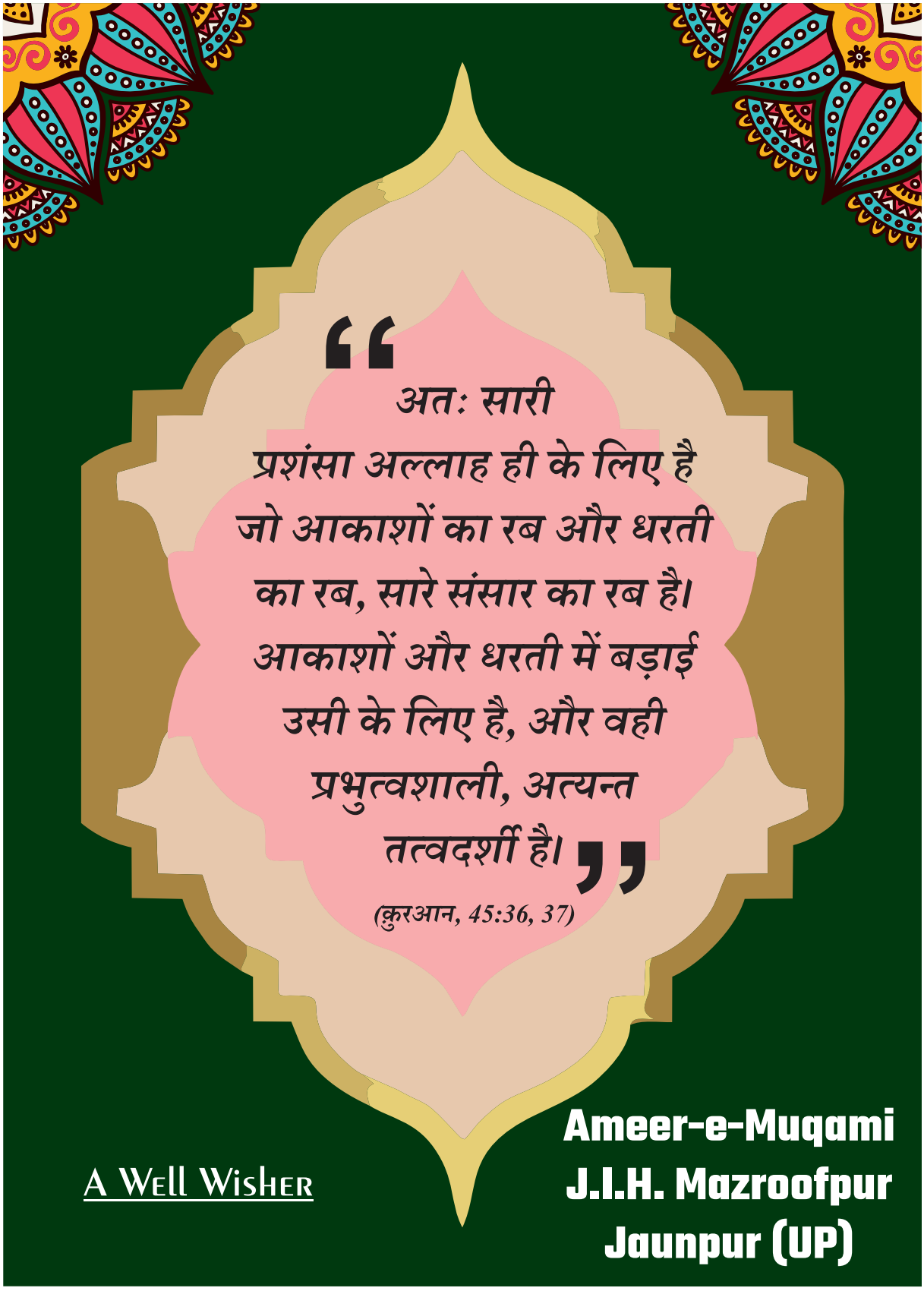
“
अतः सारी
प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है
जो आकाशों का रब और धरती
का रब, सारे संसार का रब है।
आकाशों और धरती में बड़ाई
उसी के लिए है, और वही
प्रभुत्वशाली, अत्यन्त
तत्वदर्शी है।
”
(क़ुरआन, 45:36, 37)
A Well Wisher
Ameer-e-Muqami
J.I.H. Mazroofpur
Jaunpur (UP)

एकेश्वरवाद

मानव प्रकृति के पूर्णतः अनुकूल



चिंतन



मुहम्मद यूसुफ़ इस्लाही

दुनिया में इससे ज़्यादा ग़लत बात कभी नहीं कही गयी है कि यह कायनात किसी रचयिता के बिना अपने आप पैदा हो गयी है और यह किसी सर्वशक्तिमान और तत्वदर्शी ईश्वर की सर्वोच्च और सर्वोत्तम रचना नहीं है, बल्कि भौतिक पदार्थों (Matters) के हज़ारों वर्ष की प्राकृतिक प्रक्रिया का आकस्मिक परिणाम है।

यह छोटी-सी पुस्तक, जो इस समय आपके हाथों में है और जिसके अध्ययन की शुरुआत आप कर रहे हैं, इसके छोटे-से आकार को देखकर आप स्वाभाविक रूप से बहुत-सी वास्तविकताओं को स्वीकार करते हैं। पुस्तक को देखकर आप मानते हैं कि इसका एक लेखक है, जिसने किसी उद्देश्य के लिए इसको लिखा है, कोई कम्पोज़ करने वाला है, जिसने इसको कम्पोज़ किया है, कोई छापाख़ाना है जहां से यह छपी है, कोई जिल्द बनाने वाला है, जिसने इसकी जिल्द बनायी है और ज़रूर ही कोई प्रकाशक है, जिसकी मेहनत और कोशिश से यह पुस्तक अपनी तैयारी के विभिन्न चरणों से गुज़रकर इस पूर्ण रूप में आपको सोच-विचार हेतु प्रेरित करने के लिए आपके हाथों तक पहुंची है।

यह तेज़ रफ़्तार रेल, जो प्रत्येक देश की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है और संसार का कोई भाग शायद ही ऐसा होगा, जहां जॉर्ज स्टीफेंसन के इस सर्वाधिक लाभदायक आविष्कार से लाभ न उठाया जा रहा हो। इससे लाभ उठाकर आप न केवल इसके आविष्कारक जॉर्ज स्टीफेंसन के अस्तित्व को मानने पर मजबूर होते हैं, बल्कि हृदय से उसके आभारी भी होते हैं कि उसने अपने आश्चर्यजनक प्रयास, अनुसंधान कार्य, निरंतर परिश्रम और लगन से संसार वालों के लिए एक अत्यंत लाभकारी चीज़ का आविष्कार कर दिया है।

हवा के कंधों पर भारी जहाज़ को उड़ते देखकर आप स्वाभाविक रूप से विज्ञान के इस आश्चर्यजनक आविष्कार से प्रभावित होते हैं और यह लौह-पक्षी आपको केवल इसी पर विवश नहीं करता कि आप विलबर राइट (Wilbar Wright) और ऑरविल राइट (Orville Wright), दो अमेरिकी बंधुओं के अस्तित्व को स्वीकार करें, बल्कि ठीक तौर पर आपसे यह ख़ामोश और स्वाभाविक अपेक्षाएं भी रखता है कि आप उनकी अनुपम प्रतिभा, स्थायी प्रवृत्ति, त्याग, बलिदान, सतत् कठोर परिश्रम, अपने लक्ष्य के प्रति असाधारण लगाव और समर्पण भाव को भी स्वीकार करें।

यह आपके सोचने-समझने और विचार-विमर्श करने का एक सामान्य तरीक़ा है। जीवन में प्रतिदिन आप इसी प्रकार विभिन्न चीज़ों पर चिंतन-मनन करते और अपनी स्वाभाविक जिज्ञासाओं और प्रश्नों का उत्तर मालूम

करके किसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं। सोचने-विचारने का यह अंदाज़ इतना सरल, नैसर्गिक, तर्कपूर्ण और प्रामाणिक है कि इसके विरुद्ध मन के किसी हिस्से में भी कभी कोई शंका पैदा नहीं होती। कर्म को देखकर कर्ता की कल्पना, आविष्कार को देखकर आविष्कारक की कल्पना, उद्योग को देखकर उद्योगपति का ध्यान सामान्य बुद्धि (Common sense) की बात है और यह बात इतनी जानी-पहचानी और स्वाभाविक है कि संसार का प्रत्येक व्यक्ति न केवल इससे परिचित है, बल्कि यही उसके चिंतन-मनन और सोच-विचार का सामान्य तरीक़ा भी है।

हठधर्मी और असामान्य विचारशैली

आप ही सोचिए, अगर कोई मूर्ख आपको यह बताने लगे कि यह रेलगाड़ी, यह जहाज़ किसी आविष्कारक के असाधारण सतत् प्रयास और कठोर परिश्रम का परिणाम नहीं, बल्कि आकस्मिक घटना का परिणाम है, स्वयं कुछ धातुएं संयोग से मिल गयीं, स्वयं कुछ विशेष प्रकार के पुर्ज़े ढल गये, अपने आप इनमें एक व्यवस्था और क्रम पैदा हो गया और अपने आप रेलगाड़ी, जहाज़ अस्तित्व में आ गये और मनुष्य इनसे लाभ उठाने लगे और रही यह किताब तो इसका अस्तित्व भी एक संयोग ही का परिणाम है, न इसका कोई लेखक है, जिसने प्रयास करके कुछ सामग्री एकत्र की है और इसे एक क्रम प्रदान किया है, न किसी छापेख़ाने में यह छपी है, न किसी जिल्दसाज़ ने इसकी जिल्द बनायी है और न किसी प्रकाशक ने इसके छापने का बोझ उठाया है; स्वयं इसकी रचना हो गयी, अपने आप कुछ काग़ज़ इकट्ठा हुए, अपने आप किताब लिख गयी और स्वतः किताब छप गयी, अपने आप इसकी जिल्द बन गयी और अपने आप छपकर आपके हाथ में आ गयी, तो आप हैरत से कहने वाले का मुंह तकते रहेंगे और क्षण भर के लिए भी यह न सोचेंगे कि यह व्यक्ति होश-हवास में यह सब कुछ कह रहा है, यह चिंतन-मनन नहीं सरासर हठधर्मी है। मनुष्य की सोच न इस हठधर्मी पर ध्यान दे सकती है और न इस मूर्खता और बुद्धिहीनता में उसे कभी कोई संदेह हो सकता है।

बुद्धि-विवेक एवं शिष्टाचार की मांग

फिर यह भी एक जानी-मानी वास्तविकता है कि किसी काम, किसी आविष्कार और किसी उद्योग को देखकर आदमी केवल उसके कर्ता, आविष्कारक और उद्योगपति के अस्तित्व ही को स्वीकार नहीं करता, बल्कि उस काम, आविष्कार और उद्योग का महत्व, लाभ, आवश्यकता और उपयोगिता की दृष्टि से उसके कर्ता, आविष्कारक और उद्योगपति के बुद्धि-विवेक, ज्ञान एवं तत्वदर्शिता, महानता और श्रेष्ठता की भी अनुभूति करता है और उसके लिए अपनी बुद्धि-विवेक और सोच-समझ के अनुसार कृतज्ञता, आभार, प्रेम और आदर-सम्मान की भावनाएं भी उसके दिल में पैदा होती हैं।

> **“विशुद्ध एकेश्वरवाद की अवधारणा एक ऐसी स्पष्ट वास्तविकता है, जो कायनात के कण-कण से प्रकट हो रही है। इन्सान अगर साफ दिल के साथ खुली आंखों से कायनात का निरीक्षण, अध्ययन और अवलोकन करे तो वह अवश्य ही इस सच्चाई को पा लेगा।”**

जो व्यक्ति खुली आंखों से इन रचनाकारों, आविष्कारकों और विचारकों के महान कार्यों को देख रहा हो, उनके द्वारा बनायी या आविष्कार की हुई वस्तुओं से लाभ उठा रहा हो, और उनके कारण अपने सुख-चैन और आराम के लिए तरह-तरह के सामान इकट्ठा कर रहा हो, उसकी सद्बुद्धि, सज्जनता और मानवता की मांग इसके सिवा कुछ न होगी कि वह उन रचनाकारों, आविष्कारकों और विचारकों का उपकार माने, उनकी समस्त असाधारण और अनुपम सेवाओं को स्वीकार करे, उनके ज्ञान, कृपा, कठोर परिश्रम, त्याग और बलिदान को स्वीकार करे, उनकी शोध-भावना और अपने अभियान से गहरे लगाव और लगन की प्रशंसा करे, उनके निरंतर किए गए प्रयासों का आदर-सम्मान करे और उनको धन्यवाद दे।

रहा वह व्यक्ति जो इन कृपादानों और वरदानों से लाभ उठाने, सुख-चैन और आराम की सुख-सुविधाएं प्राप्त करने में तो बड़ा तत्पर और चालाक हो, लेकिन वह उन रचनाकारों और आविष्कारकों की सेवाओं को न माने, उनकी उपेक्षा करे और उसके दिल में उनके लिए आभार और उपकार की कण भर भी कोई भावना न हो, तो ऐसा व्यक्ति न केवल यह कि बुद्धि एवं विवेक से वंचित है, बल्कि सज्जनता और मानवता के बहुमूल्य गुणों से भी ख़ाली है।

जगत का संक्षिप्त अध्ययन

अब ज़रा नज़र उठाकर अपने चारों

ओर फैली हुई विशाल, व्यापक और अचाह कायनात (जगत) का अवलोकन कीजिए कायनात की अनुपम सुन्दरता, सुदृढ़ व्यवस्था, पूर्ण संतुलन और समरसता, आश्चर्यजनक संबंध और क्रमबद्धता, सूर्य, चन्द्रमा तथा दूसरे ग्रहों की सुव्यवस्थित परिक्रमा, रात-दिन का नियमानुसार आना-जाना, भूमंडल पर बसने वाले अनगिनत प्राणियों के भरण-पोषण और आजीविका प्रदान करने के पूर्ण एवं अटल प्रबंध पर विचार कीजिए।

मनुष्य के समुचित और सन्तुलित शरीर और इसमें मौजूद आश्चर्यजनक शक्तियों, दिल-दिमाग़ तथा सोचने-समझने की अथाह सामर्थ्य और कायनात को वशीभूत करने की उमंग और दृढ़ संकल्प शक्ति पर विचार कीजिए। मानव जीवन के अस्तित्व और पालन-पोषण के लिए सूर्य, चन्द्रमा, धरती, आकाश और हवा में पूर्ण सामंजस्य और एकत्व सेवा कार्य और आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यापक एवं पूर्ण प्रबंध पर ध्यान दीजिए। वातावरण में सांस लेने के लिए हवा का असीमित भंडार, प्यास बुझाने के लिए पानी का आश्चर्यजनक प्रबंध, भूख मिटाने के लिए तरह-तरह के खाद्य-पदार्थ, अनाज और फल, सौंदर्य रसिकता की पूर्ति के लिए सुबह और शाम की मनमोहकता, फूलों का निखार, आराम और शान्ति के लिए रात की आरामदेह और ख़ामोश गोद, दौड़-धूप के लिए प्रकाशमान दिन, दिल की राहत के लिए सुकून देने वाले जोड़े, आंखों की ठंडक और इत्मीनान के लिए प्यारी औलाद, ज़िन्दगी को ऐश और आराम का पालना बनाने के लिए ख़ानदान और भाई-बंधुओं की मुहब्बत और सहारे, प्राकृतिक शक्तियों से काम लेने के लिए उन्हें वशीभूत करने की असीम शक्ति और दिल व दिमाग़ में नयी-नयी चीज़ें आविष्कार करने की आश्चर्यजनक क्षमताओं पर सोच-विचार कीजिए।

यह अवलोकन और अध्ययन आप रात-दिन कर रहे हैं और पल भर रुके बिना बराबर कायनात की नेमतों से फ़ायदा उठा रहे हैं। धरती से पैदा होने वाले स्वादिष्ट, मीठे, लाभदायक फलों, ग़ल्लों और तरकारियों से दिन-रात फ़ायदा उठा रहे हैं। साफ़ एवं स्वच्छ पानी से प्यास बुझा रहे हैं, सुबह के ठंडे और नर्म झोंकों से आनन्द ले रहे हैं। बादलों से बरसने वाले पानी से अपने बाग़ों और खेतों को सींच रहे हैं, वातावरण में मौजूद हवा के अथाह भंडार में सांस ले रहे हैं, सूरज की रौशनी, रात की ठंडक, सुबह का सुहावना वातावरण और शाम की रंगीनी से शान्ति पा रहे हैं। मां-बाप का अनुपम प्रेम और स्नेह, पत्नी का अतुलनीय साथ, संतान का सुखद और आनन्ददायक साथ आपकी ज़िन्दगी को ऐश और आराम का गहवारा बना रहे हैं। कायनात की प्राकृतिक शक्तियों को वशीभूत करके रात-दिन प्रगति के मार्ग पर लगातार आगे बढ़ रहे हैं और उन अनगिनत नेमतों से लाभांवित होने और एक-दूसरे से आगे निकल जाने के लिए लगातार कोशिश कर रहे हैं।

जगत के अध्ययन की स्वाभाविक मांग

विचार कीजिए, यह सब कुछ जो आप देख रहे हैं, महसूस कर रहे हैं और बरत रहे हैं, इनकी स्वाभाविक मांग क्या है? आपका दिल गवाही देगा कि इस विशाल और सुव्यवस्थित कायनात के पीछे अवश्य ही एक सर्वशक्तिमान, एक तत्वदर्शी और दूरदर्शी मालिक और शासक की महान हस्ती मौजूद है।

यह सब कुछ न अपने आप हुआ है और न अपने आप हो रहा है। इस जगत का एक रचयिता (Designer) है, जिसने अपनी शक्ति और इरादे से इसकी योजना बनायी और इसको शून्य से अस्तित्व में लाया और इसका एक स्वामी और शासक है, जिसके ज्ञान एवं तत्वदर्शिता के तहत यह सब कुछ अत्यंत सुव्यवस्थित एवं अनुशासित ढंग से हो रहा है। यह सब कुछ यूं ही बिना किसी उद्देश्य और बिना किसी कारण के नहीं है, बल्कि एक महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक योजना और स्कीम के साथ हो रहा है।

एक मामूली-सी पुस्तक और मामूली-सी मशीन का हाल यह है कि वह अपने आप नहीं बन जाती, तो यह लम्बी-चौड़ी, विशाल और व्यापक कायनात, जिसका एक मामूली-सा हिस्सा हमारी यह ज़मीन है, किसी स्रष्टा के बिना कैसे पैदा हो सकती है? बुद्धि-विवेक तथा सूझ-बूझ रखने वाला कोई व्यक्ति यह कैसे स्वीकार कर सकता है कि यह जगत एक आकस्मिक घटना का परिणाम है जो अनायास ही घटित हो गयी है। इसका कोई बनाने वाला नहीं है या कुछ शक्तियां इसके विभिन्न हिस्सों को अस्तित्व में लायी हैं या फिर ज़िन्दगी का यह सारा हंगामा मात्र भ्रम और अनुमान का पैदा किया हुआ है इसकी वास्तविकता कुछ भी नहीं है, जबकि इन संकल्पनाओं के पीछे न कोई वैज्ञानिक आधार है, न कोई प्रमाण है और न सद्बुद्धि का ही इन संकल्पनाओं से कोई संबंध है।

फिर जगत के अध्ययन का तक़ाज़ा केवल इतना ही नहीं है कि आप स्रष्टा के अस्तित्व को स्वीकार करें, बल्कि विश्व की विशालता और व्यापकता, उसका आश्चर्यजनक अनुशासन, सामंजस्य, संतुलन और सुव्यवस्था, उसका बेमिसाल सौंदर्य और उसका उद्देश्य इस वास्तविकता की तरफ़ मार्गदर्शन

करता है कि वह स्रष्टा ही नहीं, बल्कि सबसे बेहतरीन स्रष्टा है और अकेला वही स्रष्टा है और वही इस अथाह जगत पर शासन कर रहा है। वह जगत को पैदा करके इससे अलग नहीं हो गया, बल्कि वह हर पल इस पर शासन और इसका संचालन कर रहा है और कभी इससे बेसुध और लापरवाह नहीं हुआ है। थकान, सुस्ती, ऊंघ, नींद और लापरवाही जैसी कमज़ोरियों से वह बिल्कुल मुक्त और पाक है। वह बहुत ही तत्वदर्शी और ज्ञानवान है, उसका कोई कार्य तत्वदर्शिता और हिक्मत से ख़ाली नहीं है। कायनात की रचना, उसका संचालन, प्रबंध स्रष्ट जीवों के पालन-पोषण और शासन व्यवस्था में कोई दूसरा उसका साझीदार नहीं, वह अपनी हस्ती और गुणों में अकेला और बेमिसाल है। वही सारे सर्वोच्च गुणों का मालिक है, ये गुण न किसी दूसरी हस्ती में हो सकते हैं और न कोई दूसरी हस्ती इन सर्वोच्च गुणों में ईश्वर की साझीदार है और न ईश्वर के अधिकार, सत्ता और इस विशाल कायनात के संचालन में किसी दूसरे का कण भर भी किसी तरह का दख़ल है।

विशुद्ध एकेश्वरवाद की यह अवधारणा एक ऐसी स्पष्ट वास्तविकता है, जो कायनात के कण-कण से प्रकट हो रही है। इन्सान अगर साफ़ दिल के साथ खुली आंखों से कायनात का निरीक्षण, अध्ययन और अवलोकन करे तो वह अवश्य ही इस सच्चाई को पा लेगा।

एकेश्वरवाद दिल की दुनिया बदल देने वाली एक क्रांतिकारी, कल्याणकारी, सार्वभौमिक, सर्वाधिक महत्वपूर्ण और मानव-प्रकृति के बिल्कुल अनुकूल अवधारणा है, जो आदमी को सिर्फ़ और सिर्फ़ एक ईश्वर या अल्लाह की बन्दगी और दासता की शिक्षा देती है।

एकेश्वरवाद दिल की दुनिया बदल देने वाली एक क्रांतिकारी, कल्याणकारी, सार्वभौमिक, सर्वाधिक महत्वपूर्ण और मानव-प्रकृति के बिल्कुल अनुकूल अवधारणा है, जो आदमी को सिर्फ़ और सिर्फ़ एक ईश्वर या अल्लाह की बन्दगी और दासता की शिक्षा देती है। एक ईश्वर के आगे सजदा करने या झुकने वाला आदमी बाक़ी सारे बनावटी और नक़ली ख़ुदाओं के सजदे और दासता से छुटकारा पा जाता है और ईश्वर की नज़र में सारे इन्सान एक समान हो जाते हैं।

एक ईश्वर के आगे सजदा करने या झुकने वाला आदमी बाक़ी सारे बनावटी और नक़ली ख़ुदाओं के सजदे और दासता से छुटकारा पा जाता है और ईश्वर की नज़र में सारे इन्सान एक समान हो जाते हैं।

इसलिए पवित्र क़ुरआन में सिर्फ़ और सिर्फ़ एक ही ईश्वर के आगे झुकने को कहा गया है-

"एक ईश्वर ही उपास्य है, उसके सिवा कोई ईष्ट पूज्य नहीं।"

(क़ुरआन, 4:87)

"न सूरज को सजदा करो, न चांद को, ईश्वर को सजदा करो, जिसने उन सबको पैदा किया है।"

(क़ुरआन, 41:37)

किसी भी मामले में कोई भी ईश्वर का साझीदार या समकक्ष नहीं। वह सर्वशक्तिमान है और हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है। कोई चीज़ उसकी शक्ति और सत्ता से बाहर नहीं, लाभ-हानि, स्वास्थ्य, बीमारी, सम्मान, अपमान, धन-दौलत, सत्ता, आजीविका के साधन, संतान, जीवन, मृत्यु और भाग्य सब कुछ उसी के हाथ में हैं और सब कुछ उसी की ओर से है, हर चीज़ के ख़ज़ाने उसी के पास हैं। बहुदेववाद वास्तव में सृष्टि-पूजा का नाम है अर्थात् सृष्टि की विभिन्न वस्तुओं और जीव-जंतुओं को ईश्वर अथवा उसका समकक्ष समझकर उनकी पूजा-अर्चना का नाम बहुदेववाद है।

दूसरे शब्दों में, किसी सृष्ट जीव-जंतु या पदार्थ को ईश्वर का सहभागी और समकक्ष ठहराना, उसके गुणों में किसी को साझीदार मानना और उसके अधिकारों एवं प्रभुत्व में किसी को साझीदार और समकक्ष ठहराना ही बहुदेववाद है, जो ईश्वर की निगाह में सबसे बड़ा अन्याय, अत्याचार और महापाप है। ■■



परीक्षा में जीवन का मूल्य

कठिन परिस्थितियां जिस क़ौम को शिथिल और कमज़ोर कर दे और हर छोटी-बड़ी चुनौतियों को वे अपने लिए मौत का सन्देश समझ बैठें, उसे दुनिया की कोई शक्ति जीवन प्रदान नहीं कर सकती। वह अपने आप समाप्त होती चली जाती है।

फिर यह कि जो क़ौम ईश्वर पर यक़ीन रखती हो, वह कभी निराश और नाउम्मीदी का शिकार नहीं हो सकती। इसलिए कि वह सर्वशक्तिमान है और उससे बड़ी कोई शक्ति नहीं है। सारी शक्तियों का स्रोत वही है। वह जब चाहे ज़ुल्म के अंधेरे को सुबह की रोशनी में बदल सकता है और मौत के साये में जीवन के आसार पैदा करना उसके लिए असंभव नहीं है। परिस्थितियां यदि अंधकारमय हैं तो उसके आदेश से रोशन भी हो सकती हैं।

लेकिन यह चमत्कार उस समय प्रकट होते हैं और उन लोगों के लिए प्रकट होते हैं, जो ईमान और अमल की दौलत से मालामाल हों। जो केवल एक

सौंदर्य बोध



सैयद जलालुद्दीन उमरी

ईश्वर पर भरोसा करते हों, जो हर हाल में उसके दामन से चिमटे रहें, जो उसके सिवा किसी और से कोई आशा न रखें और उसी को अपनी समस्त परेशानियों को दूर करने वाला समझें।

इसके साथ हमें देश की वर्तमान परिस्थितियां और उसके वातावरण को बदलने का प्रयास भी करना होगा। परिस्थितियों के बिगाड़ की ज़िम्मेदारी दूसरों पर डालकर हम अपने कर्तव्यों की अनदेखी नहीं कर सकते। इसमें एक लंबी अवधि तक हमारी ग़फ़लत और कोताही का भी बड़ा दख़ल है। इनमें बदलाव लाने के लिए भी एक लंबा संघर्ष करना पड़ेगा। इस लंबे संघर्ष का कोई शार्टकट रास्ता नहीं है।

यहां की नैतिक मान्यताओं में सह अस्तित्व और उदारता को विशेष स्थान प्राप्त था, लेकिन क्या अब ये मान्यताएं शेष नहीं रहीं और इतिहास का हिस्सा बन गयी हैं? देश का अस्तित्व, एकता और अखंडता का जो नक़्शा हमारे

राष्ट्रीय नेताओं ने अपने सामने रखा था, क्या अब वह बदल रहा है? और उससे भिन्न क्या कोई दूसरा नक़्शा उभर कर सामने आ रहा है?

जिस देश को विभिन्न धर्मों एवं सभ्यताओं का गहवारा समझा जाता था, क्या अब वे आपस में मिल-जुलकर यहां रह सकेंगे और उन्हें स्वाभाविक रूप में फलने-फूलने का अवसर प्राप्त नहीं हो सकेगा? या यहां केवल एक सभ्यता, एक संस्कृति और एक विशेष मानसिकता और सोच के लोगों को ही रहने का अधिकार होगा? क्या अब निराशा और अंधेरा ही है या आशा की कोई किरण भी शेष है?

परिस्थितियां अत्यंत प्रतिकूल ही सही, परंतु मायूसी और निराशा की कोई बात नहीं। क़ौमों पर नाज़ुक से नाज़ुक समय आता है और कभी बदतरीन परिस्थितियों से उन्हें गुज़रना पड़ता है। इसी में उनकी परीक्षा है। जो क़ौम परिस्थितियों को प्रतिकूल देखकर न तो घबड़ाए, न निराश हो, न हिम्मत हारे और होशो-हवास में रहे, परिस्थितियों का मर्दानावार मुक़ाबला करे, स्थायित्व और बहादुरी का सबूत दे।

मुस्लिम क़ौम को "खैरे-उम्मत" कहा गया है। इसका मतलब यह है कि वह सारी दुनिया के लिए अपने पास भलाई और कल्याण का संदेश रखती है। इस संदेश को आम होना चाहिए। इस देश के सामने यह बात आनी चाहिए और पूरे ज़ोर-शोर से आनी चाहिए कि मुसलमान इस देश के शुभचिंतक हैं और इसका निर्माण और विकास चाहते हैं। विभिन्न समुदायों एवं गिरोहों के बीच टकराव को वे ग़लत और अनुचित समझते हैं और उनमें एकता और सामंजस्य की भावना जाग्रत करना चाहते हैं। वे किसी के दोस्त या किसी के दुश्मन नहीं हैं, बल्कि सब इन्सानों को एक ईश्वर की रचना समझते हैं और उनकी भलाई के इच्छुक हैं।

परिस्थितियां अत्यंत प्रतिकूल ही सही, परंतु मायूसी और निराशा की कोई बात नहीं। कौमों पर नाजुक से नाजुक समय आता है और कभी बदतरीन परिस्थितियों से उन्हें गुजरना पड़ता है। इसी में उनकी परीक्षा है। ज़िन्दा कौम वह है जो परिस्थितियों को प्रतिकूल देखकर न तो घबड़ाए, न निराश हो, न हिम्मत हारे और होशो-हवास में रहे, परिस्थितियों का मर्दानावार मुक़ाबला करे, स्थायित्व और बहादुरी का सबूत दे।



सबसे पहले देश के नागरिकों के सामने हमारे सही परिचय की आवश्यकता है। हमारा परिचय एक ऐसी क़ौम की हैसियत से न हो जिसका कोई निश्चित उद्देश्य नहीं, ज़िन्दगी गुज़ारने का कोई ख़ास तरीक़ा नहीं, बल्कि कुछ रीति-रिवाजों और परंपराओं ने उसे एक क़ौम बना दिया है।

इसके विपरीत हमारा परिचय एक ऐसी उम्मत की हैसियत से हो, जो एक निश्चित उसूल और दृष्टिकोण की मालिक है। एक ऐसा उसूल जो सत्य पर आधारित है और जिसे यह क़ौम अपने लिए और सारी दुनिया के लिए क़ामयाबी और निजात का ज़रिया समझती है।

वह एक विशेष प्रकार की सोच और जीवन की एक विशेष कल्पना रखती है, जो उसे जान, माल और दुनिया की हर चीज़ से अधिक प्रिय है। जिसे वह किसी भी मूल्य पर छोड़ना नहीं चाहती। वह एक ऐसी क़ौम है जो नैतिक मूल्यों पर खड़ी है। उसकी सभ्यता और संस्कृति, उसका समाज और उसकी राजनीति, हर चीज़ के पीछे बहुत ऊंची, श्रेष्ठ और बहुत ही पवित्र सोच काम कर रही है।

जिन ऊंचे उसूलों और मानवीय मूल्यों पर ईमान का हम दावा करते हैं, उन्हें हमारी ज़िंदगियों में दिखाई देना चाहिए। हमारी जीवनी उनकी चलती-

फिरती तस्वीर बन जाए। हमारे कार्य उनकी गवाही दें। हमारे व्यवहार से उनका सबूत मिले। हमारे मामलात उसकी तस्दीक़ करें और हमारे ताल्लुक़ात से उनका प्रदर्शन होता रहे।

हममें से प्रत्येक व्यक्ति बीवी, बच्चों और परिजनों के अधिकार को पहचाने, वह किसी का पड़ोसी हो तो बेहतर पड़ोसी हो, व्यापारी हो तो अमानतदार व्यापारी हो, नौकर हो तो अपने कर्तव्यों को पहचाने, मालिक हो तो अपने मातहतों के हक़ को ख़ुशी-ख़ुशी अदा करे। उसकी ज़ात से किसी को आशंका न हो, कोई उससे ख़तरा महसूस न करे, वह हरेक के दुख-दर्द में काम आये और दुख-सुख में शरीक रहे।

दुनिया को यह सबूत मिले और लगातार मिलता चला जाए कि मुसलमान दुख-सुख, कठिनाई और आसानी किसी हाल में भी इस्लामी शिक्षाओं की ख़िलाफ़वर्ज़ी नहीं करता। वातावरण शांत हो या दंगे भड़क रहे हों, वह इस्लाम द्वारा स्थापित सीमाओं का उल्लंघन नहीं कर सकता।

दंगों में जब मासूम और बेगुनाह मारे जाते हैं, इज़्ज़तें लूटी जाती हैं, धन-संपत्तियों को आग लगायी जाती है, उस समय भी वे दूसरों की जान-माल और इज़्ज़त व आबरू के रक्षक बनकर सामने आता है।

इस समय सबसे महत्वपूर्ण और फ़ौरी समस्या यह है कि देश के विभिन्न समुदायों के बीच घृणा, द्वेष, पक्षपात और तंगनज़री का जो वातावरण बनाने का प्रयास किया जा रहा है, उसका भरपूर मुक़ाबला किया जाए। अम्नो-अमान बहाल हो, क़ानून का शासन चले, न्याय और इन्साफ़ हो, प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार प्राप्त हो। प्रगति की राहें सबके लिए खुली रहें। हरेक को अपनी



परिचय एक ऐसी उम्मत की हैसियत से हो, जो एक निश्चित उसूल और दृष्टिकोण की मालिक है। एक ऐसा उसूल जो सत्य पर आधारित है और जिसे यह क़ौम अपने लिए और सारी दुनिया के लिए क़ामयाबी और निजात का ज़रिया समझती है।वह एक विशेष प्रकार की सोच और जीवन की एक विशेष कल्पना रखती है, जो उसे जान, माल और दुनिया की हर चीज से अधिक प्रिय है। जिसे वह किसी भी मूल्य पर छोड़ना नहीं चाहती। वह एक ऐसी क़ौम है जो नैतिक मूल्यों पर खड़ी है। उसकी सभ्यता और संस्कृति, उसका समाज और उसकी राजनीति, हर चीज़ के पीछे बहुत ऊंची, श्रेष्ठ और बहुत ही पवित्र सोच काम कर रही है।

योग्यतानुसार देश और क़ौम की सेवा का अवसर प्राप्त हो। जो मतभेद हों उन्हें गंभीरता के साथ शांतिपूर्ण माहौल में हल करने का प्रयास किया जाए।

यह किसी एक व्यक्ति या गिरोह की नहीं, बल्कि पूरे देश की ज़रूरत है। यह इस देश की आंतरिक आवाज़ है, जिसे दबाने की कोशिश की जाती है। इस लंबे-चौड़े देश में एक छोटा-सा समुदाय है, जो यहां के वातावरण को प्रदूषित करना चाहता है और कर रहा है। दंगों को हवा देता है और उसमें शरीक रहता है। उस समुदाय का कोई दीन-धर्म या अख़्लाक़ नहीं है। उसके पीछे जो नापाक उद्देश्य हैं, उन्हें सारी दुनिया जानती है। इस समुदाय के लोग हर जगह और हर क़ौम में मिल जाएंगे।

इस देश की बहुत बड़ी आबादी अम्नो-अमान और सुकून चाहती है। उसके पास इन हंगामों के लिए समय नहीं है और न ही यह उनका मिज़ाज है। उसकी कमज़ोरी यह है कि इन नाज़ुक परिस्थितियों में चुप रहने में ही अपनी भलाई समझती है। उसके अंदर हक़ को हक़ और नाहक़ को नाहक़ कहने की हिम्मत और हौसला नहीं है। ■■

कान्ति के वे सब्सक्राइबर

जिन्होंने अभी तक अपनी ख़रीदारी की रक़म जमा नहीं की है,

बराय मेहरबानी

इस QR Code

के ज़रिये जल्द अदायगी करें।

Name: KANTI

Pay Directly to: kanti8920589292@indianbk

नोट :

अदायगी के बाद

स्क्रीनशॉट

इस नम्बर पर

(9818799223)

ज़रूर भेजें।



मानव विकास का पैमाना

जीडीपी या जीएनएच ?

विविध संस्कृतियों, परिदृश्यों और परंपराओं से भरी इस दुनिया में ख़ुशी की तलाश एक सार्वभौमिक प्रयास है। हम सभी आनंद, संतुष्टि और कल्याण के लिए तरसते हैं। ख़ुशी की तलाश सिर्फ़ एक प्राथमिकता नहीं है; यह मानव होने का एक मूलभूत हिस्सा है। किसी देश की ख़ुशी का अनुमान लगाना उसके नागरिकों की भलाई के बारे में बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। यह सरकारों, नीति निर्माताओं और संगठनों को उन कारकों को समझने में मदद करता है जो लोगों की संतुष्टि में योगदान करते हैं और उन क्षेत्रों की पहचान करते हैं जिनमें सुधार की आवश्यकता हो सकती है। ये रैंकिंग संसाधनों के आवंटन और जीवन की समग्र गुणवत्ता को बढ़ावा देने वाली नीतियों के विकास को प्रभावित कर सकती है।

इसके अतिरिक्त, यह रैंकिंग किसी देश की सफलता को एक व्यापक



परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है, जो आर्थिक संकेतकों से आगे बढ़कर उसकी आबादी के सामाजिक और भावनात्मक पहलुओं पर विचार करता है। उदाहरण के लिए, भूटान आर्थिक विकास से अधिक ख़ुशी को महत्व देने में अग्रणी रहा है। यह देश की समृद्धि का आकलन करने के लिए आर्थिक मानकों पर निर्भर होने के बजाय अपने नागरिकों की सकल राष्ट्रीय ख़ुशी को मापता है। अंतः सामाजिक प्रगति के लिए अधिक समग्र और जन-केंद्रित दृष्टिकोण बनाने के लिए ख़ुशी को मापना और रैंकिंग करना आवश्यक है, लेकिन महत्वपूर्ण सवाल यह है कि क्या कारण है कि कुछ राष्ट्र लगातार ख़ुशी के पैमाने पर दूसरों की तुलना में उच्च स्थान पर हैं?

मूल प्रश्न

"विश्व ख़ुशहाली रिपोर्ट में कुछ देश नियमित रूप से शीर्ष स्थान क्यों हासिल करते हैं, जबकि अन्य विफल हो जाते हैं?" जब आप इस बात पर ग़ौर करते

हैं कि दुनिया के सबसे ख़ुशहाल देश बाक़ी दुनिया से अलग कैसे हैं, तो कुछ सामान्य-सी बातें ही सामने आती हैं।

उल्लेखनीय है कि वैश्विक ख़ुशहाली रिपोर्ट अपनी रैंकिंग में ख़ुशहाली को मापने हेतु छह प्रमुख कारकों का उपयोग करती है-सामाजिक सहयोग, आय, स्वास्थ्य, स्वतंत्रता, उदारता और भ्रष्टाचार की अनुपस्थिति।

विश्व ख़ुशहाली रिपोर्ट-2024

रिपोर्ट के अनुसार इस वर्ष विश्व ख़ुशहाली सूचकांक में फिनलैंड लगातार सातवें साल दुनिया के सबसे ख़ुशहाल देशों की सूची में शीर्ष पर है। शीर्ष दस में अन्य देश डेनमार्क, आइसलैंड, स्वीडन, इज़राईल, नीदरलैंड, नॉर्वे, लक्ज़मबर्ग, स्विट्ज़रलैंड और ऑस्ट्रेलिया हैं। अफ़ग़ानिस्तान सूची में सबसे नीचे है।



इस के अतिरिक्त इस सूचकांक के कुछ निष्कर्ष उल्लेखनीय हैं। पहली बार अमेरिका और जर्मनी जैसे विकसित देशों को शीर्ष 20 देशों में स्थान नहीं मिला है। अमेरिका 23वें और जर्मनी 24वें स्थान पर लुढ़क गया है। पाकिस्तान पिछली बार 108वें स्थान पर था, इस बार 122वें पर आ गया है। अफ़ग़ानिस्तान ख़ुशहाली की सूची में सबसे नीचे 143वें स्थान पर है। निर्मम युद्ध लड़ रहा इज़राईल पांचवां सबसे ख़ुशहाल देश है! पीड़ित फ़िलिस्तीन 103वें स्थान पर है, तो रूस 72वें स्थान पर और यूक्रेन 105वें स्थान पर। ये देश युद्ध के बावजूद भारत से ज़्यादा ख़ुशहाल है।

ख़ुशी का पैमाना

संयुक्त राष्ट्र सतत विकास समाधान नेटवर्क द्वारा प्रकाशित 2024 की वैश्विक ख़ुशहाली रिपोर्ट के अनुसार शीर्ष दस देशों में कोई भी देश विश्व की शीर्ष अर्थव्यवस्थाओं में शामिल नहीं है, जिससे यही साबित होता है कि ख़ुशियों का पैसों से उतना संबंध नहीं है, जितना अमूमन समझा जाता है।

उल्लेखनीय है कि यह रिपोर्ट हर साल 140 से ज़्यादा देशों का मूल्यांकन करती है, जिसका आधार वह सामाजिक सुरक्षा, आय, स्वास्थ्य, स्वतंत्रता, उदारता और भ्रष्टाचार की नामौजूदगी है, लेकिन सवाल यह है कि क्या ख़ुशियों को किसी पैमाने पर मापा जा सकता है? अमूमन माना जाता है कि ख़ुश वही है, जो सुखी है, लेकिन सुख का आधार संतोष होता है, जो सापेक्ष होता है। यानी जो चीज़ एक व्यक्ति को ख़ुशी देती हो, ज़रूरी नहीं कि दूसरे को भी ख़ुशी दे। इस विरोधाभास के बावजूद ख़ुशहाली रिपोर्ट जिन तथ्यों की ओर इशारा करती है, वे महत्वपूर्ण हैं।

हालांकि ख़ुशहाली को केवल आर्थिक समृद्धि और संसाधनों के पैमाने पर देखना सही नहीं है, लेकिन दुनिया के सबसे ख़ुशहाल देशों में सामाजिक सहयोग और सुरक्षा की मज़बूत प्रणालिया मौजूद हैं, जिनमें स्वास्थ्य, देखभाल, शिक्षा और रोज़गार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त आय की असमानता का निम्न स्तर और सामाजिक समानता की मज़बूत भावना ख़ुशी में योगदान करती है।

इसके विपरीत ख़ुशहाली रिपोर्ट में निचले पायदान पर रहने वाले देशों में मौजूद उन कारकों को समझना होगा जोकि ख़ुशी के स्तर को कम करते हैं। विश्व ख़ुशहाली रिपोर्ट में कांगो, जिम्बाब्वे, सिएरा लियोन, लेसोथो और अफ़ग़ानिस्तान जैसे देश सबसे निचले स्थान पर हैं। ये देश लंबे समय से चले आ रहे संघर्षों, गृह युद्धों और राजनीतिक अस्थिरता से ग्रस्त हैं, जो भय, असुरक्षा और अनिश्चितता का माहौल बनाते हैं।

इसके अलावा राजनीतिक अस्थिरता, आर्थिक कठिनाइयों के परिणामस्वरूप आर्थिक अवसरों में कमी, ग़रीबी और शिक्षा एवं स्वास्थ्य देखभाल जैसी बुनियादी सेवाओं की कमी किसी देश की ख़ुशी पर लंबे समय तक प्रभाव डाल सकते हैं।

मानव विकास के पैमाने और भारत

आज स्थिति यह है कि मानव विकास के किसी भी सूचकांक में भारत की स्थिति संतोषजनक नहीं है। चाहे लोकतंत्र सूचकांक हो या भुखमरी सूचकांक या फिर ख़ुशहाली सूचकांक

“जीडीपी में दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी इकोनॉमी भारत अगर मानव विकास सूचकांक में पिछले 34 वर्षों से 131-135वें स्थान पर झूल रहा हो तो क्या इसे सही मायनों में विकास कहा जा सकता है? मानव विकास एवं ख़ुशहाली के समस्त पैमानों पर गर्त में गिरते रहना हमारे लिए भारी चिंता की बात है। अगर इस पर कई छोटे देश लगातार बेहतर करते हुए भारत को पीछे छोड़ रहे हों तो हमारे योजनाकारों को आधारभूत नीति बदलनी होगी। ख़ुशहाली के सभी पैमानों पर हमें अपने प्रयास बढ़ाने की ज़रूरत है।”



हो, दुनिया भर में हमारा स्थान चिंता के पायदान पर है।

वर्ल्ड हैप्पीनेस रिपोर्ट के अनुसार, भारत वर्तमान में 4.054 के हैप्पीनेस स्कोर के साथ 146 देशों में से 126वें स्थान पर है, जो इसे दुनिया के सबसे कम ख़ुशहाल देशों में से एक के रूप में वर्गीकृत करता है। ख़ुशहाली सूचकांक में भारत का स्थान नेपाल, पाकिस्तान, बांग्लादेश और चीन जैसे पड़ोसी देशों से भी नीचे है। इसके अतिरिक्त भारत में ख़ुशहाली का स्तर, लीबिया, इराक़, फ़िलिस्तीन और नाइज़र से भी कम है।

वी-डेम (वेराइटीज ऑफ़ डेमोक्रेसी) संस्थान की हालिया रिपोर्ट के मुताबिक़, भारत विश्व के उन शीर्ष देशों में शुमार है जहां चुनावी निरंकुशता मौजूद है। संस्थान ने भारत को चुनावी निरंकुशता (electoral autocracy) वाले देशों की श्रेणी में रखा है। यानी भारत विश्व के उन शीर्ष देशों में शुमार है जहां निरंकुश राज्यसत्ता का शासन है। वैश्विक भुखमरी सूचकांक में विश्व के 125 देशों में हम 111वें स्थान पर हैं। हाल में ही संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (United Nations Development Programme) द्वारा जारी मानव विकास सूचकांक (human Development Index) में भारत 193 देशों में 134वें स्थान पर ठहरा है।

जीडीपी में दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी इकोनॉमी भारत अगर मानव विकास सूचकांक में पिछले 34 वर्षों से 131-135वें स्थान पर झूल रहा हो तो क्या इसे सही मायनों में विकास कहा जा सकता है? यह सूचकांक तीन पैमानों- शिक्षा, स्वास्थ्य और प्रति व्यक्ति आय (और उनके कई उप-पैमानों) के आधार पर बनता है।

मानव विकास एवं ख़ुशहाली के समस्त पैमानों पर गर्त में गिरते रहना हमारे लिए भारी चिंता की बात है। पिछले 34 वर्षों से पूरी दुनिया में विकास का आधार मानव विकास सूचकांक (HDI) है। अगर इस पर कई छोटे देश लगातार बेहतर करते हुए भारत को पीछे छोड़ रहे हों तो हमारे योजनाकारों को आधारभूत नीति बदलनी होगी। ख़ुशहाली के सभी पैमानों पर हमें अपने प्रयास बढ़ाने की ज़रूरत है। भारतीयों के बीच संतोष के भाव, प्रति व्यक्ति आय, सामाजिक सहयोग, जीवन प्रत्याशा, स्वतंत्रता, उदारता के भाव में विस्तार जारी रहना चाहिए। ■■

“तुममें जो बड़ाई वाले और सामर्थ्यवान हैं, वे नातेदारों, मुहताजों और अल्लाह की राह में घरबार छोड़ने वालों को देने से बाज़ रहने की क़सम न खा बैठें। उन्हें चाहिए कि क्षमा कर दें और उनसे दरगुज़र करें। क्या तुम यह नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें क्षमा करे? अल्लाह बहुत क्षमाशील, अत्यंत दयावान है।”

(कुरआन, 24:22)

A Well Wisher

Ashaz Khan (Goa)



ख़ुश होने को क्या चाहिए ?

अभिमत

डॉ. विनोद यादव
(शिक्षाविद् एवं इतिहासकार)

हर साल संयुक्त राष्ट्र (यूएन) की ओर से जारी की जाने वाली "वर्ल्ड हैपिनेस इंडेक्स" रिपोर्ट में अमीरी और भौतिक सुविधाओं का आकलन ख़ुशी के रेफरेंस में नहीं किया जाता। यूएन की हाल में ही जारी हैपिनेस इंडेक्स रिपोर्ट में, दुनिया के 146 देशों को शामिल किया गया है। लगातार छठी बार उत्तरी यूरोप के देश फिनलैंड को विश्व का सबसे ख़ुशहाल देश चुना गया है। हमारा देश इस लिस्ट में 100वें नंबर से भी नीचे रहा।

साइकॉलोजिस्ट कहते हैं कि हमारे देश में लोग आपसी बर्ताव में पारदर्शिता के बजाय बौद्धिक चतुराई का इस्तेमाल ज़्यादा करते हैं, नतीजा यह होता है कि आंतरिक ख़ुशी के एहसास से वंचित रह जाते हैं। इसके उलट फिनलैंड के निवासी आपसी व्यवहार में ईमानदारी बरतते हैं। फिनलैंड के लोगों की ख़ुशी, शांति, संतोष और सोशल सिक्योरिटी पर आधारित है। यहां के लोगों का क्षमाशीलता में अटूट विश्वास है। असलियत में क्षमाशीलता ऐसा सगुण है, जिसके व्यावहारिक प्रयोग से दिल में दीर्घकालिक ख़ुशी का एहसास होता है।

हरेक व्यक्ति अपने जीवन में ख़ुशी चाहता है, किंतु रोज़मर्रा की भागदौड़ में हम अपने लिए एक घंटा भी नहीं निकाल पाते और आख़िरकार ख़ुशी के एहसास से वंचित ही रह जाते हैं। दलाई लामा का कहना है कि मन की शांति और ख़ुशी सिक्के के दो पहलू हैं, यानी एक दूसरे के पूरक हैं। उनका यह भी मानना है कि जब हम दूसरों की ख़ुशी के लिए अपनी शर्तें बदल देते हैं तो हमारे मन में शांति और दिल में ख़ुशी स्वाभाविक रूप से पैदा होती है।

सूचना तकनीक के क्षेत्र में 'ऐपल' का विशाल साम्राज्य तैयार करने वाले स्टीव जॉब्स ने अपने आख़िरी दिनों में कहा–"ज़िंदगीभर इस बेशुमार दौलत को कमाने के लिए मैंने कड़ी मेहनत की, व्यापार-जगत की नई बुलंदियों को छुआ, किंतु ख़ुद को संतुष्ट करने के लिए यानी अपने लिए समय निकालना ज़रूरी नहीं समझा। आज मौत के इतने क़रीब पहुंचकर वे सारी कामयाबियां फीकी लग रही हैं। ज़िंदगी के आख़िरी लम्हों में मैं लोगों को यही संदेश देना चाहता हूं कि जीवन को भरपूर आनंद से जीना चाहते हो तो हर पल ख़ुद से प्यार करो और उन सामाजिक कार्यों में सदैव जुटे रहो, जिनको करने से आपको आंतरिक ख़ुशी मिले।"

हैपिनेस यानी ख़ुशी का संबंध इससे नहीं है कि हमारे पास बहुत-से भौतिक संसाधन हैं या अथाह दौलत है। बल्कि ख़ुशी एक आंतरिक अवस्था है यानी हैपिनेस का सीधा संबंध दिल से है। विभिन्न परिस्थितियों में या तो हम अति-उत्साहित नज़र आते हैं या फिर उदास हो जाते हैं। हैपिनेस की अनुभूति के लिए तमाम भावनात्मक परिस्थितियों के प्रति द्रष्टा भाव (observer feeling) का बारंबार अभ्यास बेहद ज़रूरी है। इसके लिए 'माइंडफुलनेस' (सचेतनता) सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं कारगर एक्टिविटी है। माइंडफुलनेस कंप्लीट मेडिटेशन तो नहीं किंतु 'ध्यान' के क़रीब की एक सहज प्रक्रिया है। इसका संबंध किसी भी धर्म, संप्रदाय, जाति या वर्ग से नहीं है। यह मन-

मस्तिष्क को बेचैन करने वाले असंख्य विचारों को शांत करने की प्रैक्टिस है।

जब किसी का मन प्रफुल्लित होता है तो उसकी तरंगें मन के माध्यम से बाहर की ओर दिखने लगती हैं। असलियत में हैपिनेस एक भावनात्मक अवस्था है, जिसका स्रोत हर व्यक्ति के भीतर मौजूद है। आर्थिक समृद्धि की अपेक्षा व्यक्ति की हैपिनेस उसके भावनात्मक बदलाव पर अधिक निर्भर करती है। तमाम भौतिक संसाधन व ऐश्वर्य न होने के बावजूद भी यदि व्यक्ति के दिल में शांति है, अपनी दिनचर्या के प्रति रचनात्मक दृष्टिकोण है, पॉजिटिव सोच है तो उसकी ज़िंदगी

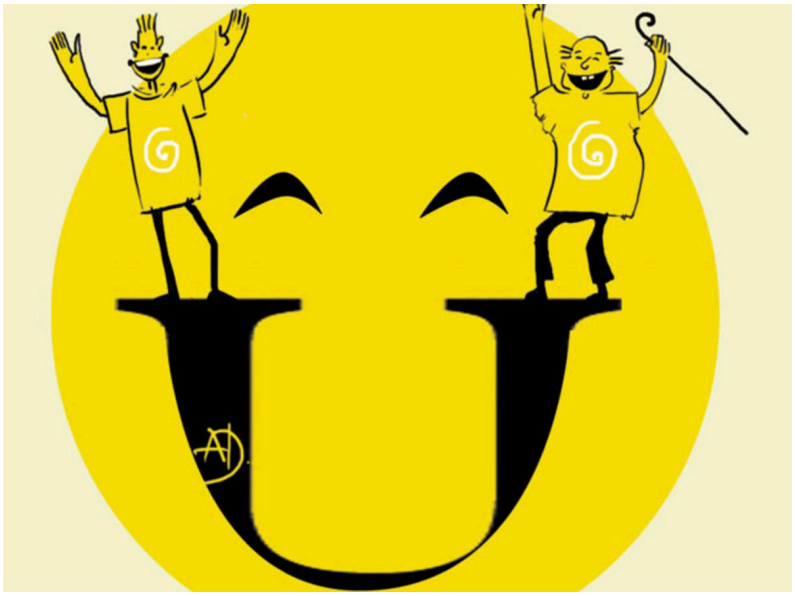

ख़ुशी से भरपूर है।

विश्व में 'हैपिनेस डे' का आग़ाज़ सर्वप्रथम भूटान द्वारा किया गया। भूटान दुनिया का एकमात्र ऐसा देश है, जिसने जीडीपी के पीछे भागती-दौड़ती दुनिया को बतलाया कि ख़ुशहाली का पैमाना 'सकल घरेलू उत्पाद' नहीं, बल्कि 'सकल राष्ट्रीय ख़ुशी' है। हैपिनेस को आत्मसात करने में भूटान के नागरिकों ने मिसाल क़ायम की है। भूटान के लोग यथार्थवादी और मिलनसार हैं, वे बड़ी कामयाबी हासिल करने की एवज़ में छोटी-छोटी ख़ुशियों के पड़ावों को नज़रअंदाज़ नहीं करते। भूटान के लोगों का विश्वास है कि जो दूसरों के प्रति सदैव करुणा और मंगल-मैत्री का भाव रखते हैं, उनका हृदय क्षोभ और विषाद से मुक्त रहता है। यहां के लोग आत्मीयता और प्रेम को सदैव वरीयता देते हैं।

कोलंबिया यूनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर एवं वर्ल्ड हैपिनेस रिपोर्ट के सह-संपादक जॉन हैलीवेल का कहना है कि किसी भी देश के नागरिकों के पारस्परिक विश्वास, लिबरल सोच व हेल्पिंग नेचर का हैपिनेस से सीधा संबंध है और फिनलैंड व भूटान के लोगों में ये तमाम गुण अन्य देशों की बनिस्पत ज़्यादा मिलते हैं। फिनलैंड की यूनिवर्सिटी ऑफ़ हेलसिंकी के मनोवैज्ञानिक भी इस बात से सहमत हैं कि हैपिनेस के लिए आपसी भरोसा, दूसरे के हितों को तरजीह देना और उदारता सबसे अहम पक्ष है।

दिलचस्प बात यह है कि फिनलैंड में प्रवासी व अजनबी भी उतने ही भरोसेमंद हो जाते हैं, जितने कि यहां के मूल निवासी। दरअस्ल, ख़ुशी एक भावदशा है, जिसका स्रोत हर व्यक्ति के भीतर है। हम ख़ुश रहना इसलिए भूल गए हैं, क्योंकि हम अपनी ख़ुशी को दूसरे पर निर्भर रखते हैं।

साइकॉलोजिस्ट कहते हैं कि हमारे देश में लोग आपसी बर्ताव में पारदर्शिता के बजाय बौद्धिक चतुराई का इस्तेमाल ज़्यादा करते हैं, नतीजा यह होता है कि आंतरिक ख़ुशी के एहसास से वंचित रह जाते हैं। कोलंबिया यूनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर एवं वर्ल्ड हैपिनेस रिपोर्ट के सह-संपादक जॉन हैलीवेल का कहना है कि किसी भी देश के नागरिकों के पारस्परिक विश्वास, लिबरल सोच व हेल्पिंग नेचर का हैपिनेस से सीधा संबंध है।

मसूरी-नैनीताल में घूमने, फाइव-स्टार में डिनर करने, मर्सिडीज होने के बाद भी रात को सुकून भरी नींद नहीं आती। मन की बेचैनी को दूर करने के लिए नशीले पदार्थों का सहारा लेना पड़ता है। किंतु धन-दौलत, शानो-शौकत का ताम-झाम न होने के बावजूद भी यदि आपके पास शांति भरी आरामदायक नींद है, सुबह उठते ही उत्साह और उमंग भरी दिनचर्या है, विवेकशील व रचनात्मक नज़रिया है, बेहतरीन सामाजिक संबंध है, पड़ोसियों का प्यार है, तो आपसे ख़ुशनुमा जीवन किसका हो सकता है। ■■

(साभार : स्वदेश न्यूज़)



प्राथमिकता में हो आर्थिक न्याय

समाधान



सैयद सआदतुल्लाह हुसैनी

दुनिया के कई देशों की तरह इस समय हमारे देश में भी अर्थव्यवस्था का वही मॉडल लागू है, जिसमें सारा ज़ोर देश के आर्थिक विकास पर होता है। इस बात पर बहुत कम ध्यान होता है कि देश में पैदा होने वाली दौलत किस तरह विभाजित हो रही है? अगर देश में ज़्यादा से ज़्यादा उत्पादन हो और उत्पादन स्रोतों के मालिकों को लाभ ज़्यादा से ज़्यादा हो यानी देश के कुल उत्पादन (जीडीपी) वृद्धि हो तो ये समझा जाता है कि इससे स्वतः ही ज़्यादा से ज़्यादा रोज़गार पैदा होगा और लोगों की ज़रूरतें पूरी होंगी।

आधुनिक पूंजीवादी विचारधारा के जनक, अर्थशास्त्री एडम स्मिथ के शब्दों में दौलतमंद पूंजीपतियों की दौलत बढ़ेगी तो उसका कुछ हिस्सा ज़रूर नीचे (उनके सेवकों) तक भी पहुंचेगा। आर्थिक व्यवस्था के इस मॉडल में देश में पैदा हो रही दौलत के न्यायपूर्ण वितरण के लिए विशेष नीतियों की ज़रूरत महसूस नहीं की जाती, बल्कि एडम स्मिथ और कई पश्चिमी आर्थिक विचारकों ने तो असमानता को देश के आर्थिक विकास के लिए उपयोगी क़रार दिया था। इससे आगे बढ़कर मशहूर ब्रिटिश अर्थशास्त्री जॉन कीन्स के अनुसार, समानता पैदा करने की कोशिशें, आर्थिक विकास की राह में रुकावट बनती हैं। इन मान्यताओं के प्रभाव आज भी मौजूद हैं और हमारे देश के नीति निर्माताओं पर आम तौर पर यही सोच हावी है।

हर बजट के मौक़े पर आर्थिक सुधारों के नाम पर जो बहसें छिड़ती हैं उनमें ज़्यादा ज़ोर इसी पर होता है कि

घाटा कम किया जाए, सब्सीडी कम की जाएं, टैक्स कम किए जाएं और आधारभूत संरचनाओं पर ख़र्च बढ़ाया जाए, बड़े व्यापार और अद्योगों को रियायतें दी जाएं आदि।

आज दुनिया के कई देशों में और ख़ासतौर पर हमारे देश में आर्थिक अन्याय का एक बड़ा कारण वितरात्मक न्याय (distributive justice) की मांगों का क्षतिग्रस्त होना है। मध्य वर्ग और संपन्न शिक्षित वर्ग का विचार अब कुछ ऐसा बन गया है कि आर्थिक न्याय की कोशिशों को वे विकास की राह में रुकावट समझते हैं। यही वजह है कि पूरे देश की दौलत तो तेज़ी से बढ़ रही है, लेकिन इस दौलत का फ़ायदा आम आदमी को बहुत कम पहुंच पा रहा है।

आज़ादी के समय हमारे देश की जीडीपी (मौजूदा क़ीमतों के आधार पर) लगभग दस हज़ार करोड़ रुपये थी, वह अब बढ़कर 147 लाख करोड़ हो गई है। यानी मौजूदा क़ीमतों के आधार पर इसमें डेढ़ हज़ार गुना वृद्धि हुई है। दुनिया की जीडीपी में हमारे देश का अनुपात आज़ादी के समय मात्र 4 प्रतिशत था, (स्पष्ट रहे कि औरंगज़ेब के ज़माने में यह अनुपात सबसे ज़्यादा यानी 27 प्रतिशत था) जो वर्ष 1980 में घट कर मात्र ढाई प्रतिशत रह गया। आज यह अनुपात बढ़कर लगभग साढ़े आठ प्रतिशत हो गया है। अब देश का राष्ट्रीय उत्पादन ब्रिटेन से भी बढ़ चुका है।

अमेरिका और चीन के बाद दुनिया में सबसे ज़्यादा, यानी 140 अरबपति पूंजीपति (जिनके पास सौ करोड़ डॉलर या सात हज़ार करोड़ रुपये से



आधी आबादी, यानी 70 करोड़ हिंदुस्तानियों के पास कुल मिलाकर देश की दौलत का मात्र 13 प्रतिशत है जो अब तक के इतिहास में सबसे कम है। दो सौ साल पहले वर्ष 1820 में यह अनुपात 16 प्रतिशत था जो आज़ादी के बाद बढ़ते-बढ़ते 1980 में 22 प्रतिशत तक चला गया था और अब घटकर इतिहास के सबसे बुरे मक़ाम तक पहुंच चुका है। सबसे ख़तरनाक बात यह है कि हालत साल दर साल तेज़ी से बद से बदतर होते जा रहे हैं।

ज़्यादा दौलत है) अब हमारे देश में हैं, (दिलचस्प बात यह है कि यह तादाद 102 से बढ़कर 140 कोरोना महामारी के ज़माने में हुई है।) लेकिन दौलत में इस भारी वृद्धि के बावजूद हालत यह है कि आज भी दुनिया की सबसे ग़रीब आबादी का सबसे बड़ा हिस्सा हमारे देश में ही है। ग़रीबों और अमीरों में अन्तर की हालत यह है कि देश की कुल आमदनी में सबसे अमीर लोगों की आमदनी का अनुपात लगातार बढ़ रहा है। सबसे अमीर भारतीयों और ग़रीबों के बीच दौलत के अनुपात के हवाले से कई अध्ययन मौजूद हैं। क्रेडिट स्विस की स्टडी के अनुसार तो मात्र एक प्रतिशत सबसे अमीर भारतीय देश की चालीस प्रतिशत से ज़्यादा दौलत पर क़ाबिज़ हैं। एक दूसरे अध्ययन से मालूम होता है कि एक प्रतिशत अमीर लोग भी 25 प्रतिशत ग़रीब लोगों से कहीं ज़्यादा यानी 22 प्रतिशत दौलत पर क़ाबिज़ हैं। सबसे अमीर 10 प्रतिशत लोगों की दौलत 50 प्रतिशत ग़रीब जनता की कुल दौलत के मुक़ाबले में किस तेज़ी से बढ़ रही है, एक चार्ट से मालूम होता है कि सबसे अमीर 10 प्रतिशत लोगों की दौलत का अनुपात इस समय, देश की कुल दौलत में लगभग 57 प्रतिशत है। यह ज्ञात इतिहास का सबसे ज़्यादा अनुपात है। यानी अंग्रेज़ों के ज़माने में जब देश की दौलत पर बड़े-बड़े ज़मींदार, जागीरदार क़ाबिज़ थे, उस समय भी अमीरी-ग़रीबी का अन्तर इतना ज़्यादा नहीं था जितना आज है।

आधी आबादी, यानी 70 करोड़ हिंदुस्तानियों के पास कुल मिलाकर देश की दौलत का मात्र 13 प्रतिशत है जो अब तक के इतिहास में सबसे कम है। दो सौ साल पहले वर्ष 1820 में यह अनुपात 16 प्रतिशत था जो आज़ादी के बाद बढ़ते-बढ़ते 1980 में 22 प्रतिशत तक चला गया था और अब घटकर इतिहास के सबसे बुरे मक़ाम तक पहुंच चुका है। सबसे ख़तरनाक बात यह है कि हालत साल दर साल तेज़ी से बद से बदतर होते जा रहे हैं।

सवाल उठता है कि क्या वाक़ई समानता और विकास एक-दूसरे के विरोधी हैं? अब पश्चिमी अर्थशास्त्र में भी यह सोच तेज़ी से बदल रही है। पहले तो नवशास्त्रीय अर्थशास्त्र (neoclassical economics) का दृष्टिकोण सामने आया, जिसके अनुसार, समानता और विकास दो अलग-अलग चीज़ें हैं और दोनों में कोई संबंध नहीं है। यानी यह भी संभव है कि कोई समाज तेज़ी से विकास भी करे और वहां समानता भी हो।

इसका मूल कारण, जैसा कि ऊपर स्पष्ट किया गया, पश्चिमी आर्थिक चिंतकों की यह कल्पना है कि विकास और समानता की मांगें एक-दूसरे के विपरीत हैं। इस सोच का प्रभाव यह हुआ कि देशों की अर्थव्यवस्था में ज़्यादातर ध्यान या तो विकास पर दिया जाता रहा या समानता पर। हमारे देश में आज़ादी के बाद समाजवादी नीतियों के तहत समानता पर ध्यान केंद्रित किया गया, तो नतीजा यह निकला कि वर्ष 1980 में देश में पिछले 200 वर्षों में सबसे ज़्यादा समानता थी, लेकिन ठीक यही वह साल था जब दुनिया की जीडीपी में हमारे देश का अनुपात ज्ञात इतिहास में सबसे कम था।

आर्थिक विकास न हो तो समानता बेकार हो जाती है। जब देश में दौलत का उत्पादन ही कम होगा तो ये मामूली दौलत समान विभाजन के बाद भी नागरिकों की ख़ुशहाली का ज़रिया नहीं बन सकेगी। समान विभाजन के बावजूद सभी ग़रीब रहेंगे। 70 और 80 का दशक ज़्यादातर ऐसा ही था। इसके मुक़ाबले में आज देश की दौलत में असाधारण वृद्धि हो रही है और दुनिया की जीडीपी में हमारा अनुपात आज़ादी के बाद सबसे ज़्यादा है, लेकिन आर्थिक असमानता भी ज्ञात इतिहास में अब तक की सबसे ज़्यादा है। देश में भारी दौलत आए और करोड़ों की आबादी में कुछ लोगों तक सीमित रहे तो ऐसी दौलत का क्या फ़ायदा? और इसे कैसे देश का विकास क़रार दिया जा सकता है? एक बेहद गंभीर स्थिति से निकल कर अब हम मानो दूसरी बेहद गंभीर स्थिति में पहुंच गए हैं।

सवाल उठता है कि क्या वाक़ई समानता और विकास एक-दूसरे के विरोधी हैं? अब पश्चिमी अर्थशास्त्र में भी यह सोच तेज़ी से बदल रही है। पहले तो नवशास्त्रीय अर्थशास्त्र (neoclassical economics) का दृष्टिकोण सामने

आया, जिसके अनुसार, समानता और विकास दो अलग-अलग चीज़ें हैं और दोनों में कोई संबंध नहीं है। यानी यह भी संभव है कि कोई समाज तेज़ी से विकास भी करे और वहां समानता भी हो।

पिछले 40 वर्षों में पश्चिमी अर्थशास्त्र में एक बिल्कुल अलग सोच बढ़ी है, जिसके अनुसार, समानता विकास में रुकावट नहीं, बल्कि मददगार है। ओडिड गैलोर-1953, जोज़फ़ सेरा-1950 आदि अर्थशास्त्रियों ने अलग-अलग मॉडलों से यह बात साबित की है कि देश में समानता और संसाधनों का

दुर्भाग्य से ये महत्वपूर्ण आर्थिक विचार अभी तक राजनीतिक स्तर पर प्रसिद्ध नहीं हो सके हैं और प्रमुख देशों के सत्ताधारी वर्ग और उनके आर्थिक सलाहकार अभी भी समानता को विकास का विरोधी ही समझते हैं और अपनी आर्थिक योजनाओं के लिए ज़्यादातर पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के इसी घिसे-पिटे डीएसजीई (dynamic stochastic general equilibrium model (मॉडल पर निर्भर हैं जिस पर, मशहूर नोबल प्राइज विनर अमेरिकी अर्थशास्त्री राबर्ट सोलो ने अमेरिकी

आवश्यकता इस बात की है कि ये महत्वपूर्ण बातें हमारे राजनीतिक विमर्श का अहम हिस्सा बनें। हमारी आर्थिक नीतियां इस प्रकार बनें कि वह विकास को भी सुनिश्चित करें और न्यायपूर्ण आर्थिक बंटवारे को भी। देश की अर्थव्यवस्था तेज़ी से विकास भी करे और उसका लाभ देश के हर नागरिक तक पहुंचें। योग्यताओं का, नवीनीकरण (innovation) का भी महत्व हो, उनका भरपूर प्रतिफल भी लोगों को मिले। व्यक्तिगत संपत्ति के अधिकार को भी महत्व दिया जाए ताकि आर्थिक विकास का उत्साह



न्यायपूर्ण बंटवारा, पूरे देश के विकास में न सिर्फ़ मददगार है, बल्कि ज़रूरी है और असमानता दूसरी ख़राबियों के साथ आर्थिक विकास के लिए भी हानिकारक है। नोबल पुरस्कार विजेता फ्रांसीसी अर्थशास्त्री थॉमस पिकेटी-1971, ने एक हद में असमानता को स्वाभाविक क़रार दिया है, लेकिन जब असमानता उस हद से बढ़ जाती है तो वह पूरे देश के विकास के लिए रुकावट बन जाती है।

पार्लियामेंट की एक विशेष जांच कमेटी के सामने बहुत ही कड़ी आलोचना करते हुए कहा था-''डीएसजीई और इस जैसे मॉडल, सूंघने के टेस्ट में ठहर नहीं सकते (यानी मामूली समझ भी उनको बेकार साबित करने के लिए काफ़ी है)... इसके समर्थक बेशक जो कह रहे हैं उस पर (ईमानदारी से) यक़ीन भी रखते होंगे, लेकिन शायद उन्होंने सूंघना ही छोड़ दिया है या सूंघने की क्षमता पूरी तरह गंवा चुके हैं।''

और हौसला, लोगों को श्रम, सक्रियता और आविष्कार के लिए आतुर रखे, लेकिन यह अधिकार असीमित न हो। इसको इस प्रकार व्यवस्थित किया जाए कि, देश के ग़रीबों, मजबूरों और कमज़ोरों की ज़रूरतें भी अनदेखी न हों। यही इस्लाम और इस्लामी शरीयत के मिज़ाज से मेल खाती बात है और आज के भारत में ताक़त के साथ इस आवाज़ को बुलंद करने की बहुत ज़रूरत है।

■■

बाक़र अली

कविता

मानवता

दिल कहता है सबको चाहूं, सबको प्यार करूं।
फूल बिछाऊं मैं राहों में कभी न कांटेदार करूं।।

मानव बन्दे एक ख़ुदा के, सब हैं भाई-भाई।
कैसे उनको लूटूं-मारूं, कैसे उन पर वार करूं।।

धोखा देना महापाप है, वह भी अपने भाई को।
नरक मिले आगे जीवन में, न ऐसा व्यवहार करूं।।

किस मुंह से मैं मानववादी और सबका हितकारी।
भाई को ही लूटूं खाऊं और उस पर प्रहार करूं।।

छोड़ अकेला मुझको दुनिया औरों को भरमाएगी।
सत्य-कर्म ही साथी अपना, क्यों न उससे प्यार करूं।।

पूरब-पश्चिम मुंह करने से, मैं नेक नहीं बन जाऊंगा।
रब को मानूं, रब की मानूं और अच्छा व्यवहार करूं।।

रातों-दिन हो सबकी चिंता, बाक़र मेरे जीवन में।
कभी लुटे न कोई पड़ोसी, ऐसा पहरेदार बनूं।।

“जब अल्लाह
किसी बन्दे से प्रेम करता है
तो वह उसको दुनिया से इस प्रकार
बचाता है जिस प्रकार तुममें से कोई
अपने बीमार को पानी से
परहेज़ कराता है।”
(हदीस : तिरमिज़ी)

A Well Wisher
Ameer-e-Muqami
J.I.H. Dumariaganj (UP)

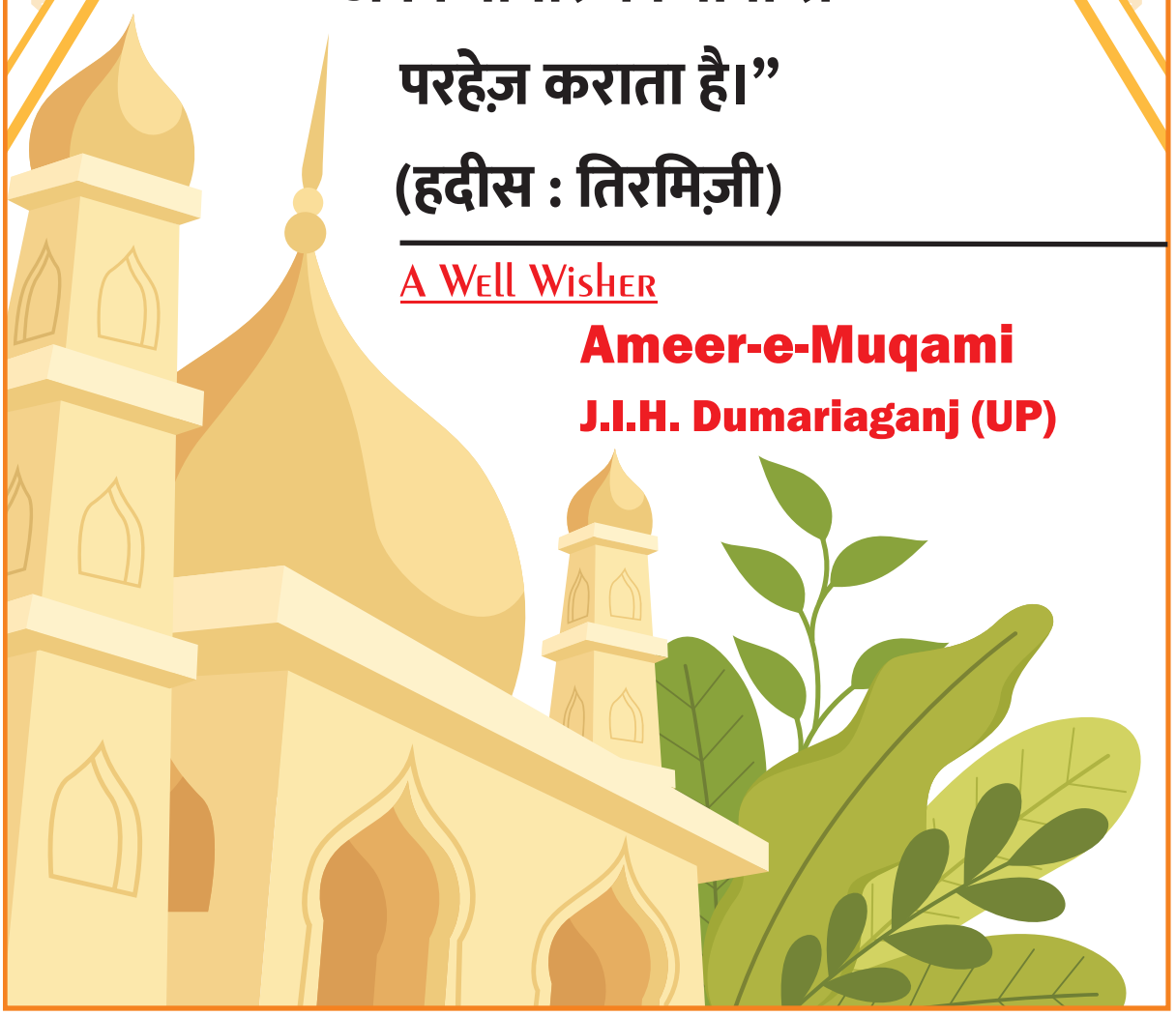



समसामयिक



गुलाम सरवर नदवी

यह कहा जा सकता है कि अभी एनआरसी की नियमावली और प्रावधान तैयार नहीं हुए हैं, परंतु असम में एनआरसी की जो प्रक्रिया चली और उसके परिणामस्वरूप जो भयावह स्थिति सामने आई, उसने पूरे देश के मुसलमानों को झकझोर कर रख दिया और उनमें एक चिंता की लहर दौड़ा दी।

समस्त मानवजाति का रचयिता एक ही है, उसी ने तमाम इंसानों को एक समान पैदा किया, हम सबके माता और पिता एक ही हैं। हम सबके बाप पहले इंसान आदम और मां हव्वा हैं। जन्म के आधार पर कोई छोटा कोई बड़ा नहीं है। श्रेष्ठ वही है जिसके कर्म अच्छे हों, जो ईश्वर (अल्लाह) से सबसे ज़्यादा डरने वाला और इंसानों से सबसे अधिक प्रेम करने वाला हो।

अल्लाह (ईश्वर) भी एक है, इंसान भी एक है, धरती भी एक है और सारा ब्रह्मांड एक है। यह शिक्षा हमें इस धरती पर भेजे गए पहले ईशदूत आदम (अलैहि.) से लेकर अंतिम ईशदूत मुहम्मद (सल्ल.) ने दी है।

एक अल्लाह ने हम सबको एक इंसान बनाया है, उसी अल्लाह ने एक ही धरती बनाई है, जिसे हमने देशों और राष्ट्रों में विभाजित कर दिया है। नेशन स्टेट के निर्माण से पूर्व देश और क़बीले मौजूद थे, परंतु धरती के किसी भी व्यक्ति को इस बात का पूर्ण अधिकार एवं स्वतंत्रता थी कि जिसे जहां सुविधा हो जाकर रहे, व्यापार करे, जीवन-यापन करे। देश की सीमा मानव के इस मौलिक अधिकार के लिए बाधक नहीं होती थी, परंतु आज नेशनलिज़्म की "कृपा" से मनुष्य के इस मौलिक अधिकार को भी छिन्न-भिन्न कर दिया गया है।

आज यह हक़ीक़त है कि मनुष्य के द्वारा धरती पर खींची गई लकीर, जिसे हम सीमा के नाम से जानते हैं, के अंदर रहने वालों को ही सरकार अपना नागरिक समझती है और उनके कल्याण के लिए कार्य करती है, लेकिन अब स्थिति यह आ गई है कि अपने ही देश के अल्पसंख्यक नागरिकों की नागरिकता भी असुरक्षित हो गई है। जिस समुदाय को यह महसूस हो तो ऐसा समूह मानसिक रूप से कितना असहज होगा यह समझना ज़्यादा मुश्किल नहीं है।

देश की दूसरी बहुसंख्यक आबादी यानी मुसलमान सीएए और एनआरसी क़ानूनों से अत्यंत चिंतित हैं और उनकी चिंता अकारण नहीं है। यह कहा जा सकता है कि अभी एनआरसी की नियमावली और प्रावधान तैयार नहीं



हुए है, परंतु असम में एनआरसी की जो प्रक्रिया चली और उसके परिणामस्वरूप जो भयावह स्थिति सामने आई, उसने पूरे देश के मुसलमानों को झकझोर कर रख दिया और उनमें एक चिंता की लहर दौड़ा दी।

मुसलमान बड़ी संख्या में सरकारी दस्तावेज़ों और शैक्षणिक प्रमाण पत्रों में मौजूद अत्यंत साधारण त्रुटि के सुधार के लिए भी नियमानुसार प्रयत्नशील है। मुसलमान आर्थिक स्थिति और विकास के सामाजिक मानकों पर बुरी तरह पिछड़ा हुआ है, वह समुदाय जो शिक्षा, आर्थिक स्थिति और विकास के सामाजिक मानकों पर बुरी तरह पिछड़ा हुआ है, उसे प्रगति के अवसर प्रदान करने के बजाए यदि इस प्रकार के मामलों में उलझाया जाएगा तो फिर उसकी क्या हालत होगी, इसे समझना कठिन नहीं है। इतनी बड़ी आबादी को मानसिक प्रताड़ना से गुज़ारना किसी भी सभ्य समाज और संवेदनशील सरकार के लिए उचित नहीं है।

मैं इतिहास के एक साधारण विद्यार्थी और अंतःकरण से अपने देश के हितैषी होने के नाते यह कहने का साहस कर रहा हूं कि राष्ट्रों और देशों का निर्माण और उनका विकास न्याय पर निर्भर होता है। अन्याय और असत्य पतन की ओर ही ले जाता है। "अवैध घुस-पैठिए" की आड़ में ऐसे वातावरण का निर्माण कदापि शुभ नहीं होगा, जिससे लगभग 20 करोड़ मुसलमान नागरिक अपने-आपको असुरक्षित महसूस करें। सरकारें तो इसलिए होती हैं कि वह जनता के हितों का ध्यान रखें, उन्हें उनकी समस्याओं से मुक्ति दिलाएं, उनके विकास का प्रबंध करें। राज्य अर्थात् स्टेट नागरिकों के लिए माता समान होता है। मां की गोदी में इंसान को सुख और राहत की अनुभूति नहीं हो तो फिर उसकी निराशा की क्या स्थिति होगी, यह सभी जानते हैं।

सरकार, राष्ट्र, जनता और तमाम नागरिकों के हित में यही है कि ज़ुल्म से ख़ुद भी बचा जाए और दूसरों को भी बचाया जाए। अन्यायपूर्ण क़ानूनों की वापसी हो। ईश्वर हम सबको सुरक्षित रखे, हमें न्याय करने वाला और न्याय देने वाला बनाए, और एक-दूसरे के दुख दर्द को समझने वाला बनाए। हे ईश्वर ऐसा ही हो। हे ईश्वर ऐसा ही हो।

सरकार, राष्ट्र, जनता और तमाम नागरिकों के हित में यही है कि ज़ुल्म से ख़ुद भी बचा जाए और दूसरों को भी बचाया जाए। उपरोक्त दोनों अन्यायपूर्ण क़ानून अर्थात् सीएए और एनआरसी की वापसी ही सबके हित में है। तीन अन्यायपूर्ण कृषि क़ानूनों की वापसी के बाद अब इन दो क़ानूनों को भी वापस ले लिया जाए।

हम वर्तमान सरकार के साथ इस देश के उन करोड़ों हिंदू भाइयों से, जो अपने शरीर में हृदय के स्थान पर पत्थर का टुकड़ा नहीं, बल्कि एक धड़कता हुआ दिल रखते हैं, सविनय निवेदन करते हैं कि इस संवेदनशील मुद्दे पर मानवीय दृष्टिकोण अपनाते हुए मुसलमानों का साथ दें और सरकार पर दबाव बनाएं कि वे इन दोनों क़ानूनों को वापस ले ले।

ईश्वर हम सबको सुरक्षित रखे, हमें न्याय करने वाला और न्याय देने वाला बनाए, और एक-दूसरे के दुख-दर्द को समझने वाला बनाए।

हे ईश्वर ऐसा ही हो। हे ईश्वर ऐसा ही हो।

■■

बिन पानी सब शून्य

मंथन



डॉ. प्रदीप कुमार

देश की आईटी राजधानी कहा जाने वाला बेंगलुरू इन दिनों घोर जल संकट का सामना कर रहा है। इस वर्ष मार्च के दूसरे सप्ताह से ही बंगलुरू से जल संकट की डराने वाली ख़बरें आने लगीं। हालात इतने ख़राब हैं कि कर्नाटक जल आपूर्ति और सीवरेज बोर्ड ने कार धोने, बाग़वानी, निर्माण, पानी के फव्वारे, सड़क निर्माण और रख-रखाव सहित कई कार्यों में पेयजल के इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगाया हुआ है और आदेशों का उल्लंघन करने पर पांच हज़ार रुपये का जुर्माना लगाने की बात कही गई है। 136 तालुकों में से 123 तालुकों को सूखा प्रभावित घोषित किया गया है, जिनमें 109 गंभीर रूप से प्रभावित हैं। शहर के कुल 12781 बोरवेल में से 4997 बोरवेल सूख गए हैं और बाक़ी में भी जल स्तर कम है।



अत्यधिक जल दोहन एवं उस अनुपात में पुनर्भरण न हो पाने के कारण भारत में हर वर्ष जल संकट गहराता दिखता है। बेंगलुरू जैसे महानगर में उभरा जल संकट चेतावनियों पर समय रहते न चेतने का दुष्परिणाम है। वर्ष 2018 में दक्षिण अफ़्रीक़ा के शहर केपटाउन में पानी के भयंकर संकट को देखते हुए दुनिया के जिन 15 शहरों पर 'शून्य जल' स्तर के संकट का ख़तरा बताया गया था, उनमें भारत के बेंगलुरू का भी नाम था। इस पर ध्यान नहीं दिया गया और इसका ही परिणाम है कि भारत का 'सिलिकन वैली' कहा जाने वाला यह महानगर गंभीर जल संकट से दो-चार है।

अंधाधुंध शहरीकरण और उसके लालच में उजाड़ी जा रही पारम्परिक जल निधियों और हरियाली को इसी प्रकार रौंदा जाता रहा तो भारत के अन्य शहरों को भी बेंगलुरू बनने से कोई नहीं रोक सकता। बेंगलुरू में उपजे जल संकट से देश के अन्य महानगरों और शहरों को भी सबक़ लेना चाहिए, क्योंकि वे भी अपनी परंपरागत जल निधियों की उपेक्षा कर रहे हैं और जल संचयन अथवा जल पुनर्भरण को लेकर सचेत नहीं हैं। सरकारी रिकार्ड के मुताबिक़ 90 साल पहले बेंगलुरू में 2789 केरे यानी तालाब हुआ करते थे। वर्ष 1960 तक आते-आते इनकी संख्या घटकर 230 रह गई। वर्ष 1985 में केवल 34 तालाब बचे और अब तो उनकी संख्या 30 तक सिमट गई है।

तालाबों और झीलों की उपेक्षा का ही परिणाम है कि न केवल महानगर का मौसम बदल गया है, बल्कि लोग बूंद-बूंद पानी को भी तरस रहे हैं। सेंटर फॉर कंजर्वेशन एनवायरमेंटल मैनेजमेंट एंड पॉलिसी रिसर्च इंस्टीट्यूट ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि बेंगलुरू में जिन जल निधियों का अस्तित्व बचा है, उनमें से नौ बुरी तरह और 22 बहुत हद तक दूषित हो चुकी हैं।

अस्ल में ये झीलें केवल पानी ही नहीं जोड़ती थीं, बाग़ीचों का शहर कहे जाने वाले बेंगलुरू के मौसम के मिज़ाज को भी नियंत्रित रखती थीं। यदि आज भी सभी तालाबों और झीलों को सहेजना शुरू किया जाए तो बेंगलुरू को फिर से पानी से समृद्ध महानगर बनाया जा सकता है। बेंगलुरू जिन कारणों से जल संकट से

जूझ रहा है, उनसे देश के सभी छोटे-बड़े शहरों को परिचित होना चाहिए, क्योंकि उनमें से अनेक शहर जल संकट की ओर बढ़ रहे हैं और इसकी एक बड़ी वजह पानी के परंपरागत स्रोतों की परवाह न किया जाना है।

हालांकि बेंगलुरू को कावेरी का पानी भी उपलब्ध कराया जाता है, लेकिन अपने ही प्रांगण के जलाशयों की अनदेखी करके और ज़मीन में छिपे बेशक़ीमती पानी का अंधाधुंध दोहन करके कोई समाज कब तक सुखी रह सकता है। लोग बताते हैं कि जिन बस्तियों में पहले 250 फ़ुट नीचे पानी मिल जाता था, वहां अब 1800 फुट ख़ुदाई करने पर भी कुछ हासिल नहीं होता। सत्तर के दशक के उत्तरार्द्ध में देश के अधिकांश हिस्सों में नागरिकों को जल उपलब्ध कराने के लिए नलकूप

भारत में ही नहीं, भारत के बाहर भी लोग इस बात को शिद्दत से महसूस करने लगे हैं कि अगर पानी के सदुपयोग की परंपरा विकसित नहीं की गई, तो आने वाले दिन बहुत कठिन होंगे। नीति आयोग की एक रपट के अनुसार सन 2030 तक भारत के कई शहरों को गंभीर जल संकट का सामना करना पड़ सकता है। इन शहरों की सूची में जयपुर, दिल्ली, गांधीनगर, गुरुग्राम, इंदौर, अमृतसर, लुधियाना, हैदराबाद, बंगलुरु, चेन्नई और ग़ाज़ियाबाद का नाम भी शामिल है।

खुदवाए गए। इस सुविधा के उत्साह में इस बात को बिल्कुल अनदेखा कर दिया गया कि धरती में जल भंडारण के स्तर को बनाए रखने के लिए समुचित प्रयास किए जाएं।

पुराने समय में अधिकांश बस्तियों में पानी की उपलब्धता के लिए तालाब, कूंए, झील, कुंड या बावड़ियों का निर्माण कराया जाता था। इससे न केवल इनके आस-पास रहने वालों को पानी मिलता था, बल्कि इनमें संग्रहित जल भूगर्भीय जल स्तर को बनाए रखने में भी मदद करता था, लेकिन पिछले कुछ दशकों में विकास की ऐसी अंधी होड़ मची कि न केवल बड़े शहरों, बल्कि छोटे क़स्बों में भी प्राचीन कुंडों, बावड़ियों, कुओं और तालाबों को पाटकर उन पर निर्माण कर दिए गए।

हमने बरसात के पानी को बचाने

❊ अल्लाह और रसूल की पुकार पर लब्बैक कहो जबकि वो तुम्हें बुलाते हैं उस चीज़ की तरफ जिसमें तुम्हारे लिए ज़िंदगी है। (क़ुरआन) ❊ उस शख़्स से बेहतर किसकी बात हो सकती है जो अल्लाह की तरफ बुलाये और नेक अमल करे और कहे कि मैं मुसलमानों में से हूँ। (क़ुरआन)



हिन्दुस्तान के मशहूर दीनी-इल्मी, फिक्री और म्यारी अख़बार व रसाइल (पत्रिकाओं) का मुताला(अध्ययन)कीजिए

इस सिलसिले में हमारी ख़िदमात हासिल कीजिए :

पेपर – पत्रिका	प्रति कापी	सालाना खरीददारी
✪ कान्ति साप्ताहिक अख़बार	7/-	350/-
✪ कान्ति मासिक पत्रिका	30/-	350/-
✪ दावत उर्दू अख़बार साप्ताहिक	15/-	750/-
✪ जिंदगी–ए–नौ उर्दू महाना	35/-	400/-

सालाना खरीददारी व ग्राहक बनने के लिए राब्ता करें :

AL FALAH True Success Both Worlds

अल फलाह

हक़ीक़ी कामयाबी दोनों जहानों में

अख़्तर नवाब
✆ 9926408118

पानी जीवन की ज़रूरत है। पानी के महत्व को दर्शाते हुए महान कवि अब्दुल रहीम ने कहा था, "रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून" अर्थात अगर पानी न हुआ तो सब कुछ शून्य हो जाएगा। दुनिया के लगभग सभी धर्मों में पानी के संरक्षण पर बहुत ज़ोर दिया गया है और पानी के अपव्यय को वर्जित क़रार दिया गया है। दुर्भाग्य से पानी के संबंध में हम इस चेतना का संरक्षण नहीं कर सके। जबसे पानी नलों के ज़रिये घरों तक पहुंचने लगा, यानी लोगों को जल के लिए विशेष श्रम या प्रयास की आवश्यकता नहीं रही, तब से लोगों ने पानी को बहुत "सस्ता" मान लिया। बेंगलुरु का जल संकट हमें बताता है कि हम अगर अब भी जल प्रबंधन के प्रति सचेत और संवेदनशील नहीं हुए, तो सारी दुनिया के लिए आने वाला समय कितना कठिन हो सकता है।

के प्रयास नहीं किए। प्रकृति के वरदान को अनदेखा किया। यह स्थिति केवल बंगलुरू की नहीं है। समुचित नगर नियोजन और जल संरक्षण के प्रति संवेदनशीलता के अभाव में हर विकसित होते शहर को आज या कल ऐसी परिस्थिति का सामना करना पड़ सकता है।

भारत में ही नहीं, भारत के बाहर भी लोग इस बात को शिद्दत से महसूस करने लगे हैं कि अगर पानी के सदुपयोग की परंपरा विकसित नहीं की गई, तो आने वाले दिन बहुत कठिन होंगे। नीति आयोग की एक रिपोर्ट के अनुसार सन 2030 तक भारत के कई शहरों को गंभीर जल संकट का सामना करना पड़ सकता है। इन शहरों की सूची में जयपुर, दिल्ली, गांधीनगर, गुरुग्राम, इंदौर, अमृतसर, लुधियाना, हैदराबाद, बंगलुरू, चेन्नई और ग़ाज़ियाबाद का नाम भी शामिल है।

पानी जीवन की ज़रूरत है। पानी के महत्व को दर्शाते हुए महान कवि अब्दुल रहीम ने कहा था, "रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून" अर्थात् अगर पानी न हुआ तो सब कुछ शून्य हो जाएगा। दुनिया के लगभग सभी धर्मों में पानी के संरक्षण पर बहुत ज़ोर दिया गया है और पानी के अपव्यय को वर्जित क़रार दिया गया है। दुर्भाग्य से पानी के संबंध में हम इस चेतना का संरक्षण नहीं कर सके।



जब से पानी नलों के ज़रिये घरों तक पहुंचने लगा, यानी लोगों को जल के लिए विशेष श्रम या प्रयास की आवश्यकता नहीं रही, तब से लोगों ने पानी को बहुत "सस्ता" मान लिया।

बेंगलुरू के जल संकट का मूल कारण यही है कि पिछले कुछ वर्षों में वहां भूजल का अनियंत्रित दोहन किया गया और बरसात के पानी के संरक्षण की दिशा में सार्थक प्रयास नहीं किए गए। बेंगलुरू का जल संकट यही कह रहा है कि देश के अन्य शहरों को इस तरह की समस्या से बचने के लिए तुरंत कमर कस लेनी चाहिए। निःसंदेह शहरों का विकास आवश्यक है, लेकिन जल निधियों की क़ीमत पर नहीं बेंगलुरू से यह सबक़ लेना अपरिहार्य हो गया है।

बेंगलुरू का जल संकट हमें बताता है कि हम अगर अब भी जल प्रबंधन के प्रति सचेत और संवेदनशील नहीं हुए, तो सारी दुनिया के लिए आने वाला समय कितना कठिन हो सकता है। पानी जीवन की बुनियादी आवश्यकता है। आख़िर एक सभ्य और संभ्रांत समाज के लोग पानी की सहज उपलब्धता के अभाव में सुखपूर्वक रहने की कल्पना कैसे कर सकते हैं? अतः दुनिया को पृथ्वी पर उपलब्ध शुद्ध जल के सदुपयोग के प्रति प्रतिबद्ध होना ही होगा। ■■

असमानता के दंश से कराहता देश



परिदृश्य

जितेंद्र गौतम

वर्ल्ड इनिक्वेलिटी डेटाबेस की ताज़ा रिपोर्ट बताती है कि भारत में 50 प्रतिशत ग़रीब और एक प्रतिशत अमीर की आय और संपत्ति के बीच की खाई पिछले 100 वर्षों में आज सर्वाधिक है। यही नहीं, रिपोर्ट यह दावा भी करती है कि भारत में शीर्ष एक प्रतिशत अमीरों की देश की कुल आय और संपत्ति में जितनी हिस्सेदारी है उतनी दुनिया के किसी और देश में नहीं है। यानी इस समय दुनिया के सबसे अमीर और पूंजीवादी व्यवस्था वाले अमेरिका, फ्रांस और यूके के अलावा चीन, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीक़ा से भी ज़्यादा भारत के एक प्रतिशत अमीरों की आय में हिस्सेदारी है।

रिपोर्ट में विगत 100 वर्षों से ऊपरी और निचले तबक़े के बीच लगातार बढ़ती आर्थिक असमानता का आकलन है। रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2014 से 2022 के दौरान भारत में आर्थिक असमानता ब्रिटिश राज से भी अधिक बढ़ गई है। साथ ही रिपोर्ट यह दावा भी करती है कि, भारत में शीर्ष एक प्रतिशत अमीरों की देश की कुल आय और संपत्ति में जितनी हिस्सेदारी है उतनी दुनिया के किसी और देश में नहीं है। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में आर्थिक असमानता बढ़ने का सबसे अधिक फ़ायदा भारत के शीर्ष एक प्रतिशत अमीरों को हुआ है।

आय की भारी असमानता एक कल्याणकारी राज्य की सबसे बड़ी विडंबना है। उक्त रिपोर्ट बताती है कि यदि भारत में आर्थिक नीति में आमूलचूल परिवर्तन नहीं किया गया तो चमकते इंडिया के नीचे एक कराहता भारत बना रहेगा। भारत में हाल के वर्षों में जिस तरह आर्थिक असमानता में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है, वह चिंताजनक है। रिपोर्ट से स्पष्ट है कि कुछ लोगों की संपत्ति में भारी वृद्धि हुई है, तो करोड़ों लोग और भी ग़रीब हुए हैं।

उल्लेखनीय है कि गत वर्ष ऑक्सफैम की रिपोर्ट में भी बताया गया

रिपोर्ट में विगत 100 वर्षों से ऊपरी और निचले तबक़े के बीच लगातार बढ़ती आर्थिक असमानता का आकलन है। रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2014 से 2022 के दौरान भारत में आर्थिक असमानता ब्रिटिश राज से भी अधिक बढ़ गई है। साथ ही रिपोर्ट यह दावा भी करती है कि, भारत में शीर्ष एक प्रतिशत अमीरों की देश की कुल आय और संपत्ति में जितनी हिस्सेदारी है उतनी दुनिया के किसी और देश में नहीं है। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में आर्थिक असमानता बढ़ने का सबसे अधिक फ़ायदा भारत के शीर्ष एक प्रतिशत अमीरों को हुआ है।

था कि देश के ऊपरी एक प्रतिशत वर्ग के पास देश की 40 प्रतिशत दौलत है जबकि नीचे के 50 प्रतिशत के पास मात्र 3 प्रतिशत। रिपोर्ट में चौंकाने वाला तथ्य यह था कि देश के ग़रीब, अमीरों के मुक़ाबले सरकार को ज़्यादा टैक्स देते हैं, क्योंकि अमीरों की तुलना में आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं पर ग़रीब ज़्यादा ख़र्च करते हैं। उदाहरण के लिए नीचे का 50 प्रतिशत वर्ग खाने के सामान, ग़ैर-खाने के आइटम्स और दोनों को मिलाकर भी टैक्स का 64 प्रतिशत देता

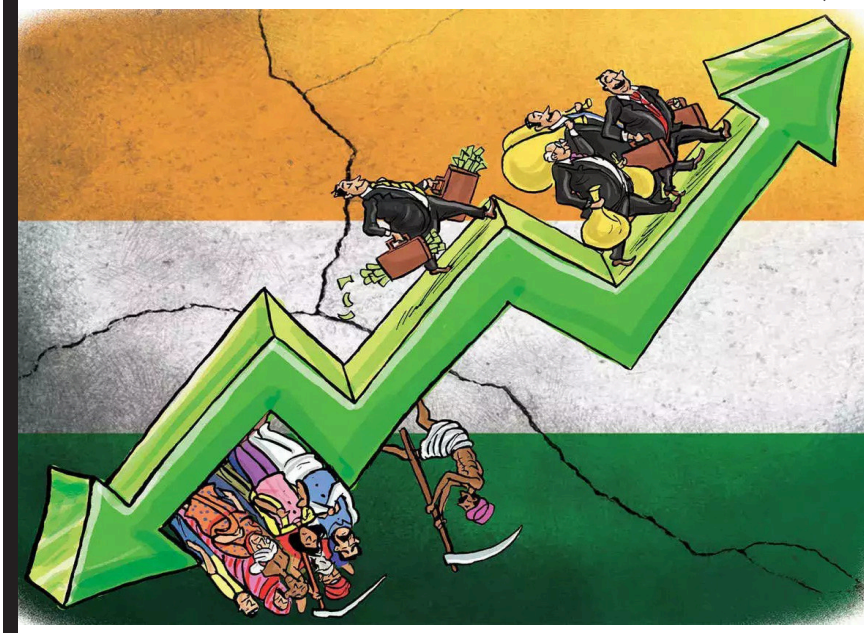

है। मध्यम वर्ग जो 40 प्रतिशत है, कुल टैक्स का औसतन 31 प्रतिशत देता है, जबकि ऊपर का धनाढ्य वर्ग केवल 3-4 प्रतिशत कर देता है।

समाजशास्त्रियों का मानना है कि समाज के एक बड़े हिस्से का जीवन जीने की ज़रूरी शर्तों से लंबे समय तक वंचित रहना ख़तरनाक हो सकता है। देश बेरोज़गारी और महंगाई की समस्याओं से जूझ रहा है। जब सामान्य लोगों की क्रय क्षमता कम हो तो महंगाई लोगों के जीवन स्तर को कम कर देती है। हाल के समय में कॉरपोरेट टैक्स में कमी की गई, वहीं दूध-दही जैसी आवश्यक खाद्य वस्तुओं के जीएसटी में वृद्धि की गई।

कॉरपोरेट टैक्स में कमी करते हुए सरकार ने कहा था कि इससे नए निवेश को आकर्षित करने में मदद मिलेगी, लेकिन कंपनियों ने कॉरपोरेट टैक्स में छूट का लाभ तो लिया पर निवेश में कमी अभी चिंता का विषय बनी हुई है। 64 प्रतिशत जीएसटी 50 प्रतिशत ग़रीब दे रहे हैं, जबकि अमीर केवल 10 प्रतिशत।

प्रगतिशील कर प्रणाली मूलतः आय आधारित होती है। प्रत्यक्ष कर में तो इसका पालन हो जाता है, परंतु अप्रत्यक्ष कर की चपेट में देश का निर्धनतम व्यक्ति भी आ जाता है। स्पष्ट है कि अप्रत्यक्ष करों के संदर्भ में सरकार को अत्यंत संवेदनशील होने की ज़रूरत है। इसलिए सरकार से अपेक्षा की जाती है कि वह जीवनोपयोगी वस्तुओं को जीएसटी के दायरे से बाहर रखे।

दुनिया भर के आर्थिक विशेषज्ञों में इस बात पर सहमति बढ़ रही है कि आर्थिक विकास समावेशी नहीं है, और उसमें टिकाऊ विकास के तीन

ज़रूरी पहलू आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरण शामिल नहीं हैं, तो वह ग़रीबी कम करने के लिए पर्याप्त नहीं होगा। इन्हीं चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए संयुक्त राष्ट्र के टिकाऊ विकास लक्ष्यों (एसडीजी) में 10वें लक्ष्य का उद्देश्य बढ़ती असमानता को कम करना रखा गया है। वर्तमान में आर्थिक असमानता से उबरने का सबसे बेहतर उपाय यही होगा कि वंचित वर्ग को अच्छी शिक्षा, रोज़गार उपलब्ध कराते हुए सुदूरवर्ती गांवों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ा जाए। इसके लिए कल्याणकारी योजनाओं पर ज़्यादा ख़र्च करने की ज़रूरत है।

कल्याणकारी अर्थव्यवस्था में सरकार की कोशिश रहती है कि आय और संपत्ति के मामले में असमानता कम से कम की जाए। आज़ादी के बाद से भारत इस बाबत प्रयासरत था और 1991 तक के आंकड़ों से इस बात की तस्दीक़ होती है कि साल दर साल असमानता कम होने की तरफ़ अग्रसर थी, लेकिन वर्ष 1991 में उदारीकरण लागू होने के बाद से असमानता तेज़ी से बढ़ी। उद्योग हितैषी नीतियां लागू की गईं और कॉरपोरेट को ज़्यादा से ज़्यादा सहूलियतें मिलने लगीं। इस क्रम में उद्योग और कंपनी क्षेत्र को प्रतिस्पर्धी बनाने की ग़रज़ से ऐसी नीतियां लागू हुईं, जिनसे देश में पूंजी का प्रवाह और निवेश बढ़ा। लेकिन उदारीकरण के एकदम बाद के वर्षों में श्रम बल अपेक्षानुरूप कुशल नहीं मिला। उद्योग क्षेत्र में बड़े पैमाने पर छंटनी हुई।

निवेश बढ़ाने की ग़रज़ से बड़े उद्योगों को सहूलियतों में इज़ाफ़े के बीच कॉरपोरेट टैक्स में कटौती जैसी व्यवस्थाएं तो की गईं, लेकिन आम जन को लाभान्वित करने के बाबत



आय और संपत्ति में बढ़ते असंतुलन को दूर करने के उपाय देश की सामाजिक आर्थिक नीति से ही निकाले जा सकते हैं। एक कल्याणकारी राज्य होने के नाते भारत की सदैव यह कोशिश होनी चाहिए कि वह नागरिकों को एक अधिकारयुक्त जीवन देने के साथ-साथ समाज में व्याप्त भारी आर्थिक असमानता को दूर करे।

कोई ज़्यादा प्रयास नहीं हुए। जीएसटी संग्रह में बढ़ोत्तरी को एक उपलब्धि के रूप में गिनाया जाता है, लेकिन यह टैक्स आम जन पर भारी पड़ रहा है। उसके लिए आटा और पैंसिल, काग़ज़ जैसी चीज़ें भी महंगी हो गई हैं। आम जन संपत्ति और आय में असमानता के दंश से बचाने के लिए यदि करों को ही तर्कसंगत कर दिया जाए तो काफ़ी राहत मिल सकती है।

अमीरी-ग़रीबी की खाई को समाप्त करने के लिए सरकार को कॉरपोरेट टैक्स छूट पर पुनर्विचार करना चाहिए और अतिरिक्त प्रगतिशील संपत्ति कर अरबपतियों पर लगाना चाहिए। भारत में अधिकांश रोज़गार असंगठित क्षेत्र में है, और वह क्षेत्र नोटबंदी, जीएसटी और लॉकडाउन से अब तक उभर नहीं पाया है। इसलिए आर्थिक समानता के लिए इस क्षेत्र पर ज़ोर देना आवश्यक है। आर्थिक नीतियां ऐसी बनें, जिनसे ग़रीब को भी आगे बढ़ने का पूरा अवसर मिले। आय और संपत्ति में बढ़ते असंतुलन को दूर करने के उपाय देश की सामाजिक आर्थिक नीति से ही निकाले जा सकते हैं। एक कल्याणकारी राज्य होने के नाते भारत की सदैव यह कोशिश होनी चाहिए कि वह नागरिकों को एक अधिकारयुक्त जीवन देने के साथ-साथ समाज में व्याप्त भारी आर्थिक असमानता को दूर करे।

“अब्बास इब्ने फ़िरनास”

हवा में उड़ान भरने वाला दुनिया का पहला इन्सान



इबारत



संपादन प्रभाग

इतिहासकार फिलिप हिती की किताब “अरब का इतिहास” के अनुसार, उन्होंने एक सपना देखा था कि वो पक्षियों की तरह आसमान में उड़ रहे हैं। जब उनकी आंख खुली तो पाया कि वो तो महज़ एक सपना देख रहे थे, लेकिन वो अपने इस सपने को साकार करने में जुट गए। सबसे पहले उन्होंने पक्षियों के उड़ने का अध्ययन किया। इसके बाद फिर उन्होंने एक लकड़ी से ग्लाइडर (फ्लाइंग मशीन) जैसा यंत्र का निर्माण किया।

आधुनिक युग में कई ऐसे यंत्र मार्केट में आ चुके हैं जो इन्सान की पंछियों की तरह आसमान में उड़ने की इच्छा को पूरा कर रहे हैं। क्या आपको पता है कि आज से 12 सदी पहले एक ऐसे महावैज्ञानिक ने जन्म लिया था, जिसने बड़े होने पर आसमान में पंछियों की तरह उड़ने की इच्छा की थी। उन्होंने सिल्क, लकड़ी और कपड़े से ग्लाइडर (फ्लाइंग मशीन) जैसा यंत्र बनाकर अपनी इस इच्छा को पूरा किया। यह वैज्ञानिक कोई और नहीं बल्कि “अब्बास इब्ने फ़िरनास” थे, जो एक कवि, चिकित्सक, इंजीनियर, रसायनशास्त्री और आविष्कारक थे। उनका जन्म 810 ई. (इस्लामिक स्वर्ण युग) में रोन्डा स्पेन में हुआ था।

फ़िरनास की थ्योरी पर अब तैयार हो रहे ग्लाइडर

“अब्बास इब्ने फ़िरनास” का उल्लेख इतिहासकार फिलिप हिती की किताब में किया गया है। इनका जन्म एक सामान्य परिवार में हुआ था। उन्होंने शुरू से ही पढ़ने की इच्छा थी और पढ़-लिखकर वे एक वैज्ञानिक बन गए। वे पहले ऐसे वैज्ञानिक थे, जिन्होंने दुनिया में सबसे पहले उड़ान भरी। उनकी यह उड़ान आज इतिहास में दर्ज है और उनकी थ्योरी पर कई ऐसे यंत्र बने जो आज के युग में लोगों को आसमान की सैर करवा रहे हैं।

मस्जिद की मीनार से भरी थी पहली उड़ान

इतिहासकार फिलिप हिती की किताब “अरब का इतिहास” के अनुसार, उन्होंने एक सपना देखा था कि वो पक्षियों की तरह आसमान में उड़ रहे हैं। जब उनकी आंख खुली तो पाया कि वो तो महज़ एक सपना देख रहे थे, लेकिन वो अपने इस सपने को साकार करने में जुट गए। सबसे पहले उन्होंने पक्षियों के उड़ने का अध्ययन किया। इसके बाद फिर उन्होंने एक लकड़ी से ग्लाइडर (फ्लाइंग मशीन) जैसा यंत्र का निर्माण किया।

किताब के अनुसार जब उन्होंने आसमान में उड़ान भरने का सोचा तो मस्जिद की मीनार पर चढ़ गए और वहां खड़े होकर बिना डरे छलांग लगा दी। जैसे ही उन्होंने छलांग लगाई और धरती की तरफ़ आए तो उनके यंत्र ग्लाइडर ने

अपना काम करना शुरू कर दिया। धरती पर गिरने से पहले ही उन्होंने आसमान में उड़ना शुरू कर दिया। उन्होंने अपने यंत्र से कई घंटे तक आसमान में सैर की और सफलतापूर्वक धरती पर बड़े ही आराम से आकर उतर गए।

उड़ान से रचा इतिहास

अब्बास को अपनी पहली उड़ान के साथ ग्लाइडर में कई ख़ामियां देखने को मिलीं। उन्होंने आसमान से सैर के साथ ही पाया कि इसके अंदर क्या सुधार करना बाक़ी है। जब वे ज़मीन पर उतरे तो उन्होंने इसके अंदर कई सुधार किए और दूसरी उड़ान में वे पहली उड़ान की तुलना में ज़्यादा अच्छे से उड़े।

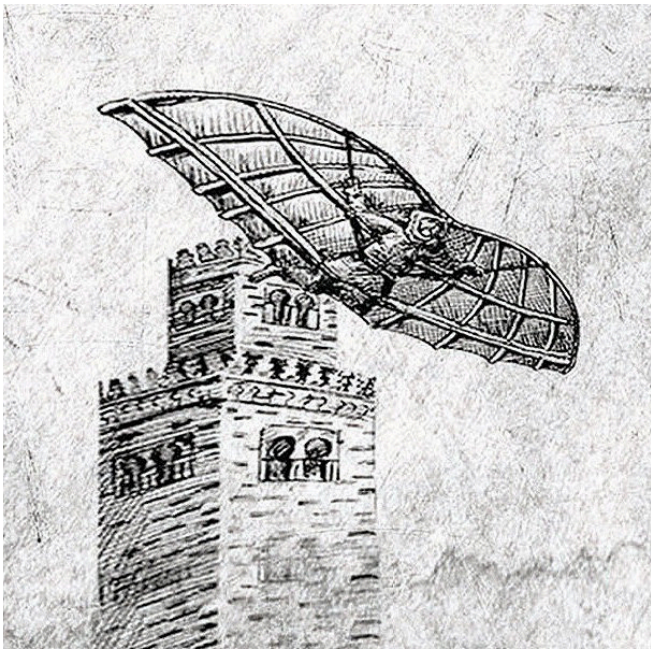

पहली कामयाबी हासिल करने के बाद "अब्बास इब्ने फ़िरनास" ने अधिक ऊंचाई से छलांग लगाने के लिए नई उड़ान की तैयारी शुरू की। ग्लाइडर में कुछ सुधार कर वे एक ऊंची चोटी पर पहुंच गए। अब्बास के इस कारनामे को देखने के लिए लोग पहाड़ी के नीचे आकर खड़े हो गए। बता दें कि जब अब्बास ने छलांग लगाई थी तो उनकी यह छलांग विमान विज्ञान में इन्सानों की पहली छलांग में दर्ज हो गई। पहाड़ी के नीचे उनको देख रहे लोगों में एक ख़ुशी की लहर दौड़ गई। अब्बास ने महसूस किया कि उनका सपना साकार हो गया था और उनकी गति आसमान में उड़ने वाले पंछियों से भी तेज़ थी।

अपनी इस कामयाबी से उत्साहित अब्बास इब्ने फ़िरनास ने और अधिक ऊंचाई से छलांग लगाने और अधिक दूर तक उड़ान भरने की तैयारियां शुरू कर दीं। अपने पुराने मॉडल में कुछ सुधार करने के बाद ऊंची चोटी पर पहुंच गए। इस बार उनके इस कारनामे को देखने के लिए हज़ारों की संख्या में लोग पहाड़ी के नीचे इकट्ठा थे।

अपनी पिछली कामयाबी से उत्साहित फ़िरनास ने इस बार बिना डरे दौड़ते हुए पहाड़ी से अपनी बनाई हुई फ्लाइंग मशीन के साथ छलांग लगा दिया। उनकी यह छलांग विमान विज्ञान (aeronautics) में इन्सानों की पहली छलांग थी। नीचे देख रहे लोगों में ख़ुशी कि लहर दौड़ गई, अब फ़िरनास हवा में उड़ रहे थे और उनकी स्पीड पंछियों से भी तेज़ थी।

क़रीब 10 मिनट के उड़ान के बाद उनके ग्लाइडर की स्पीड बहुत ज़्यादा हो चुकी थी, इसलिए उनकी फ्लाइंग मशीन अस्थिर होनी शुरू हो चुकी थी। अब उनकी फ्लाइंग मशीन की एक बड़ी कमी सामने आ चुकी थी और वह थी फ्लाइंग मशीन की पूंछ न बनाना (पूंछ ही फ्लाइंग मशीन को स्थिर रखती है और लैंडिंग कोण को कम करती) जिसकी वजह से आख़िरी समय में लैंड करने से पहले उनके ग्लाइडर का संतुलन बिगड़ गया, जिसके कारण उन्हें बहुत चोट आई, उनकी कई हड्डियां टूट गई और कई फ्रैक्चर आए। 65 साल के बूढ़े फ़िरनास के लिए यह चोट असहनीय थी, लेकिन उनके चेहरे पर कामयाबी की एक मुस्कान भी थी, क्योंकि वह अब दुनिया के पहले इंसान बन चुके थे जिन्होंने हवा में उड़ान भरी थी।

अपनी इस कामयाबी के बाद अब्बास ने शेष जीवन बहुत दर्द और तकलीफ़ में गुज़ारा, क्योंकि उस समय चिकित्सा विज्ञान इतना उन्नत नहीं था कि डॉक्टर उनकी हड्डियों को ठीक से जोड़ सकें। इसलिए वे दुबारा कभी अपने ग्लाइडर के मॉडल को उड़ा नहीं सके, लेकिन अब तक अब्बास के उड़ने की बात अरब और यूरोप में फैल चुकी थी, लोग उनके टूटे ग्लाइडर को देखने दूर-दूर से आते और इसे देखकर प्रेरित होते थे।

"अब्बास इब्ने फ़िरनास" के सम्मान में उनके जन्म स्थान कॉर्डोबा (स्पेन) में एक पुल का नाम "अब्बास इब्ने फ़िरनास ब्रिज" रखा गया है।

आज हवाई जहाज़ का आविष्कारक भले ही राइट ब्रदर्स को कहा जाता है, लेकिन आसमान में उड़ान भरने के इतिहास में पहला वैज्ञानिक प्रयास करने के कारण "अब्बास इब्ने फ़िरनास" के सम्मान में चांद पर एक बड़े गड्ढे का नाम "इब्ने फ़िरनास क्रेटर" रखा गया है, जिसे देखकर दुनिया का हर इन्सान अब्बास इब्ने फ़िरनास के सराहनीय काम को याद कर सके। ■■

दुश्मनी में भी इन्साफ़ को न छोड़ो

प्रकाश स्तंभ



अल्लामा यूसुफ़ क़रज़ावी

दुनिया में धार्मिक एवं वैचारिक सहिष्णुता की कई क़िस्में देखने को मिलती हैं। एक क़िस्म तो यह है कि आप दूसरे धर्मावलंबियों को धर्म एवं आस्था की आज़ादी तो देते हैं, उन्हें अपना धर्म क़बूल करने के लिए बल प्रयोग नहीं करते, न इस मामले में उन्हें तरह-तरह की सज़ाओं एवं कष्टों से दो चार करते हैं, परंतु उन्हें इतनी सुविधाएं भी उपलब्ध नहीं कराते कि वे अपने धार्मिक कर्तव्यों को पूरी दृढ़ता एवं स्वतंत्रता के साथ पूरा कर सकें और जिन चीज़ों से उनका धर्म रोकता है उनसे दूर रह सकें।

एक क़िस्म यह है कि आप दूसरे धर्म वालों को इसका पूरा अधिकार देते हैं कि वे जो अक़ीदा चाहें रखें और अपने धर्मानुसार हलाल-हराम की पाबंदी करें और इस मामले में उन्हें आपके कारण कोई तंगी न महसूस हो। उदाहरणार्थ यहूदियों के यहां शनिवार के दिन कार्य करना निषेध है और वे इस दिन को अवकाश करते हैं, तो उसे अपने धर्मानुसार अमल करने की पूरी छूट देते हैं। उन्हें मजबूर नहीं करते कि वे अपने धर्म विरुद्ध काम पर आएं। इसी प्रकार ईसाई को उनके अक़ीदे के अनुसार रविवार को काम पर नहीं लगाया जा सकता। यहूदी शनिवार के दिन छुट्टी मनाते हैं और ईसाई रविवार के दिन, इन्हें ऐसा करने से नहीं रोका जाए। परंतु धर्म के मामले में इन दोनों प्रकार की सहिष्णुता का संबंध उन बातों से है, जो आपके धर्म से नहीं टकराते।

सबसे बड़ी सहिष्णुता तो यह है कि आप दूसरे धर्म वालों को उनके धर्मानुसार उन चीज़ों में भी तंगी न महसूस होने दें, जो उनके धर्म में हलाल हैं, परंतु आपके धर्म में बिल्कुल हराम हैं। मुसलमानों ने ज़िम्मियों (इस्लामी राज्य में ग़ैर-मुस्लिम लोग) के मामले में ऐसी ही महान एवं आदर्श सहिष्णुता का परिचय दिया है।

कुछ चीज़ें ऐसी भी हैं जो न किसी क़ानून के दायरे में आती हैं और न हुकूमतें उन्हें लागू कर सकती हैं। ऐसी चीज़ों में आदर्श सामाजिकता, पड़ोसी की रियायत, अच्छा व्यवहार, दयालुता और कृतज्ञता जैसी भावनाएं ही सहिष्णुता की आत्मा का प्रदर्शन कर सकती हैं। ऐसे मामले रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में पेश आते रहते हैं और कोई क़ानून या अदालत उनमें प्रभावकारी साबित नहीं हो सकती।

अन्य धर्म के मानने वाले जिस चीज़ को भी अपने धर्मानुसार हलाल समझते थे, इस्लामी रियासत ने उसे उसकी पूरी आज़ादी दी और किसी तरह की पाबंदी लगाकर उसे तंग नहीं किया, जबकि रियासत के धर्म एवं क़ानून के अनुसार वह ऐसा कर सकती थी, विशेषकर ऐसी हालत में जब किसी चीज़ को किसी धर्म ने हलाल तो किया हो पर अनिवार्यता की शर्त न रखी हो। जैसे-यदि आतिशपरस्तों के धर्म में बहन से शादी की इजाज़त तो है पर अनिवार्य नहीं है, वे दूसरी औरतों से शादी कर सकते हैं, या ईसाइयों को सूअर का मांस खाने की इजाज़त तो दी गयी, पर इसे अनिवार्य नहीं किया गया, वे दूसरे जानवरों का मांस खाकर भी गुज़ारा कर सकते हैं। इसी प्रकार यदि बाइबल ने शराब पीने की छूट दी है, तो भी ईसाइयों के लिए शराब पीना अनिवार्य नहीं है।

अब यदि इस्लाम यह कहता कि ज़िम्मी अपने मुसलमान भाइयों की भावनाओं का सम्मान करते हुए शराब पीना छोड़ दें। तब धार्मिक रूप से वे गुनहगार न होते, क्योंकि इसे छोड़कर वे किसी पवित्र एवं धार्मिक कर्तव्य के पालन से कोताही या किसी हराम काम के करने के अपराधी न समझे जाते। परंतु इस्लाम ने ऐसी कोई बात नहीं कही। ग़ैर- मुस्लिम जिस चीज़ को हलाल समझते हैं उसमें इस्लाम ने कोई तंगी पैदा करनी नहीं चाही, बल्कि मुसलमानों से कहा कि उन्हें अपने धर्म के अनुसार अमल करने के लिए पूरी आज़ादी दो।

कुछ चीज़ें ऐसी भी हैं जो न किसी क़ानून के दायरे में आती हैं और न हुकूमतें उन्हें लागू कर सकती हैं।

ऐसी चीज़ों में आदर्श सामाजिकता, पड़ोसी की रियायत, अच्छा व्यवहार, दयालुता और कृतज्ञता जैसी भावनाएं ही सहिष्णुता की आत्मा का प्रदर्शन कर सकती हैं। ऐसे मामले रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में पेश आते रहते हैं और कोई क़ानून या अदालत उनमें प्रभावकारी साबित नहीं हो सकती। सहिष्णुता की यह आत्मा एवं भावना किसी ग़ैर-इस्लामी समाज में शायद ही कभी नज़र आयी हो। इस्लामी सहिष्णुता का यह प्रदर्शन बार-बार होता है।

ऐसे बहुदेववादी मां-बाप के बारे में जो अपने बेटे को (जो इस्लाम ला चुका है) एकेश्वरवाद से शिर्क की ओर ले जाने के लिए बराबर प्रयत्नशील हों, उनके बारे में भी क़ुरआन की हिदायत है–

"और दुनिया में दस्तूर के अनुसार (नियमानुसार) उनका साथ दो।"

(क़ुरआन, 31:15)

जो विरोधी मुसलमानों से जंग न करें, क़ुरआन उनके साथ इंसाफ़ और नेकी का व्यवहार करने का हुक्म देता है। यथा–

"अल्लाह (ईश्वर) तुम्हें उन लोगों से, जो तुम से दीन के मामले में नहीं लड़ते और न तुम्हें तुम्हारे घरों से निकालते हैं, भलाई करने और इंसाफ़ का सुलूक करने से नहीं मना करता। बेशक, अल्लाह इन्साफ़ वालों को चाहता है।" (क़ुरआन, 60:8)

पवित्र क़ुरआन नेक लोगों का परिचय इस प्रकार देता है-"और उसकी (अर्थात् ख़ुदा की) मुहब्बत पर, ज़रूरतमंदों, अनाथों एवं क़ैदियों को खाना खिलाते हैं।" (क़ुरआन, 76:8)

जब उपर्युक्त आयत नाज़िल हुई तो क़ैदी मुशरिकों (बहुदेववादियों) ही में से थे। अपने मुशरिक रिश्तेदारों एवं पड़ोसियों पर ख़र्च करने के मामले में मुसलमानों के सन्देहों को दूर करते हुए क़ुरआन हिदायत देता है-

"उन्हें राह पर लाना तुम्हारे ज़िम्मे नहीं। लेकिन अल्लाह जिसे चाहे राह पर लाए, और जो कुछ तुम माल ख़र्च करोगे, वह अपने ही लिए, जब तक कि अल्लाह की रज़ा (प्रसन्नता) पाने में ख़र्च करोगे।" (क़ुरआन, 2:272)

इमाम मुहम्मद बिन हसन से रिवायत है कि जब मक्का में अकाल पड़ा, तो अल्लाह के पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) ने वहां के ग़रीबों में बांटने के लिए माल भेजा था, जबकि आप (सल्ल.) और आपके साथियों को मक्का वालों की ओर से अनेक प्रकार के कष्ट पहुंचे थे।

हज़रत अस्मा बिन्त अबूबक्र (रज़ि.) से रिवायत है कि मेरी मां जो मुशरिक थीं, मेरे पास आयीं। मैंने अल्लाह के पैग़म्बर (सल्ल.) से पूछा कि क्या उनके साथ सद्व्यवहार करूं, तो आपने ऐसा करने की हिदायत फ़रमायी।

विरोधियों के साथ बहस, बातचीत या वाद-विवाद का शिष्टाचार क़ुरआन ने इस प्रकार बताया है-"किताब वालों से बहस-मुबाहिसा न करो, मगर बेहतर तरीक़े पर (अर्थात् केवल बेहतर तरीक़े से करो), सिवाय उनके जो बेइन्साफ़ हैं, और यूं कहो कि जो उतरा हम पर और जो उतरा तुम पर, उसे हम मानते हैं और हमारा और तुम्हारा माबूद (उपास्य) एक ही है।" (क़ुरआन, 29:46)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) के यहूदियों एवं ईसाइयों के साथ व्यवहार एवं बर्ताव में इसी उदारता की झलक मिलती है। आप उनके पास जाते भी थे, उनके साथ सद्व्यवहार भी करते थे, उनकी इज़्ज़त और सम्मान भी करते थे, उनके मरीज़ों की अयादत (पूछना करना) भी करते थे और उनसे लेन-देन भी करते थे।

इब्ने इसहाक़ से रिवायत है कि नज़रान का एक प्रतिनिधिमंडल हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) के पास मदीना आया। इस प्रतिनिधिमंडल के सभी सदस्य ईसाई थे। ये लोग अस्र के समय मस्जिदे-नबवी में दाख़िल हुए, और जब उनकी नमाज़ का समय हो गया तो वहीं मस्जिद में नमाज़ के लिए खड़े हो गये। मुसलमानों ने उन्हें रोकना चाहा तो हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) ने मना कर दिया और कहा कि छोड़ दो।

अतः वहीं उन्होंने बैतुल मक़दिस की ओर मुंह करके नमाज़ पढ़ी। इब्ने क़य्यिम ने इस घटना पर टिप्पणी की है कि इस घटना से साबित होता है कि किताब वाले (अर्थात् यहूदी, ईसाई) मुसलमानों की मस्जिद में दाख़िल हो सकते हैं और मुसलमानों की मौजूदगी में वहीं अपनी नमाज़ भी पढ़ सकते हैं, परंतु ऐसा स्थायी रूप से नहीं हो सकता।

(जादुलमआद : खंड-3)

अबू उबैद ने सईद बिन मुसय्यिब से रिवायत की है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) ने एक यहूदी ख़ानदान को सदक़ा के रूप में कुछ दिया था, अतः आज तक उस ख़ानदान को सदक़ा दिया जा रहा है। (अल-अमवाल, पृ० 63)

हदीस की किताब बुख़ारी में हज़रत अनस (रज़ि.) से रिवायत है कि अल्लाह के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) ने एक यहूदी की अयादत की और उसे इस्लाम की दावत दी तो उसने इस्लाम क़ुबूल कर लिया, आप यह कहते हुए निकले कि ख़ुदा का शुक्र है, जिसने मेरे ज़रिए इसे जहन्नम से बचा लिया।

बुख़ारी ही की रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) के इंतिक़ाल के समय आपकी ज़िरह (जंगी कवच)

एक यहूदी के पास गिरवी थी। यह रक़म आपने अपने घर वालों के ख़र्च के लिए ली थी। आप बहुत आसानी से अपने साथियों से भी क़र्ज़ ले सकते थे, परंतु इस अमल से मुस्लिम उम्मत की रहनुमाई अपेक्षित थी।

अल्लाह के पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) ग़ैर-मुस्लिमों से तोहफ़ा क़बूल कर लेते थे और अम्न व जंग में आपने उनसे मदद भी ली है।

आपके पास से एक जनाज़ा गुज़रा, तो आप (सल्ल.) उसके सम्मान में खड़े हो गये। आपसे कहा गया कि यह यहूदी का जनाज़ा है तो आपने फ़रमाया, "क्या वह इंसान नहीं था?"

उदारता एवं सहिष्णुता की यही झलक सहाबा किराम (रज़ि.) एवं ताबईन में भी नज़र आती है। हज़रत उमर (रज़ि.) मुसलमानों के बैतुलमाल से एक यहूदी ख़ानदान के लिए स्थायी आजीविका की व्यवस्था करते हैं और कहते हैं कि अल्लाह फ़रमाता है-

"सदक़ा फ़क़ीरों (अर्थात् निर्धनों) एवं ज़रूरतमंदों के लिए हैं।" और ये किताब वालों में से एक ज़रूरतमंद है।

(अल-खिराज, पृ० 26)

हज़रत उमर (रज़ि.) शाम (सीरिया) देश के सफ़र में एक ऐसी जगह से गुज़रते हैं जहां कुछ ईसाई कुष्ठ रोगी मिलते हैं, तो आप बैतुलमाल से उनकी सामूहिक मदद का हुक्म देते हैं।

हज़रत उमर (रज़ि.) पर जब एक आतिशपरस्त ज़िम्मी (अबू लू-लू) क़ातिलाना हमला करके एक प्राणघातक ज़ख़्म लगा देता है, तब भी आप मृत्युशैया से अपने बाद आने वाले ख़लीफ़ा को ज़िम्मियों के साथ सद्व्यवहार, उनके साथ समझौते की पाबन्दी, उनकी हिफ़ाज़त के लिए जंग और ताक़त से ज़्यादा उन पर बोझ न डालने की वसीयत करने से नहीं चूकते।

(बुख़ारी, बैहक़ी)

हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) अपने सेवक को बार-बार ताकीद करते हैं कि वह यहूदी पड़ोसी के यहां क़ुरबानी का गोश्त पहुंचाएं। सेवक एक यहूदी पड़ोसी पर इतना ध्यान दिये जाने की वजह पूछता है, तो आप फ़रमाते हैं कि अल्लाह के पैग़म्बर (सल्ल०) ने फ़रमाया है, "जिबरील मुझे पड़ोसी के बारे में बार-बार इतना ध्यान दिलाते रहे कि मुझे गुमान (आभास) होने लगा कि वह पड़ोसी को विरासत (उत्तराधिकार) में भी हिस्सेदार न बना दें।"

(इमाम अहमद,
अबू दाऊद एवं तिरमिज़ी)

एक ईसाई महिला उम्मे हारिस बिन अबी रबीआ का इन्तिक़ाल हुआ तो सहाबा किराम (रज़ि.) उनके जनाज़े में शिरकत करते हैं। (फ़िक्हुज़्ज़कात)

कुछ बड़े ताबईन सदक़ा-ए-फ़ित्र में से ईसाई राहिबों को भी दिया करते थे और इसमें कोई हर्ज नहीं समझते थे, बल्कि कुछ एक बड़े ताबईन उदाहरणार्थ हज़रत इक्रिमा, इब्ने सीरीन एवं जुहरी तो उन्हें ज़कात में से भी देने में कोई हरज नहीं समझते थे। जब हज़रत जाबिर बिन ज़ैद से पूछा गया कि ज़कात किसे दी जाए? तो आपने जवाब दिया कि मुसलमानों को और उनके ज़िम्मियों को।

क़ाज़ी अयाज़ ने अपनी किताब तरतीबुल मदारिक में लिखा है कि दारकुतनी की रिवायत है कि एक बार अब्बासी ख़लीफ़ा मुअतज़िद बिल्लाह के वज़ीर अब्यून बिन साइद (ईसाई) क़ाज़ी इस्माईल बिन इसहाक़ (जो मालिकी विचारधारा के बड़े इस्लामी धर्मशास्त्रियों में गिने जाते हैं) के पास आये तो आपने खड़े होकर वज़ीर का स्वागत किया। वहां मौजूद लोगों के चेहरों पर नापसन्दी के चिन्ह स्पष्ट हुए, तो आपने वज़ीर के जाने के बाद कहा कि अल्लाह फ़रमाता है-

"अल्लाह तुम्हें मना नहीं करता उन लोगों से जो तुम से दीन पर नहीं लड़े और तुम्हें तुम्हारे घरों से नहीं निकाला, उनसे भलाई और इन्साफ़ का सुलूक करो।" (क़ुरआन, 60:9)

क़ाज़ी इस्माईल बिन इसहाक़ ने अपनी बात आगे जारी रखते हुए कहा कि और यह व्यक्ति मुसलमानों की ज़रूरतें पूरी करता है और हमारे एवं ख़लीफ़ा के बीच संदेशवाहक का काम अंजाम देता है, इसलिए मैंने जो कुछ किया वह उपर्युक्त आयत के अनुसार नेकी में शामिल है।

प्रसिद्ध इस्लामी धर्मशास्त्री एवं इस्लामी विषयों के शोधकर्ता अल्लामा शहाबुद्दीन क़राफ़ी अरबी शब्द 'बर' अर्थात् नेकी की व्याख्या करते हुए लिखते हैं कि अल्लाह ने ग़ैर-मुस्लिमों के साथ जिस नेकी का हुक्म दिया है, उसमें उनके समुदाय के कमज़ोर वर्ग के साथ नर्मी एवं विनम्रता का व्यवहार करना, ज़रूरतमंदों की ज़रूरत पूरी करना, उनमें जो भूखे हों उन्हें खाना खिलाना, जिनके पास कपड़े न हों उन्हें कपड़े उपलब्ध कराना और उनके साथ नर्मी से बात करना, पड़ोसी हों तो उनकी कष्टदायक बातों को सहन करना, चाहे उन्हें ऐसे काम से रोकने की क्षमता क्यों न हों, उनके लिए हिदायत की दुआ करना और यह दुआ करना कि अल्लाह उन्हें सौभाग्यशाली लोगों में शामिल कर दे अर्थात् ईमान वाला बना दे और उनके तमाम दीनी एवं दुनियावी मामलों में ख़ैरख़्याही (सद्भावना का व्यवहार) करना शामिल है। इसी प्रकार उनके राजों (गुप्त बातों) की हिफ़ाज़त करना, उन्हें कष्ट से बचाना, उनकी जान-माल,

इज़्ज़त-आबरू एवं संपूर्ण अधिकारों-हितों की हिफ़ाज़त करना, उन्हें ज़ुल्म-अत्याचार से बचाना और उनके अधिकार उन्हें दिलाना भी शामिल है।

(अल-फ़ुरुक, खंड-3, पु० 15)

ग़ैर-मुस्लिमों के साथ मुसलमानों के सहिष्णुतापूर्ण व्यवहार की बुनियाद दरअस्ल उन सत्य मूल्यों एवं विचारधाराओं पर है, जो इस्लाम ने मुसलमानों के दिलो-दिमाग़ में दृढ़ता से बैठा दी है। इनमें कुछ प्रमुख विचारधारा इस तरह हैं-

1. हर मुसलमान इंसान की इज़्ज़त पर यक़ीन रखता है, चाहे उसका धर्म, वर्ण, वंश एवं लिंग कोई भी हो। अल्लाह फ़रमाता है-"और हमने बनी आदम की संतान (अर्थात् संपूर्ण मानवजाति) को सम्मानित किया।" (क़ुरआन, 17:70)

यह सम्मान प्रत्येक मानव के लिए आदर व कोमल व्यवहार का अधिकार अनिवार्य ठहराता है। यही वजह है कि एक जनाज़ा अल्लाह के पैग़म्बर (सल्ल.) के पास से गुज़रा तो आप एहतिराम के लिए खड़े हो गये और जब आपसे कहा गया कि यह एक यहूदी का जनाज़ा है तो आपने फ़रमाया कि क्या वह इन्सान नहीं है। इस घटना से आप (सल्ल.) ने यह शिक्षा दी है कि इस्लाम में हर इन्सानी जान सम्माननीय आदर व एहतिराम के क़ाबिल है, यह कितने उच्च आदर्श को प्रदर्शित करने वाली बात है।

2. मुसलमानों की यह आस्था है कि धार्मिक मामलों में मतभेद अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ है, उसी ने इन्सान को अधिकार एवं आज़ादी दे रखी है। क़ुरआन में है-"फिर जो कोई चाहे माने और जो कोई चाहे न माने।"

(क़ुरआन, 18:29)

एक और आयत के शब्द इस प्रकार हैं-"और यदि तेरा रब चाहता तो लोगों को एक रास्ते पर कर डालता (जबकि) वे हमेशा मतभेद में रहते हैं।"

(क़ुरआन, 11:118)

3. स्पष्ट है कि मुसलमानों का यह दृढ़विश्वास है कि अल्लाह की मर्ज़ी को कोई बदल नहीं सकता, और अल्लाह वही चाहता है जिसमें भलाई और हिकमत (तत्वदर्शिता) होती है, चाहे इन्सान को उसका ज्ञान हो सके या न हो सके। इसलिए मुसलमान कभी यह सोच भी नहीं सकता कि वह संपूर्ण मानवजाति को जबरन मुसलमान बना ले, जबकि ख़ुद अल्लाह अपने पैग़म्बर से फ़रमा चुका है-"और यदि तेरा रब चाहता तो ज़मीन पर जितने लोग हैं सारे ईमान लाते। अब क्या तू ज़बरदस्ती करेगा कि लोग ईमान वाले हो जाएं।"

(क़ुरआन, 10:99)

किताब वालों अर्थात् यहूदियों एवं ईसाइयों के संबंध में पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) को संबोधित करते हुए अल्लाह फ़रमाता है-

अतः इसी (दीन/धर्म) की ओर तू बुला और क़ायम रह जैसा कि तुझको फ़रमा दिया है, और मत चल उनकी इच्छाओं पर, और कह मैं अल्लाह की उतारी हुई किताब पर ईमान लाया और मुझको हुक्म है कि तुम्हारे बीच इन्साफ़ करूं। अल्लाह हमारा और तुम्हारा रब है। हमारे लिए हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म। हमारे और तुम्हारे बीच कोई झगड़ा नहीं। अल्लाह हम सबको इकट्ठा करेगा, और उसी की ओर (सबको) लौट जाना है।"

(क़ुरआन, 42:15)

4. मुसलमान इस बात पर ईमान रखता है कि अल्लाह न्याय एवं इन्साफ़ का हुक्म देता है और उसी को पसन्द करता है। इसी प्रकार वह उच्च कोटि का आचरण अपने में पैदा करने का आदेश भी देता है, चाहे मामला मुशरिकों (बहुदेववादियों) ही के साथ क्यों न हो। वह ज़ुल्म को नापसंद करता है और ज़ालिमों को सज़ा देता है, चाहे यह ज़ुल्म मुसलमान की ओर से हक़ के इन्कारियों ही पर क्यों न हो। क़ुरआन के शब्द देखिए-

"और किसी क़ौम की दुश्मनी के कारण इन्साफ़ को कदापि न छोड़ो। इन्साफ़ करो। यही बात तक़वा (अल्लाह का डर) से नज़दीक है।" (क़ुरआन, 5:8)

और ख़ुद अल्लाह के पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.), जो सारी दुनिया के लिए रहमत बनाए गये हैं; का फ़रमान है कि पीड़ित-चाहे वह किसी धर्म से संबंध रखता हो, की आह और अल्लाह के बीच कोई परदा, कोई अवरोध नहीं है।"

(मुस्नद इमाम अहमद)

■■

"और किसी क़ौम की दुश्मनी के कारण इन्साफ़ को कदापि न छोड़ो। इन्साफ़ करो। यही बात तक़वा (अल्लाह का डर) से नज़दीक है।" (क़ुरआन, 5:8)
"और ख़ुद अल्लाह के पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.), जो सारी दुनिया के लिए रहमत बनाए गये हैं; का फ़रमान है कि पीड़ित-चाहे वह किसी धर्म से संबंध रखता हो, की आह और अल्लाह (ईश्वर) के बीच कोई परदा, कोई अवरोध नहीं है।"
(मुस्नद इमाम अहमद)

कानों में ख़तरे की सीटी

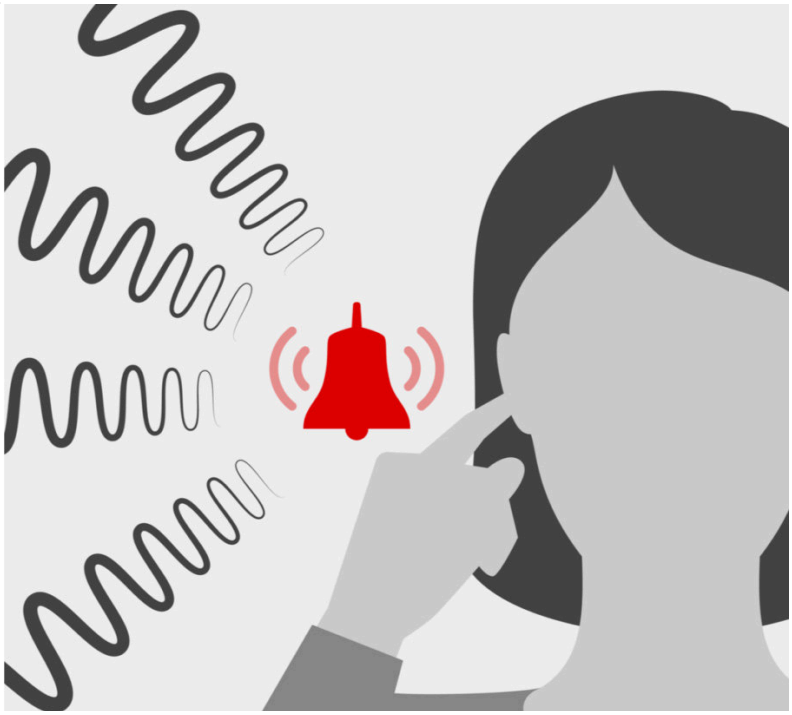

सेहत

संपादन प्रभाग

कानों में सांय-सांय या घूं-घूं या सीटी बजने जैसी आवाज़ों का आना किसी बड़ी गड़बड़ी का संकेतक हो सकता है। समय पर इसका इलाज कराना ज़रूरी है। नहीं तो व्यक्ति बहरेपन का भी शिकार हो सकता है। कान में सीटी बजने की वजह टिनिटस डिज़ीज़ है जोनॉयज पॉल्यूशन की वजह से होती है। इसको लेकर एक रिसर्च भी सामने आई है, जिसमें कहा गया है कि ट्रैफिक का बढ़ता शोर कान में कई प्रकार की परेशानियों का कारण बन सकता है।

जानकारों के अनुसार, ट्रैफिक की तेज़ आवाज़ सुनने से लोगों को टिनिटस डिज़ीज़ की समस्या हो रही है, जिन लोगों का घर व्यस्त सड़कों के पास है उन्हें सबसे ज़्यादा परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। टिनिटस की वजह से वे कानों में सीटी बजने की आवाज़ें महसूस कर रहे हैं।

शुरू में तो यह अनदेखी करने लायक़ लगता है, मगर धीरे-धीरे यह एक जटिल परेशानी बनने लगती है। इसे कुछ गंभीर बीमारियों का संकेत भी माना जाता है। यह ध्यान रखने की ज़रूरत है कि अगर कानों में लगातार सीटी जैसी आवाज़ आने लगे तो यह एक बीमारी है और इसे नज़रअंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए। अगर इसका समय पर इलाज न कराया जाए तो इससे परेशान व्यक्ति अवसाद तक की स्थिति में पहुंच सकता है।

क्या होती है टिनिटस बीमारी?

टिनिटस यानी कान में किसी दूसरी प्रकार की आवाज़ या गूंज का अनुभव होता है। इसमें व्यक्ति को हर कुछ समय में कान में सीटी बजने जैसी आवाज़ सुनाई देती है। जानकारों के अनुसार, इंसान 70 से 80 डेसिबल तक आवाज़ सुन सकता है। इससे ज़्यादा शोर कानों के लिए ख़तरनाक माना जाता है, लेकिन पिछले कुछ सालों में नॉयज पॉल्यूशन काफ़ी बढ़ गया है, लोग सड़कों पर बिना वजह से तेज़ हॉर्न बजाते हैं। इससे लोगों की परेशानी बढ़ती है। तेज़ हॉर्न से कानों के सुनने की क्षमता भी प्रभावित हो सकती है। यहां तक की लोग बहरेपन तक का शिकार हो सकते हैं। इससे कार्डियोवैस्कुलर डिज़ीज़ होने का भी काफ़ी ख़तरा रहता है। जो लोग ज़्यादा समय ट्रैवलिंग में बिताते हैं, उन्हें टिनिटस होने का ख़तरा ज़्यादा रहता है। शहरी इलाक़ों और भीड़ वाले चौराहों के आसपास रहने वालों को भी कान में इस प्रकार की परेशानी हो जाती है।

शुरुआती लक्षण

कान में ऐसी आवाज़ आने की स्थिति को टिनिटस की समस्या कहते हैं। ऐसी आवाज़ की मुख्य वजह कपाल ट्यूमर का विकास हो जाना हो सकता है। इसका चिकित्सीय नाम ध्वनिक न्यूरोमा सौम्य ट्यूमर है, जो कानों को

दिमाग़ से जोड़ने वाली नसों में विकसित हो जाता है। जब रक्त का प्रवाह होता है, तब कान में कुछ बजने की आवाज़ सुनाई दे सकती है। कई बार उसमें संतुलन बिठाना मुश्किल होने लगता है। बाद में इसकी वजह से सुनने की क्षमता में भी कमी आ जाती है। इसके असर से सिर में भारीपन भी महसूस हो सकता है। इन्हें टिनिटस के शुरुआती लक्षणों के तौर पर देखा जा सकता है।

कान में अस्वाभाविक ध्वनि का मतलब ही यह है कि कान के पर्दे पर कुछ बुरा असर पड़ा है, उसकी वजह चाहे जो हो। अध्ययनों के मुताबिक़ हाइपोथायरायडिज़्म से पीड़ित लगभग पचास फ़ीसद लोग टिनिटस का अनुभव करते हैं। अनदेखी या लापरवाही की वजह से अगर उसका इलाज न किया जाए तो उनकी सुनने की क्षमता कम या ग़ायब हो सकती है।

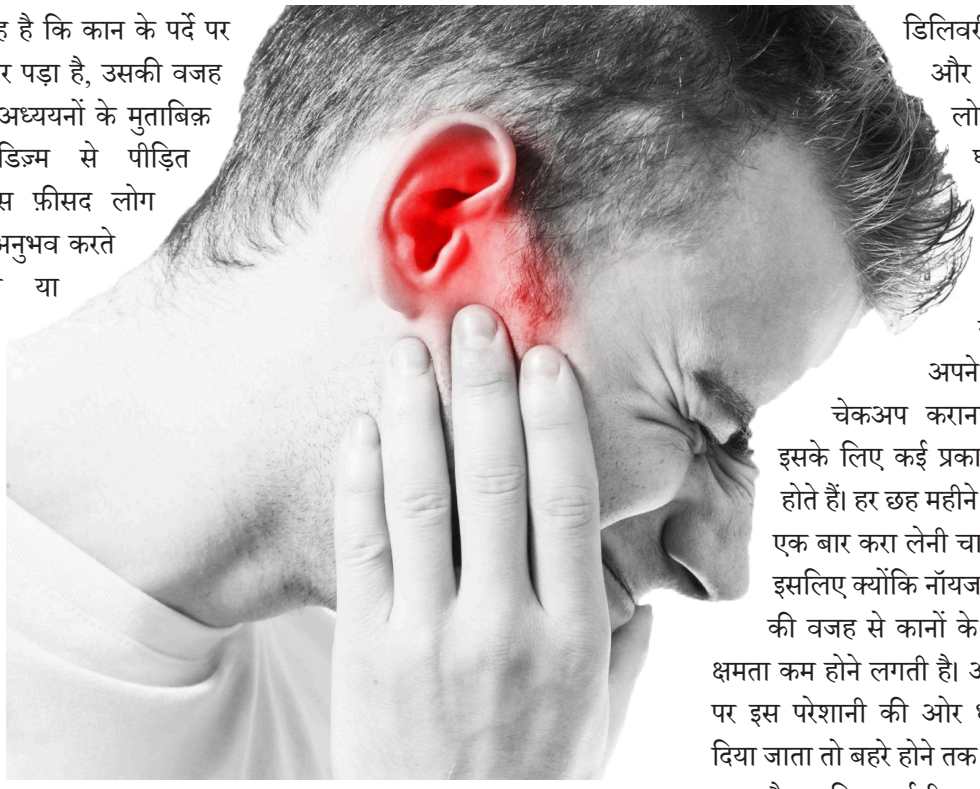

ख़तरे के संकेतक

आजकल मोबाइल या अन्य श्रव्य यंत्रों से कुछ सुनने के लिए कान में इयरफ़ोन जैसे यंत्र लंबे समय तक लगाए रखना टिनिटस जैसी समस्या के बड़े कारणों में से एक माना जाने लगा है। अल्कोहल के सेवन या धूम्रपान आदि से भी इसका जोखिम बढ़ सकता है। इसके अलावा, मोटा, हृदय से जुड़ी समस्याएं, उच्च रक्तचाप, आर्थराइटिस, सिर में चोट लगना, सर्दी-ज़ुकाम की दवा ज़्यादा मात्रा में लेने आदि स्थितियों में भी कान में सीटी बजने जैसी समस्या हो सकती है। इसलिए ऐसी स्थितियों में सावधानी बरतने की ज़रूरत है।

बचाव का रास्ता

सवाल है कि अगर इसकी चपेट में आ ही गए तो इससे निपटने के लिए क्या-क्या किया जाए? सबसे पहले अपने वज़न को लेकर सतर्क रहने की ज़रूरत है। ज़्यादा वज़न सुनने की क्षमता को प्रभावित कर सकता है। स्वस्थ हृदय, संचार, शरीर की अन्य प्रणालियों को विनियमित करने के लिए संतुलित वज़न होना ज़रूरी है। यूं तो ऊंचे स्वर में गाना, सुनना या टीवी देखना अच्छा नहीं माना जाता है, मगर यह सेहत पर भी असर डालता है। इसके प्रभाव में टिनिटस का शिकार होने के बजाय बचने की ज़रूरत है, जिसके लिए कोई भी संगीत या रेडियो कार्यक्रम ईयरफ़ोन में कम तीव्र ध्वनि में सुनना चाहिए। इससे सुनने की क्षमता एक सुरक्षित स्थिति में क़ायम रहती है। अगर किन्हीं हालात में तेज़ आवाज़ के आसपास रहना मजबूरी हो जाए तो कानों को सुरक्षा देने पर ध्यान देना ज़रूरी है। रोज़मर्रा की बिखरी हुई आदतों के बजाय व्यायाम करने, शराब और सिगरेट-बीड़ी के सेवन से बजने और एक संगठित जीवन जीने की आदत डालने की ज़रूरत है।

कैब ड्राइवर, डिलिवरी बॉय और जिन लोगों का घर सड़कों के पास है उन्हें नियमित रूप से अपने कान का चेकअप कराना चाहिए। इसके लिए कई प्रकार के टेस्ट होते हैं। हर छह महीने में ये जांच एक बार करा लेनी चाहिए। ऐसा इसलिए क्योंकि नॉयज पॉल्यूशन की वजह से कानों के सुनने की क्षमता कम होने लगती है। अगर समय पर इस परेशानी की ओर ध्यान नहीं दिया जाता तो बहरे होने तक का ख़तरा रहता है। इसलिए हाई रिस्क वालों को टेस्ट कराना ज़रूरी है।

इसके साथ यह भी ज़रूरी है कि हाई रिस्क वाले लोग इयर मास्क लगाकर रखें। इससे कानों में तेज़ आवाज़ जाने का ख़तरा नहीं रहेगा। अगर किसी व्यक्ति को कान में गूंज सुनाई दे रही है या फिर सीटी बजने की आवाज़ आ रही है तो इस स्थिति में डॉक्टरों से संपर्क ज़रूर करें। ऐसा न करने से ये परेशानी बड़ी समस्या भी बन सकती है। ■■

ऑफ-बीट कोर्सेज

करियर के नए विकल्प



करियर

संपादन प्रभाग

स्टूडेंट्स और उनके अभिभावकों की सबसे बड़ी चिंता यही होती है कि इंटरमीडिएट के बाद करियर की कौन-सी राह सबसे मुनासिब होगी।

यदि आप 12वीं कक्षा के छात्र हैं और बोर्ड एग्जाम की तैयारी कर रहे हैं, तो अक्सर आपके दिमाग़ में यह सवाल आता होगा या फिर आपके जानने वाले, या रिश्तेदार आप से ज़रूर पूछते होंगे कि 12वीं के बाद क्या करना है? किस फील्ड में जाना है? कौन-सा करियर चुनना सही होगा आदि-आदि। अधिकांश छात्र 12वीं से पहले ही तय कर लेते हैं कि उन्हें आगे करना क्या है? किस करियर फील्ड में जाना है। लेकिन कुछ स्टूडेंट्स अंतिम तक यह तय नहीं कर पाते कि उन्हें भविष्य में क्या करना है? करियर का कौन-सा फील्ड उनके लिए सही रहेगा? इस प्रश्न को लेकर कन्फ्यूज्ड रहते हैं तथा कुछ भी तय नहीं कर पाते हैं।

चाहे आप किसी भी स्ट्रीम के हों 12वीं के बाद क्या करना है इसका निर्णय लेना बहुत महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि यहीं से आपके करियर की दिशा निर्धारित होती है। आजकल मार्केट में विभिन्न कोर्सेज, स्ट्रीम्स, कई तरह के इंट्रेंस एग्जाम्स और करियर फील्ड की भरमार है और ऐसे में छात्रों का अपने लिए चयन करते समय कन्फ्यूज्ड होना स्वाभाविक है तथा यह समय भी उनके जीवन का निर्णायक मोड़ होता है। ऐसे में कैसे करें सहीं करियर का चुनाव आपको इस आर्टिकल के ज़रिये जानने का मौक़ा मिलेगा। 12वीं के बाद उपलब्ध कुछ ऑफ़-बीट कोर्सेज–

12वीं के बाद अक्सर छात्र दो ही कोर्सेज इंजीनियरिंग और मेडिकल को करियर विकल्प के रूप में देखते हैं। लेकिन अब नित नये-नये उभरते विकल्पों की वजह से उनके समक्ष भी अब कई अन्य कोर्सेज का विकल्प मौजूद है। पुरानी अवधारणाओं को तोड़ते हुए छात्र अपनी प्रतिभा के अनुरूप इन नए ऑफ़-बीट कोर्सेज का चयन कर उसमें सफलता भी हासिल कर रहे हैं।

पैरामेडिकल

यह फील्ड एक बहुत अच्छा विकल्प हो सकता है| कई लोग सिर्फ़ मेडिकल फील्ड को डॉक्टर बनने से जोड़कर देखते हैं, जबकि ऐसा नहीं है मेडिकल साइंस ने आज बहुत तरक़्क़ी कर ली है अब आप मेडिकल फील्ड के अलावा पैरामेडिकल कोर्स करके भी हेल्थकेयर सेक्टर में जा सकते हैं। इस फील्ड में बहुत विकल्प है कई तरह की नौकरियां या व्यवसाय आप पैरामेडिकल की पढ़ाई के बाद कर सकते हैं | पैरामेडिकल साइंस में मुख्य रूप से फिजियोथेरेपी, फार्मेसी रेडियोग्राफ़ी, मेडिकल लैबोरेट्री टेक्नोलॉजी, नर्सिंग, स्पीच थेरेपी, ऑक्यूपेशनल थेरेपी, डेंटल हाइजीन डेंटल मेकैनिक्स, ऑप्टोमेट्री जैसे कई फील्ड शामिल हैं और इसी सिलसिले में अब कई जॉब



ओरिएंटेड कोर्सेज शुरू किए जा चुके हैं। इस फील्ड में क़दम रखने के लिए 10वीं और 12वीं पास स्टूडेंट्स के लिए फुल टाइम और पार्ट टाइम सर्टिफिकेट और डिप्लोमा कोर्सेज उपलब्ध हैं।

पत्रकारिता

पत्रकारिता में भी एक बहुत ही शानदार करियर बनाया जा सकता है। अगर आपमें लेखन क्षमता, एडिटिंग, फ़ोटोग्राफ़ी जैसी क्वालिटी है तो आपको पत्रकारिता में करियर बनाने के बारे में विचार करना चाहिए। इस क्षेत्र में पैसे के साथ-साथ आपकी समाज में एक अलग छवि बनती है और आपका रुतबा भी बढ़ता है।

प्रोफ़ेशनल कोर्सेज़

प्रोफ़ेशनल कोर्सेज का अपना ही जलवा है। छात्र चाहें तो 12वीं के बाद इन कोर्सेज़ का चुनाव कर सकते हैं। वे चाहें तो आईटी और मैनेजमेंट से जुड़े कोई कोर्स कर सकते हैं। बैचलर ऑफ़ बिजनेस मैनेजमेंट (बीबीए), बैचलर ऑफ़ कंप्यूटर एप्लिकेशंस (बीसीए), डिप्लोमा इन होटल मैनेजमेंट, डिप्लोमा इन होटल मैनेजमेंट एंड कैटरिंग टेक्नोलॉजी, बैचलर इन इन्फॉरमेशन टेक्नॉलोजी (बीआईटी), प्रमोशन एंड सेल्स मैनेजमेंट, ट्रेवल एंड टूरिज्म, फ़ैशन डिजाइनिंग, इवेंट मैनेजमेंट, पब्लिक रिलेशन जैसे कई प्रोफेशनल कोर्सेज़ हैं, जो ख़ूब डिमांड में हैं। ये ऐसे क्षेत्र हैं, जिनमें नौकरी का काफ़ी स्कोप है।

वेडिंग प्लानर

युवाओं के लिए करियर बनाने के लिए कई रास्ते हैं और वह किसी भी क्षेत्र को चुनकर अपना करियर बना सकता है। आज बड़ी तादाद में युवा, वेडिंग प्लानर के तौर पर अपने करियर



का चुनाव कर रहे हैं, क्योंकि वेडिंग प्लानिंग में उन्हें अपनी क्रिएटिविटी को पेश करने का सुनहरा अवसर मिल रहा है। आज के दौर में अगर आपके पास क्रिएटिव आइडिया है और उसे हक़ीक़त में बदलने का हुनर आता है, तो अपनी मनपसंद फील्ड में ऊंची उड़ान भरने के लिए पूरा आकाश है। इन दिनों अधिकतर युवा अपने पैशन को फॉलो करते हुए ऐसा करियर चुन रहे हैं, जिसमें काम करने का अपना एक अलग मज़ा हो। जहां मेहनत हो, तो साथ में पैसा भी भरपूर हो।

बैंकिंग और फाइनेंस

यदि हम यह कहें कि आने वाले कुछ वर्ष बैंकिंग के क्षेत्र में नई नौकरियों की चाह रखने वाले छात्रों के नाम होंगे, तो कुछ ग़लत नहीं होगा। आगामी कुछ वर्षों में लगभग एक लाख से अधिक छात्रों के लिए बैंकिंग सेक्टर के दरवाज़े खुले रहेंगे। यदि आप 10+2 के बाद इस क्षेत्र में प्रवेश करना चाहते हैं, तो 3 वर्ष का एडवांस डिप्लोमा कर सकते हैं। हालांकि कई बैंकों में अब क्लर्क के लिए भी स्नातक आवश्यक योग्यता के रूप में मांगी जाती है, तो स्नातक पूरी कर चुके छात्र भी इस क्षेत्र में अपना करियर बना सकते हैं, वह स्नातक के बाद एक वर्ष का ग्लोबल पीजी डिप्लोमा इन बैंकिंग एंड फाइनेंस या एक वर्ष का फ़ेलोशिप प्रोग्राम कर सकते हैं।

प्रमुख संस्थान

- दिल्ली पैरामेडिकल एंड मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट www.dpmiindia.com
- लक्ष्य भारती इंस्टीट्यूट ऑफ़ इंटरनेशनल होटल मैनेजमेंट www.lbiihm.com
- इंदिरा गांधी ओपन यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली www.ignou.ac.in
- कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, टूरिज्म एंड होटल मैनेजमेंट विभाग, हरियाणा www.kuk.ac.in ■■

काग़ज़ का टुकड़ा

कहानी



प्रवीण कुमार सहगल

शीतल और अनुराग को आज कोर्ट से तलाक़ के काग़ज़ मिल गये थे। दोनों साथ ही कोर्ट से बाहर निकले। दोनों के परिजन साथ ही थे और उनके चेहरों पर ख़ुशी और सुकून साफ़ झलक रहे थे। तीन साल की लंबी लड़ाई के बाद आज फ़ैसला हो पाया था। आठ साल हो गये थे शादी को, मगर साथ में पांच साल ही रह पाए थे। तीन साल तो तलाक़ की क़ानूनी कार्यवाही में ही लग गये थे।

शीतल के हाथ में दहेज के सामान की लिस्ट थी जो अभी अनुराग के घर से लेना था और अनुराग के हाथ में गहनों की लिस्ट थी जो उसे शीतल से लेने थे। कोर्ट ने अनुराग को यह भी आदेश दिया था कि वह दस लाख रुपये की राशि एक महीने के अंदर शीतल के खाते में जमा कराएगा। शीतल और अनुराग का एकलौता बेटा जो अभी चार साल का है, कोर्ट के फ़ैसले के अनुसार बालिग़ होने तक वह शीतल के पास ही रहेगा। अनुराग महीने में केवल एक बार ही उससे मिल सकता है। शीतल और उसकी मां अनुराग के साथ एक ही गाड़ी में बैठकर उसके घर पहुंचे। दहेज में दिये गये सामान की निशानदेही शीतल को करनी थी, इसलिए तीन साल के बाद ससुराल जा रही थी, आख़िरी बार। अनुराग घर में अकेला ही रहता था, उसके माता-पिता और भाई आज भी गांव में रहते हैं।



घर में प्रवेश करते ही पुरानी यादें ताज़ा हो गईं। एक-एक चीज़ में उसकी जान बसी थी। बहुत ही मेहनत से सजाया था इसको शीतल ने अपने हाथों से। सब कुछ उसकी आंखों के सामने बना था। एक-एक ईंट से धीरे-धीरे बनते घरोंदे को पूरा होते देखा था उसने। अनुराग ने भी वही शिद्दत से इस घर को बनाने में उसका साथ दिया था। अनुराग थका-हारा-सा सोफ़े पर पसर गया। बोला, "ले लो, जो कुछ भी चाहिए, मैं तुम्हें नहीं रोकूंगा।''

शीतल ने ग़ौर से अनुराग को देखा। तीन साल में कितना बदल गया है। शरीर पहले से आधा रह गया है, बालों में सफ़ेदी आ गयी है। तीन साल में चेहरे की रौनक़ ही चली गयी।

वह स्टोर रूम की तरफ़ बढ़ी जहां उसका दहेज का सामान पड़ा था। ज़्यादातर सामान ओल्ड फ़ैशन का था, इसलिए कबाड़ की तरह स्टोर रूम में डाल दिया था। मिला भी कितना था उसको दहेज। प्रेम विवाह जो था। घर वाले तो मजबूरी में साथ हुए थे।

प्रेम विवाह था, तभी नज़र लग गयी किसी की, क्योंकि प्रेमी जोड़ी को हर कोई टूटता देखना चाहता है। एक बार बहक गया था अनुराग और हाथ उठा बैठा था उस पर। वह भी ग़ुस्से में मायके चली गयी थी। फिर चला था लगाने-सिखाने का दौर। इधर अनुराग के भाई-भाभी और उधर शीतल की मां। न शीतल लौटी और न ही अनुराग उसे लाने ससुराल गया। नतीजा यह हुआ की नौबत कोर्ट तक जा पहुंची और तलाक़ हो गया। शीतल की मां बोली, "कहां है सामान तेरा? इधर तो दिखायी नहीं देता। बेच दिया होगा इस शराबी ने।''

"चुप रहो मां'' शीतल को जाने क्यों अनुराग को उसके मुंह पर शराबी कहना अच्छा नहीं लगा।

फिर स्टोर रूम में पड़े सामान को एक-एक कर लिस्ट से मिलाया गया। दूसरे कमरों से भी लिस्ट का सामान उठा लिया गया।

शीतल ने सिर्फ़ अपना सामान लिया, अनुराग के सामान को छुआ भी नहीं। फिर शीतल ने गहनों से भरा बैग

अनुराग को पकड़ा दिया।

अनुराग ने बैग वापस शीतल को दे दिया, "रख लो, मुझे नहीं चाहिए, काम आएंगे तेरे मुसीबत में।"

गहनों की क़ीमत 15 लाख से कम नहीं थी। शीतल बोली, "क्यूं", कोर्ट में तो तुम्हारा वकील कितनी बार गहने-गहने चिल्ला रहा था।'

"कोर्ट की बात कोर्ट में ही ख़त्म हो गयी शीतल। वहां तो मुझे भी दुनिया का सबसे बुरा इंसान और शराबी साबित किया गया है।''

सामने खड़ी शीतल की मां ने यह सुनकर नाक-भौ चढ़ाई। शीतल ने कहा, "नहीं चाहिए, वो दस लाख भी नहीं कर रहा हो। शीतल ने उसे कभी रोते हुए नहीं देखा था। आज पहली बार देखा तो न जाने क्यों दिल को कुछ सुकून-सा मिला, मगर ज़्यादा भावुक नहीं हुई।

सधे अंदाज़ में बोली, "इतनी फ़िक्र थी तो क्यों दिया तलाक़?" मैंने नहीं तलाक़ तुमने दिया' अनुराग ने धीरे से कहा।

"दस्तख़त तो तुमने भी किये थे, माफ़ी नहीं मांग सकते थे?'' शीतल ने जवाब दिया।

"मौक़ा कब दिया तुम्हारे घर वालों ने। जब भी फ़ोन किया, काट दिया" अनुराग ने अपनी सफ़ाई दी।

"घर भी आ सकते थे?" शीतल बोली।



चाहिए।''

"क्यों?"

कहकर अनुराग सोफ़े से खड़ा हो गया।

"बस यूं ही" शीतल ने मुंह फेर लिया।

"इतनी बड़ी ज़िन्दगी पड़ी है, कैसे काटोगी? ले जाओ, काम आएंगे।"

इतना कहकर अनुराग दूसरे कमरे में चला गया। शायद आंखों में कुछ उमड़ा होगा, जिसे छुपाना भी ज़रूरी था।

शीतल की मां गाड़ी वाले को फ़ोन करने में व्यस्त थी। शीतल को मौक़ा मिल गया। वह अनुराग के पीछे उस कमरे में चली गयी। वह रो रहा था, जैसे भीतर के सैलाब को दबाने की कोशिश

अनुराग ने सिसकते हुए कहा "हिम्मत नहीं थी शायद।''

तभी शीतल की मां अंदर आ गयी। शीतल का हाथ पकड़कर बाहर ले गयी और बोली, "अब क्यों मुंह लग रही है इसके। अब तो कोई रिश्ता भी नहीं रहा।"

शीतल के भीतर भी कुछ टूट रहा था। दिल बैठा जा रहा था। यह सुन्न-सी पड़ती जा रही थी।

जिस सोफ़े पर बैठी थी उसे ग़ौर से देखने लगी। कैसे-कैसे बचत करके उसने और अनुराग ने वो सोफ़ा ख़रीदा था। पूरे शहर में घूमी तब यह पसन्द आया था।

फिर उसकी नज़र सामने तुलसी के सूखे पौधे पर गयीं। कितनी शिद्दत से देखभाल किया करती थी। उसके साथ तुलसी भी घर छोड़ गयी।

घबराहट और बढ़ी तो वह फिर से उठकर अन्दर चली गयी।

मां ने पीछे से पुकारा, मगर उसने अनसुना कर दिया। अनुराग बेड पर उल्टे मुंह पड़ा था। एक बार तो उसे दया आयी उस पर। मगर वह जानती थी की सब कुछ ख़त्म हो चुका है, इसलिए उसे भावुक नहीं होना है। उसने सरसरी नज़र से कमरे को देखा। अस्त-व्यस्त हो गया है पूरा कमरा। कहीं-कहीं तो मकड़ी के जाले झूल रहे हैं। कितनी नफ़रत थी उसे मकड़ी के जालों से।

फिर उसकी नज़र चारों ओर लगी उन फ़ोटो पर गयी जिनमें वह अनुराग से लिपट कर मुस्कुरा रही थी। कितने सुनहरे दिन थे वो। बाहर गाड़ी आ गयी थी। सामान गाड़ी में डाला जा रहा था। शीतल सुन्न-सी बैठी थी। अनुराग गाड़ी की आवाज़ सुनकर बाहर आ गया और कान पकड़कर शीतल के सामने घुटनों के बल बैठ गया। रूंधे गले से बोला-

"मत जाओ शीतल, माफ़ कर दो मुझे। यह घर आज भी तुम्हारा है।''

शायद यही वो शब्द थे जिन्हें सुनने के लिए वह तीन साल से तड़प रही थी।

सब्र के सारे बांध एक साथ टूट गये। शीतल ने कोर्ट के फ़ैसले का काग़ज़ निकाला और फाड़ दिया। और मां कुछ कहती उससे पहले ही लिपट गयी अनुराग से। साथ में दोनों बुरी तरह रोये जा रहे थे। दोनों के गिले-शिकवे उनके आंसुओं में बह रहे थे। दूर खड़ी शीतल की मां समझ गयी थी की कोर्ट का आदेश दिलों के सामने काग़ज़ के टुकड़े से ज़्यादा कुछ नहीं। काश उनको पहले मिलने दिया होता। ■■

लघुकथा



डॉ. पूरन सिंह

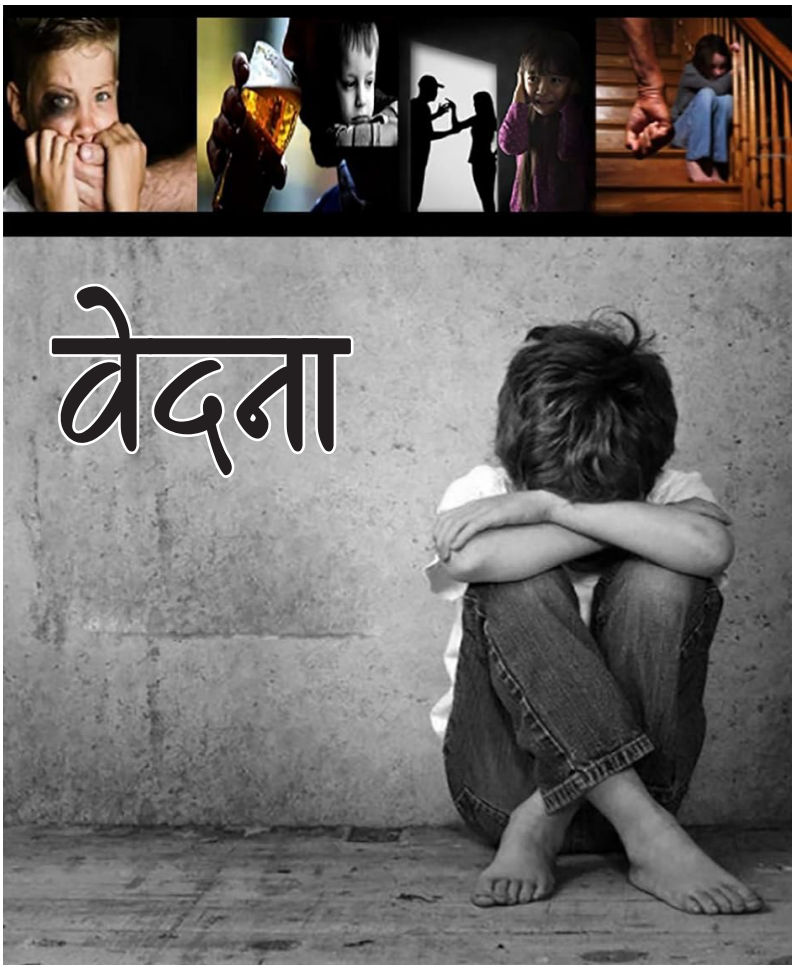

वेदना

मेरे परिवार में केवल चार व्यक्ति ही थे मैं, मेरे पति, बेटा और छोटी-सी बेटी। बेटी सिर्फ़ बोल ही पाती थी। मैं और मेरे पति भट्ठे पर काम करते थे। दोनों बच्चे वहीं उसी भट्ठे पर जहां ईंटें पाथी जाती थीं, खेलते रहते थे। मेरे पति निकम्मे नहीं थे। ख़ूब मेहनत करते, लेकिन क्या करें पिछले कई दिनों से ठेकेदार ने पैसे ही नहीं दिये थे जिसकी वजह से घर में कई दिनों से रोटी भी नहीं बनायी गयी थी। पति रोज़ काम करते ईंटें पाथते, लेकिन उनका शरीर उनका साथ नहीं दे रहा था। तभी...तभी एक दिन ईंट पकाने के लिए उसमें कोयला डाल रहे थे कि न जाने कैसे उनका पैर भट्ठे में चला गया और पैर ही क्यों देखते-देखते वे तो पूरे ही भट्ठा में समा गये थे। मेरी आंखों के सामने मेरा सब कुछ...सब कुछ...।

उनकी मृत्यु पर वही ठेकेदार जिसने पिछले दिनों से पैसे नहीं दिये थे पैसे देने आ गया था। जान-पहचान वाले लोग बहुत सारा खाना ले आये थे। भूख से बिलबिलाते बच्चों ने उस दिन ख़ूब खाना खाया था। मेरी बेटी ये सब देख रही थी।

पति की मृत्यु के पश्चात मैं अकेली पड़ गयी थी और साथ ही साथ मेरा बेटा भी बीमार रहने लगा था। मैं जो भी कमाती बेटे के इलाज में लगा देती थी। धीरे-धीरे घर की चीज़ें भी बिकने लगी थीं।

बेटा ठीक ही नहीं हो रहा था। अब घर में कुछ भी नहीं बचा था पिछले तीन दिनों से किसी ने कुछ नहीं खाया था।

और तभी मैं अपने बीमार बेटे को गोद में लिए बैठी थी कि मेरी छोटी-सी बेटी मेरे कंधों को झकझोरते हुए बोली थी। 'अम्मा... अम्मा एक बात बताओ।'

'क्या बेटा।'

'अम्मा...अम्मा, भैया कब मरेगा।' बेटी बोली थी। मैं उसके मुंह की ओर अपना मुंह फाड़े ताकती रही थी कि वह आगे बोली थी', अम्मा मैं इसलिए कह रही हूं अम्मा...अम्मा सुनो तो...जब भैया मरेगा तभी तो लोग हमारे घर आएंगे... और हमें ख़ूब सारा खाना देंगे फिर हम खाना खाएंगे।' इतना कहकर बेटी चुप हो गयी थी और मैं...मैं असहाय-सी अपनी बेटी को देखे चली जा रही थी और मेरी आंखों से झरते आंसू मेरे बेटे के माथे को भिगो रहे थे। ■■

कर्म प्रधान विश्व करि राखा

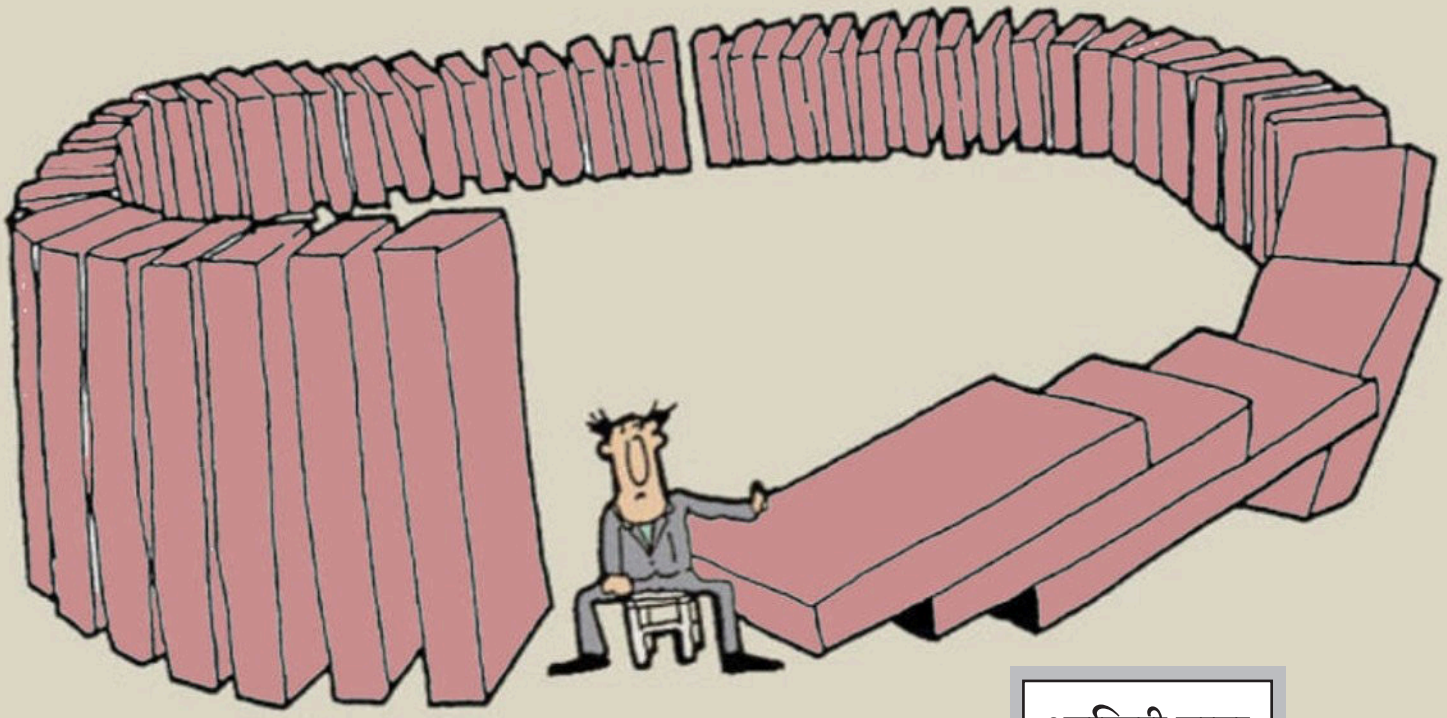

आख़िरी पन्ना



डॉ. इरशाद हसन

इन्सान अपनी ज़िन्दगी में जो कुछ भी करता है, उसका फल उसके साथ-साथ नियत होता जाता है और अंततः (क़ियामत के दिन) हर इन्सान को उसके अच्छे-बुरे कर्मों का फल मिलकर रहेगा। इसका मतलब यह है कि जो जैसा करेगा, वह वैसा ही भरेगा। हां, ईश्वर की महिमा और कृपा अपरम्पार है, वह अपने अच्छे-सच्चे बन्दे को जो चाहे, जितना चाहे, दे।

कर्म से जीवन बनता है स्वर्ग भी, नरक भी। इसी बात को हिन्दी के एक महाकवि ने इस शब्दों में कहा है और बहुत सही कहा है-

कर्म प्रधान विश्व करि राखा
जो जस करहिं सो तस फल चाखा।

दुनिया में कर्म को ही प्रधानता प्राप्त है। यहां जो जैसा करेगा, यहां जो जैसा करेगा वह वैसा ही भरेगा, यहां भी, वहां भी।

ईश्वर का अंतिम ग्रन्थ क़ुरआन कर्म और उसके परिणाम का श्रेष्ठतम सिद्धांत पेश करता है, जो क्रिया के बराबर प्रतिक्रिया का सिद्धांत है। पवित्र क़ुरआन में अच्छे कर्म के साथ सच्चे-पक्के ईमान का होना भी ज़रूरी क़रार दिया गया है अर्थात् ईमानदार व्यक्ति ही हश्र के मैदान में अपने सुकर्म का सुफल पाएगा और जिसका दिल ईमान से ख़ाली होगा, उसके नसीब में कड़वे-कसैले फल होंगे। इसलिए इन्सान की सबसे बड़ी ज़रूरत और ज़िम्मेदारी यह है कि वह अपने आपको ईमान की दौलत से मालामाल करे।

ईमान और अमल (कर्म) एक सिक्के के दो पहलू हैं। ईमान के बिना अमल और अमल के बिना ईमान का क़ियामत के दिन न कोई मूल्य होगा। ईमान और अमल ही वह केन्द्र-बिन्दु है, जिसके चारों ओर इस्लाम की मनभावन नांव चक्कर काटती रहती है। यही है क़ुरआन का कर्मवाद। क़ुरआन कहता है कि ईमान और अमल के संगम पर इस्लाम का भव्य भवन बना है।

सत्य-असत्य के बीच के अन्तर को बिल्कुल स्पष्ट कर देने वाली कसौटी का नाम क़ुरआन है। क़ुरआन हर पल हर इन्सान को सीधे-सच्चे रास्ते पर चलने का आह्वान करता है। इस सीधे-सच्चे मार्ग पर चलकर ही इन्सान अपना जीवन

सुखी-सम्पन्न और सफल बना सकता है, लोक में भी और परलोक में भी।

क़ुरआन वह रोशन चिराग़ है, जो सारे इन्सानों के मार्गदर्शन के लिए अल्लाह की ओर से पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) पर अवतरित किया गया है और क़ियामत तक यह सारे इन्सानों का मार्गदर्शन करता रहेगा। यह सृष्टि के रचयिता, सबके पालनहार ईश्वर की रचना है।

क़ुरआन में इन्सानी ज़िन्दगी के हर मामले, हर मसले के बारे में मार्गदर्शन मौजूद है। इसी लिए विद्वानों ने इसे 'मानव जीवन का सर्वोत्तम विधान' कहा है। इसके आधार पर समतामूलक, इन्सानी भाईचारा और मानव मूल्यों से परिपूर्ण समाज का निर्माण किया जा सकता है।

इन्सान के हर कर्म पर ईश्वर की दृष्टि हर पल रहती है, "जो कुछ तुम करते हो, वह ईश्वर की नज़र में है।"

(क़ुरआन, 2:110)

फ़ैसले के दिन ईश्वर हर इन्सान को हश्र के मैदान में हिसाब-किताब के लिए इकट्ठा करेगा और उसके अच्छे-बुरे कर्मों का सही-सही और पूरा-पूरा बदला देगा। किसी के साथ कण भर भी ज़ुल्म और अत्याचार न होगा। यह अलग बात है कि ईश्वर अपनी दयालुता किसी पर उड़ेल दे। वह सत्कर्मी लोगों को एक के सत्तर भी दे सकता है।

"तुम सब ईश्वर की ओर लौटोगे। वहां हर आदमी को अपनी कमाई हुई नेकी या बुराई का पूरा-पूरा बदला मिल जाएगा और किसी के साथ हरगिज़ ज़ुल्म न होगा।" (क़ुरआन, 2:281)

उस दिन सबके सामने कर्मपत्र रखा जाएगा, जिसमें हरेक का एक-एक कर्म दर्ज होगा, जिसे देखकर हर आदमी हैरान हो जाएगा-

"उस वक़्त तुम हर गिरोह को घुटनों के बल गिरा देखोगे। हर गिरोह को पुकारा जाएगा कि आए और अपना कर्म पत्र देखे। उनसे कहा जाएगा, आज तुम लोगों को उन कामों का बदला दिया जाएगा, जो तुम करते रहे थे। यह हमारा तैयार कराया हुआ कर्मपत्र है, जो तुम्हारे ऊपर ठीक-ठीक गवाही दे रहा है। जो कुछ भी तुम करते थे, उसे हम लिखवाते जा रहे थे।" (क़ुरआन, 5: 28-30)

दुष्ट लोग अपने कर्म पत्र में लिखी बातों से उस समय डर रहे होंगे-

"और कर्मपत्र सामने रख दिया जाएगा। उस समय तुम देखोगे कि अपराधी लोग अपनी ज़िन्दगी की किताब में लिखी बातों से डर रहे होंगे और कह रहे होंगे, हाय हमारा दुर्भाग्य, यह कैसी किताब है कि हमारी कोई छोटी-बड़ी हरकत ऐसी नहीं रही जो इसमें दर्ज न हो गई हो। जो-जो कुछ उन्होंने किया था, वह सब अपने सामने मौजूद पाएंगे और तेरा रब किसी पर तनिक ज़ुल्म न करेगा।"

(क़ुरआन, 18:49)

फ़ैसले के दिन हर आदमी के अच्छे-बुरे कर्मों को तौला जाएगा। उस दिन किसी तरह की घटतौली या बढ़तौली नहीं चलेगी। वज़न बिल्कुल सही-सही होगा-

"क़ियामत के दिन हम ठीक-ठीक तौलने वाले तराज़ू रख देंगे, फिर किसी आदमी पर कण भर ज़ुल्म न होगा। जिसका राई के दाने के बराबर भी किया-धरा होगा, वह हम सामने ला देंगे और हिसाब लगाने के लिए हम काफ़ी हैं।" (क़ुरआन, 21:47)

क़ियामत के दिन जिनके पलड़े भारी होंगे, वही कामयाब होंगे और जिनके हल्के होंगे वे घाटा उठाने वालों में होंगे-

"(उस दिन) जिनके पलड़े भारी होंगे, वही कामयाबी हासिल करने वाले होंगे और जिनके पलड़े हल्के होंगे, वही अपने आपको घाटे में डालने वाले होंगे।" (क़ुरआन, 7:8)

आजकल लोग एक-दूसरे पर आम तौर पर जी भरकर अन्याय-अत्याचार करते हैं। ताक़तवर कमज़ोर का जीना दूभर कर देते हैं, यहां तक कि उन्हें घर-बार तक छोड़ने को मजबूर कर देते हैं।

"मैं तुम में से किसी के कर्म को अकारथ करने वाला नहीं हूं। चाहे मर्द हो या औरत, तुम सब एक-दूसरे को जाति के हो। इसलिए जिन लोगों ने मेरे लिए अपने वतन छोड़े और अपने घरों से मेरे

ईश्वर का अंतिम ग्रन्थ क़ुरआन कर्म और उसके परिणाम का श्रेष्ठतम सिद्धांत पेश करता है, जो क्रिया के बराबर प्रतिक्रया का सिद्धांत है। पवित्र क़ुरआन में अच्छे कर्म के साथ सच्चे-पक्के ईमान का होना भी ज़रूरी क़रार दिया गया है अर्थात ईमानदार व्यक्ति ही हश्र के मैदान में अपने सुकर्म का सुफल पाएगा और जिसका दिल ईमान से खाली होगा, उसके नसीब में कड़वे कसैले फल होंगे। इसलिए इन्सान की सबसे बड़ी ज़रूरत और ज़िम्मेदारी यह है कि वह अपने आपको ईमान की दौलत से मालामाल करे।

रास्ते में निकाले गए और सताए गए और मेरे लिए लड़े और मारे गए, उनके सब गुनाह मैं माफ़ कर दूंगा और उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूंगा, जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। यह उनका बदला है ईश्वर के यहां और अच्छा बदला ईश्वर ही के पास है।'' (क़ुरआन, 3:195)

उस दिन वहां जैसे को तैसा बदला मिलेगा-

"जो आदमी भलाई लेकर आएगा, उसे उससे अच्छा बदला मिलेगा और ऐसे लोग उस दिन के हौल से सुरक्षित होंगे और जो बुराई लिए हुए आएगा ऐसे सब लोग औंधे मुंह आग में फेंके जाएंगे। क्या तुम लोग इसके सिवा कोई और बदला पा सकते हो ? जैसा करो, वैसा भरो।'' (क़ुरआन, 27:89,90)

ज़िन्दगी का सबसे बड़ा अपराध यह है कि आदमी अपने पालनहार के आदेश के विपरीत ज़िन्दगी गुज़ारे। जहन्नम ऐसे ही लोगों के लिए है। जहन्नम में ऐसे लोगों को मौत भी नहीं आएगी कि उनकी दर्दनाक तकलीफ़ों और मुसीबतों से उन्हें छुटकारा मिल जाए। वे सदा आग के अजाब का मज़ा चखते रहेंगे।

इसके विपरीत जो लोग ईमान ले आए और अच्छे काम करते रहे, दुनिया में सदा बनाव और सुधार का काम करते रहे, हमेशा बुराइयों को मिटाने और भलाइयों को फैलाने का प्रयास करते रहे, वही अल्लाह (ईश्वर) के पसन्दीदा बन्दे हैं। वे मरने के बाद परलोक में ज़िन्दगी के सारे मज़े उठा रहे होंगे-

"जिन लोगों ने (हक़ का) इन्कार किया, वे यक़ीनन जहन्नम की आग में जाएंगे और हमेशा उसमें रहेंगे। ये सारी सृष्टि में अत्यन्त बुरे लोग हैं और जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने अच्छे कर्म किए वे यक़ीनन सृष्टि के सर्वोत्तम

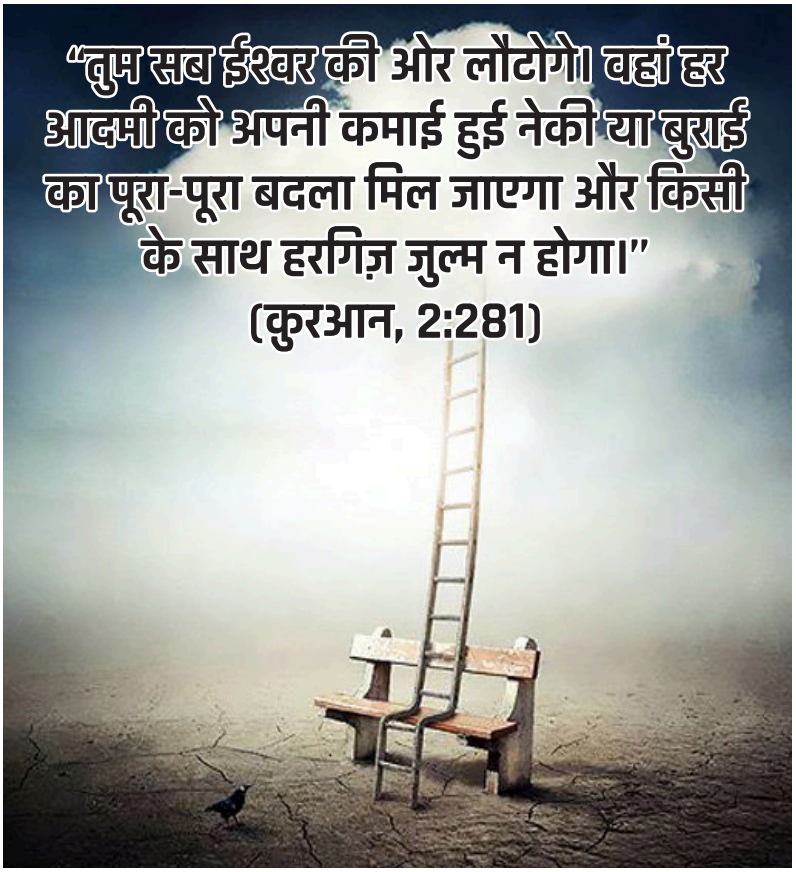

प्राणी हैं। उनका बदला उनके रब के यहां शाश्वत निवास की जन्नतें हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। उनमें वे हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे अल्लाह से राज़ी हुए। यह सब कुछ है उस शख़्स के लिए जिसने अपने रब का डर रखा।'' (क़ुरआन, 99:6-8)

अतः हम सच्ची और अच्छी ज़िन्दगी गुज़ारें। हम और हमारा समाज साफ़-सुथरा हो, हम केवल अपने पैदा करने वाले पालनहार की बन्दगी करें, किसी को उसका साझीदार न बनाएं, हम ख़ुद तो भलाई करें ही, दूसरे लोगों को भी भलाई करने के लिए प्रेरित करते रहें और न ख़ुद बुराई करें, न किसी को बुराई करने दें।

एक हदीस में कहा गया है कि तुममें से जो व्यक्ति बुराई को देखे, तो उसे ताक़त से बदल डाले। अगर वह ऐसा न कर सके तो फिर ज़बान से उसको बुरा कहे। अगर यह भी न हो सके तो कम-से-कम अपने दिल में ही उससे नफ़रत करें और यह आख़िरी कैफ़ियत बहुत ही कमज़ोर ईमान (की निशानी) है।

इसलिए दुनिया में सुख-शान्ति की बहार क़ुरआन की शिक्षाओं पर चलने से ही आ सकती है। कर्म पर ही हमारी सफलता और असफलता निर्भर है।

ईश्वर की नज़र में किसी के बड़ा या छोटा होने का मानदंड उसका कर्म है। जिसका कर्म जितना अच्छा होगा, वह उतना ही बड़ा और ऊंचा होगा और जिसका कर्म जितना बुरा होगा वह उतना ही छोटा या अधम और नीच होगा। आदमी का कर्म ही उसे लोक-परलोक में सफल या असफल बनाएगा और स्वर्ग या नरक में ले जाएगा। ■■



"जब इन्सान मर जाता है
तो उसके कर्मों का सिलसिला टूट जाता
है। अलबत्ता तीन चीज़ें ऐसी हैं जो इससे
अलग हैं—जारी रहने वाला सदक़ा या
ज्ञान जिससे फ़ायदा उठाया जाए, या नेक
सन्तान जो उसके लिए दुआ करे।"
(हदीस : मुस्लिम)

A Well Wisher

Ameer-e-Muqami
J.I.H. Mazroofpur
Jaunpur (UP)

KANTI Monthly, New Delhi
MAY 2024
Posted on 20-21 April 2024
Published on 18 April 2024
Posted Delhi RMS Delhi-110006

RNI 53372/91
DL(S)-05/3147/2023-2026
Total Pages with Cover: 52

(An ISO 22000:2005 Certified Company)

OCEANS SECRET

INDIA'S LEADING CANNED FOOD BRAND

- TUNA
- SARDINES
- MACKEREL



www.oceanssecret.in | info@seahath.com | Follow Us: oceanssecret | SHOP ONLINE @ amazon

SEAHATH CANNING CO. Plot - 8, Margao Industrial Estate, Curtorim, GOA, INDIA - 403 709 CUSTOMER CARE : 0832-2860412